प्रारम्भिक




चनानुवादकौमुदी

डा. कपिल देव द्विवेदी

"आचार्य"



विश्वविद्यालय प्रकाशन

गोरखपुर

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

प्रारम्भिक-रचनानुवादकौमुदी

(संशोधित और परिवर्धित संस्करण)

नवीनतम वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गई संस्कृत
व्याकरण और अनुवाद की पुस्तक, संस्कृत के प्रारम्भिक छात्रों के लिए।

लेखक—

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी आचार्य,

एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी), एम० ओ० एल०, डी० फिल्० (प्रयाग),
विद्याभास्कर, साहित्यरत्न, व्याकरणाचार्य, पी० ई० एस०,
अध्यक्ष संस्कृत-विभाग,
गवर्नमेंट कालेज, नैनीताल।

विश्वविद्यालय प्रकाशन

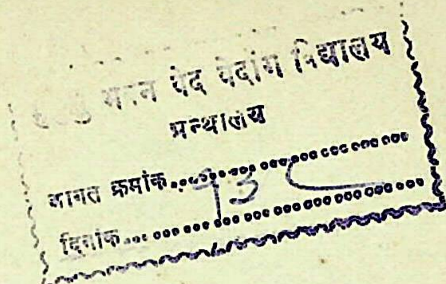
गोरखपुर • वाराणसी

तृतीय संस्करण, ५००० प्रतियाँ
सन् १९६३ ई०

मूल्य—एक रुपया चालीस नये पैसे

प्रकाशक
विश्वविद्यालय प्रकाशन,
नखास चौक, गोरखपुर

मुद्रक
नरेन्द्र भार्गव,
भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, वाराणसी



समर्पण

श्रद्धा, विश्वास, शील और आस्तिकता की मूर्ति

जीवन-संगिनी

श्रीमती ओम् शान्ति द्विवेदी,

सिद्धान्त-शास्त्री

के

कर-कमलों में

सस्नेह समर्पित ।

कपिलदेव द्विवेदी

विषय-सूची

परिशिष्ट

व्याकरण

आत्म-निवेदन

(१) पुस्तक-लेखन का उद्देश्य :—यह पुस्तक कक्षा ६, ७, ८ के छात्रों, हाईस्कूल, इन्टरमीडिएट और बी०ए० में हिन्दी के साथ अनिवार्य संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थियों और संस्कृत प्रथमा के छात्रों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रस्तुत की गई है। किस प्रकार कोई भी विद्यार्थी २ या ३ मास में निर्भीक होकर सरल और शुद्ध संस्कृत लिख तथा बोल सकता है, इसका ही प्रकार उपस्थित किया गया है। 'संस्कृत भाषा क्लिष्ट भाषा है,' इस लोकापवाद का खंडन करना मुख्य उद्देश्य है। संस्कृत के प्रारम्भिक छात्रों के लिए जितने व्याकरण का ज्ञान अत्यावश्यक है, उतना ही अंश इसमें दिया गया है। अनावश्यक सभी विवरण छोड़ दिया गया है। समस्त व्याकरण अनुवाद के द्वारा सिखाया गया है। रटने की क्रिया को न्यूनतम किया गया है।

(२) पुस्तक की शैली :—पुस्तक कुछ नवीनतम विशेषताओं के साथ प्रस्तुत की गई है। हिन्दी, संस्कृत तथा इंग्लिश में अभी तक इस पद्धति से लिखी गई अन्य कोई पुस्तक नहीं है। जर्मन और फ्रेंच भाषा में इस पद्धति पर लिखी गई कुछ पुस्तकें हैं, जिनके द्वारा सरल रूप में जर्मन आदि भाषाएँ सीखी जा सकती हैं। इंग्लिश तथा रूसी भाषा में भी वैज्ञानिक पद्धति से नवीन भाषा सिखाने के लिए अनेक पुस्तकें हैं। इन भाषाओं में भाषा-शिक्षण की जो नवीनतम वैज्ञानिक पद्धति अपनाई गई है, उसको ही इस पुस्तक में भी आधार माना गया है।

(३) अभ्यास और शब्दकोष :—इस पुस्तक में केवल ३० अभ्यास दिए गए हैं। प्रत्येक अभ्यास में २० नए शब्द हैं। इस प्रकार कुल ६०० अत्यावश्यक मौलिक (Basic) शब्दों का प्रयोग विशेष रूप से सिखाया गया है। शब्दकोष के शब्दों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से है :—

(क) अर्थात् संज्ञा या सर्वनाम शब्द	३४९
(ख) अर्थात् धातु या क्रिया शब्द	१२२
(ग) अर्थात् अव्यय शब्द ...	८०
(घ) अर्थात् विशेषण शब्द ...	४९
पठित एवं अभ्यस्त शब्दों का योग	६०० (शब्दयोग)

(४) विद्यार्थियों से

(१) संस्कृत भाषा को अति सरल, सुबोध और सुगम बनाने के लिए यह पुस्तक प्रस्तुत की गई है। प्रयत्न किया गया है कि छात्रों की प्रत्येक कठिनाई को दूर किया जाए। अतएव सरलतम भाषा का प्रयोग किया गया है।

(२) पुस्तक में केवल ३० अभ्यास हैं। प्रत्येक अभ्यास में केवल २० नए शब्दों का अभ्यास कराया गया है। कोई भी प्रारम्भिक छात्र एक या दो घंटा प्रतिदिन समय देने पर दो दिन में १ अभ्यास पूरा कर सकता है। इस प्रकार दो मास में यह पुस्तक समाप्त हो सकती है। केवल ८० नियमों में सब आवश्यक नियम दे दिए गए हैं।

(३) संस्कृत भाषा के प्रारम्भिक ज्ञान के लिए जितने शब्दों, धातुओं और नियमों के जानने की आवश्यकता है, वे सभी इस पुस्तक में हैं। इस पुस्तक का ठीक अभ्यास हो जाने पर छात्र निःसंकोच सरल एवं शुद्ध संस्कृत लिख और बोल सकता है।

(४) प्रारम्भिक छात्रों के लिए उपयोगी सम्पूर्ण व्याकरण इस पुस्तक के अन्त में दिया हुआ है। शब्दों के रूप, धातु-रूप, संख्याएँ, १६ मुख्य संधि के नियम, १० मुख्य प्रत्ययों से बने हुए धातुओं के रूप परिशिष्ट में हैं।

(५) प्रत्येक अभ्यास में कुछ विशेष शब्दों और नियमों का अभ्यास कराया गया है। उनको प्रारम्भ से ही ठीक स्मरण करना चाहिए। विशेष सफलता के लिए प्रत्येक अभ्यास के अन्त में दिए हुए अभ्यास-प्रश्नों को करना चाहिए।

सेंट एंड्रूज़ कालेज, गोरखपुर
३०-६-१९५३ } कपिलदेव द्विवेदी

तृतीय संस्करण की भूमिका

संस्कृत-प्रेमी अध्यापकों, विद्यार्थियों और जनता ने इस पुस्तक का हार्दिक स्वागत किया है, तदर्थ उनका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। प्रथम दो संस्करणों में छपाई संबन्धी या अन्य जो त्रुटियाँ रह गई थीं, उनका इस संस्करण में निराकरण कर दिया गया है। प्रस्तुत संस्करण प्रथम दो संस्करणों का संशोधित रूप है। अनुवादार्थ गद्य-संग्रह, आवश्यक संकेत और सुभाषित आदि बढ़ाया गया है। आशा है प्रस्तुत संस्करण विद्यार्थियों के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगा।

गवर्नमेंट कालेज, नैनीताल
ता० २०-७-६२ ई० } कपिलदेव द्विवेदी

आवश्यक-निर्देश

१. प्रत्येक अभ्यास में २० नए शब्द दिए गए हैं। ३० अभ्यासों में कुल ६०० अत्यावश्यक शब्द एकत्र किए गए हैं। प्रत्येक अभ्यास में मुख्यरूप से इन शब्दों और धातुओं का अभ्यास कराया गया है। इनको ठीक स्मरण कर लें।

२. शब्दकोष को ४ भागों में बाँटा गया है। (क)=संज्ञा शब्द, (ख)=धातु या क्रिया-शब्द, (ग)=अव्यय, (घ)=विशेषण। शब्दकोष के लिए (क) (ख) आदि संकेत स्मरण कर लें। शब्दकोष में जहाँ (क) (ख) (ग) या (घ) नहीं हैं, वहाँ यह अर्थ समझें कि उस विभाग का शब्द वहाँ नहीं है। शब्दकोष के अन्त में सूचना दी गई है कि शब्दों या धातुओं के रूप किस प्रकार चलेंगे। तदनुसार उनके रूप चलावें।

३. प्रत्येक अभ्यास के लिए केवल दो पृष्ठ दिए गए हैं। दोनों पृष्ठों पर पंक्तियाँ गिनकर रक्खी गई हैं। बाईं ओर—(१) शब्दकोष, (२) व्याकरण-सम्बन्धी कुछ नियम दिए गए हैं। दाईं ओर—(१) उदाहरण-वाक्य, (२) संस्कृत बनाने के लिए हिन्दी के वाक्य, (३) अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध वाक्य, (४) अभ्यास आदि।

४. व्याकरण के जो नियम उस अभ्यास में दिए गए हैं तथा जो नए शब्द दिए हैं, उनका प्रयोग उदाहरण-वाक्यों में किया गया है। उदाहरण-वाक्यों को बहुत ध्यानपूर्वक समझ लें। उनसे बहुत मिलते हुए वाक्य ही संस्कृत-अनुवाद के लिए दिए गए हैं। जहाँ कोई कठिनाई हो वहाँ उदाहरण-वाक्यों और अशुद्ध-वाक्यों के शुद्ध-वाक्यों से सहायता लें।

५. * चिह्न वाले नियम विशेष आवश्यक हैं। जिन अशुद्धियों का एक बार निर्देश किया है, बार-बार उनका निर्देश नहीं है। राम, गृह, रमा आदि के तुल्य चलनेवाले शब्दों के लिए प्रत्यक शब्दकोष में निर्देश नहीं है, उनके रूप तदनुसार चलावें।

६. सभी आवश्यक शब्दों और धातुओं के रूप पुस्तक के अन्त में दिए गए हैं, उन्हें वहाँ देखें। १ से १०० तक गिनती, १६ मुख्य संधियाँ तथा १० मुख्य प्रत्ययों से बने धातुओं के रूप अन्त में हैं। उनको वहीं देखें।

शब्दकोष—२०] **अभ्यास १** (व्याकरण)

(क) सः (वह), तौ (वे दोनों), ते (वे सब), कः (कौन) (सर्वनाम)। रामः (राम), ईश्वरः (ईश्वर), बालकः (बालक), मनुष्यः (मनुष्य), नृपः (राजा), विद्यालयः (विद्यालय), ग्रामः (गाँव)। (११)। (ख) भू (होना), पठ् (पढ़ना), गम् (जाना), हस् (हँसना)। (४)। (ग) अत्र (यहाँ,) तत्र (वहाँ,) यत्र (जहाँ), कुत्र (कहाँ), किम् (क्या)। (५)।

सूचना—१. शब्दकोष के लिए ये संकेत स्मरण कर लें। आगे भी शब्दकोष में (क) (ख) (ग) (घ) का यही अर्थ समझें।

(क)=संज्ञा या सर्वनाम शब्द। (ख)=धातु या क्रिया-शब्द।
(ग)=अव्यय या क्रियाविशेषण। (घ)=विशेषण शब्द।

२. (क) चिह्न—(अर्थात् लकीर) 'तक' अर्थ का बोधक है। जैसे—१–१० अर्थात् १ से १० तक। राम—ग्राम अर्थात् ऊपर शब्दकोष में दिए राम से ग्राम तक सारे शब्द। (ख) 'वत्' का अर्थ है तुल्य या सदृश। जिस शब्द या धातु के तुल्य अन्य शब्दों या धातुओं के रूप चलेंगे, उसका संकेत 'वत्' लगाकर किया गया है। जैसे 'रामवत्' अर्थात् राम के तुल्य रूप चलेंगे। 'भवतिवत्' अर्थात् भवति के तुल्य रूप चलेंगे।

३. (क) राम—ग्राम, रामवत् अर्थात् ऊपर शब्दकोष (क) में दिए राम से ग्राम शब्द तक के रूप राम शब्द के तुल्य चलेंगे। (ख) भू—हस्, भवतिवत् अर्थात् भू से हस् धातु तक के रूप भवति के तुल्य चलेंगे।

व्याकरण (लट्, परस्मैपद)

१. राम शब्द के प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के रूप स्मरण करो। (देखो शब्दसंख्या १)। राम के तुल्य ही ईश्वर आदि के भी रूप चलाओ।

२. लट् का अर्थ है वर्तमानकाल। प्रथम पुरुष में धातु के अन्त में एकवचन में अति, द्विवचन में अतः, बहुवचन में अन्ति लगेगा। जैसे—भवति भवतः भवन्ति। इसी प्रकार पठ् आदि के भी रूप बनाओ। लट् आदि में गम् का गच्छ् हो जाता है, गच्छति गच्छतः आदि।

नियम १—कर्ता के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष होता है। जैसे, सः पठति। कर्ता प्रथम पुरुष एकवचन है, अतः क्रिया भी प्र० पु० एक० है।

नियम २—तीनों लिंगों में धातु का रूप वही रहता है।

* **नियम ३**—कर्ता में प्रथमा होती है और कर्म में द्वितीया।

अभ्यास १

१. उदाहरण-वाक्य :—१. वह पढ़ता है—सः पठति । २. वे दो पढ़ते हैं (या पढ़ रहे हैं)—तौ पठतः । ३. वे सब पढ़ते हैं—ते पठन्ति । ४. वहाँ क्या हो रहा है ?—तत्र किं भवति ? ५. बालक वहाँ जाता है—बालकः तत्र गच्छति । ६. वह मनुष्य हँसता है—सः मनुष्यः हसति ।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. वह पढ़ता है । २. वह हँसता है । ३. बालक पढ़ता है । ४. राम गाँव को जाता है । ५. बालक विद्यालय को जाता है । ६. राजा जा रहा है । ७. वह मनुष्य कहाँ जाता है ? ८. वहाँ कौन पढ़ रहा है ? ९. यहाँ क्या हो रहा है ? १० .वह बालक हँसता है । (ख) ११. वे दोनों पढ़ते हैं । १२. वे दोनों कहाँ जाते हैं ? १३. दो बालक हँसते हैं । १४. दो मनुष्य गाँव को जाते हैं । १५. दो बालक विद्यालय को जाते हैं । (ग) १६. वे सब पढ़ते हैं । १७. सब बालक हँसते हैं । १८ सब मनुष्य गाँव को जाते हैं । १९. वे बालक जहाँ जाते हैं, वहाँ हँसते हैं । २०. सब बालक पढ़ रहे हैं ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	देखो नियम-संख्या
(१) रामं ग्रामः गच्छन्ति ।	रामः ग्रामं गच्छति ।	१, ३
(२) तौ पठति ।	तौ पठतः ।	१
(३) बालकौ विद्यालयः गच्छन्ति ।	बालकौ विद्यालयं गच्छतः ।	१, ३
(४) यत्र गच्छन्ति तत्र हसति ।	यत्र गच्छन्ति तत्र हसन्ति ।	१

४. शुद्ध करो तथा नियम बताओ—सः पठतः । सः पठन्ति । तौ पठति । ते पठति । बालकः हसन्ति । सः गच्छन्ति । रामः ग्रामः गच्छन्ति । ते किं पठति ।

५. अभ्यास (संस्कृत में)—(क) २ (क) के वाक्यों को द्विवचन और बहुवचन में बदलो । (ख) २ (ख) के वाक्यों को एकवचन और बहुवचन में बदलो । (ग) भू, पठ्, गम्, हस् के लट् प्रथम पुरुष के रूप लिखो । (घ) राम, बालक, मनुष्य, नृप, ग्राम के प्रथमा और द्वितीया के रूप लिखो ।

६. वाक्य बनाओ—पठति, पठन्ति, गच्छति, गच्छन्ति, हसति, कः, किम्, अत्र, यत्र, तत्र, कुत्र ।

शब्दकोष २०+२०=४०] अभ्यास २ (व्याकरण)

(क) त्वम् (तू), युवाम् (तुम दोनों), यूयम् (तुम सब) (सर्वनाम)। गृहम् (घर), ज्ञानम् (ज्ञान), पुस्तकम् (पुस्तक), पुष्पम् (फूल), जलम् (जल), सत्यम् (सत्य), भोजनम् (भोजन), राज्यम् (राज्य)। (११) (ख) रक्ष् (रक्षा करना), वद् (बोलना), पच् (पकाना), नम् (नमस्कार करना)। (४)। (ग) अद्य (आज), इदानीम् (अब), यदा (जब), तदा (तब), कदा (कब)। (५)

सूचना—(क) गृह–राज्य, गृहवत्। (ख) रक्ष्—नम्, भवतिवत्।

व्याकरण (लट्, मध्यमपुरुष)

१. गृह शब्द के प्रथमा, द्वितीया के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द संख्या २६)। शब्द के अन्त में प्रथमा और द्वितीया में अम्, ए, आनि लगेगा। गृह और पुष्प शब्द में आनि के स्थान पर आणि लगेगा।

२. मध्यमपुरुष में धातु के अन्त में एकवचन में असि, द्विवचन में अथः और बहुवचन में अथ लगेगा। जैसे—पठसि, पठथः, पठथ। इसी प्रकार रक्ष् आदि धातुओं के रूप बनाओ। जैसे—रक्षसि, वदसि, पचसि, नमसि, गच्छसि, भवसि, हससि आदि।

३. संस्कृत में तीन वचन होते हैं—एकवचन, द्विवचन, बहुवचन। एक के लिए एकवचन (एक०), दो के लिए द्विवचन (द्वि०), तीन या अधिक के लिए बहुवचन (बहु०)।

४. तीन पुरुष होते हैं :—(१) प्रथम (या अन्य) पुरुष (प्र० पु०) अर्थात् वह, वे दोनों, वे सब, किसी व्यक्ति या वस्तु का नाम। (२) मध्यमपुरुष (म० पु०) अर्थात् तू, तुम दोनों, तुम सब। (३) उत्तमपुरुष (उ० पु०) अर्थात् मैं, हम दोनों, हम सब। ये नाम स्मरण कर लें।

नियम ४—(अपदं न प्रयुञ्जीत) बिना प्रत्यय लगाए किसी शब्द या धातु का प्रयोग न करें। (शब्द के अन्त में जुड़ने वाले :, औ, आः आदि तथा धातु के अन्त में जुड़ने वाले अति, अतः, अन्ति आदि को प्रत्यय कहते हैं।) अन्त में बिना कुछ प्रत्यय लगाए गृह, पुस्तक, भोजन, पठ्, रक्ष् आदि का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। गृहम्, पुस्तकम्, पठति आदि का ही प्रयोग होगा।

अभ्यास २

१. उदाहरण-वाक्य :— १. तू पढ़ता है—त्वं पठसि । २. तुम दोनों पढ़ते हो—युवां पठथः । ३. तुम सब पढ़ते हो—यूयं पठथ । ४. त्वं पुस्तकं पठसि । ५. युवां राज्यं रक्षथः । ६. यूयं भोजनं पचथ । ७. त्वम् ईश्वरं नमसि । ८. युवां गृहं गच्छथः । ९. यूयं सत्यं वदथ । १०. त्वम् इदानीं किं पठसि ।

२. संस्कृत बनाओ :— (क) १. तू पढ़ता है । २. तू घर को जाता है । ३. तू हँसता है । ४. तू राज्य की रक्षा करता है । ५. तू सत्य बोलता है । ६. तू क्या कहता है ? ७. तू ईश्वर को नमस्कार करता है । ८. तू पुस्तक पढ़ता है । ९. तू कहाँ जाता है ? १०. तू आज क्या पढ़ रहा है ? ११. जब तू आता है, तब वह भोजन पकाता है। १२. तू अब पुस्तक पढ़ रहा है । (ख) १३. तुम दोनों कब पुस्तकें पढ़ते हो ? १४. तुम दोनों सत्य बोलते हो । १५. तुम दोनों क्या कहते हो ? १६. तुम दोनों राजा की रक्षा करते हो । (ग) १७. तुम सब विद्यालय को जाते हो । १८. तुम सब हँसते हो । १९. तुम सब कब पुस्तकें पढ़ते हो ? २०. तुम सब अब कहाँ जाते हो ?

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) त्वं राज्यस्य रक्षसि ।	त्वं राज्यं रक्षसि ।	३
(२) युवां पुस्तक पठसि ।	युवां पुस्तके पठथः ।	१, ४
(३) यूयं विद्यालयं गच्छथः ।	यूयं विद्यालयं गच्छथ ।	१
(४) यूयं हसन्ति ।	यूयं हसथ ।	१

४. शुद्ध करो तथा नियम बताओ :— त्वं पठति । युवां पठथ । यूयं पठन्ति । यूयं वदसि । त्वं गच्छति । त्वं नृपस्य रक्षसि । त्वं पठ् ।

५. अभ्यास :— (क) २ (क) के वाक्यों को द्विवचन और बहुवचन में बदलो । (ख) भू, पठ्, गम्, हस्, रक्ष्, वद्, पच्, नम् के लट् मध्यमपुरुष के रूप लिखो । (ग) गृह, ज्ञान, पुस्तक, पुष्प, भोजन के प्रथमा और द्वितीया के रूप लिखो । (घ) संस्कृत में कितने वचन और पुरुष होते हैं, बताओ ।

६. वाक्य बनाओ:— पठसि, गच्छसि, पुस्तकम्, गृहम्, सत्यम्, अद्य ।

शब्दकोष ४०+२०=६०] **अभ्यास ३** (व्याकरण)

(क) अहम् (मैं), आवाम् (हम दोनों), वयम् (हम सब) (सर्वनाम)। रमा (लक्ष्मी), बालिका (लड़की), लता (लता), कथा (कथा, कहानी), क्रीडा (खेल), पाठशाला (पाठशाला), विद्या (विद्या)। (१०)। (ख) आ+गम् (आना), दृश् (देखना), स्था (रुकना, बैठना), पा (पीना), घ्रा (सूँघना), सद् (बैठना)। (६)। (ग) इतः (यहाँ से, इधर), ततः (वहाँ से), यतः (जहाँ से), कुतः (कहाँ से)। (४)।

सूचना—(क) रमा—विद्या, रमावत्। (ख) आगम्—सद्, भवतिवत्।

व्याकरण (लट्, उत्तमपुरुष, वर्णमाला)

१. रमा शब्द के प्रथमा द्वितीया के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० १५)। इसी प्रकार बालिका आदि के रूप चलाओ।

२. उत्तमपुरुष में धातु के अन्त में एक० में आमि, द्वि० में आवः और बहु० में आमः लगेगा। जैसे—पठामि, पठावः, पठामः।

३. लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्ग में इन धातुओं के ये रूप होते हैं—गम्—गच्छ्, गच्छति आदि। आगम्—आगच्छ्, आगच्छति। दृश्—पश्य्, पश्यति। स्था—तिष्ठ्, तिष्ठति। पा—पिब्, पिबति। घ्रा—जिघ्र्, जिघ्रति। सद्—सीद्, सीदति। लृट् में गम् आदि ही रहेगा।

४. **वर्णमाला**—कोष्ठ में पारिभाषिक नाम हैं, इन्हें स्मरण कर लें।

(क) स्वर—अ, इ, उ, ऋ, लृ (ह्रस्व) ऽए, ऐ, ओ, औ (मिश्रित)
आ, ई, ऊ, ॠ (दीर्घ)

(ख) व्यंजन—क, ख, ग, घ, ङ (कवर्ग) च, छ, ज, झ, ञ (चवर्ग)
ट, ठ, ड, ढ, ण (टवर्ग) त, थ, द, ध, न (तवर्ग)
प, फ, ब, भ, म (पवर्ग) य, र, ल, व (अन्तःस्थ)
श, ष, स, ह (ऊष्म), ं (अनुस्वार), ँ (अनुनासिक)
ः (विसर्ग)

सूचना—वर्ग के प्रथम (१) अक्षर का अर्थ है—क च ट त प। द्वितीय (२)—ख छ ठ थ फ। तृतीय (३)—ग ज ड द ब। चतुर्थ (४) —घ झ ढ ध भ। पंचम (५)—ङ ञ ण न म। संधि-नियमों के लिए ये संकेत स्मरण रक्खें।

नियम ५. (अच्हीनं परेण संयोज्यम्) हल् व्यंजन आगे के स्वर से मिल जाता है। (यह नियम ऐच्छिक है)। जैसे—अहम्+अद्य=अहमद्य। त्वमिदानीम्।

अभ्यास ३

१. उदाहरण-वाक्य :—१. मैं पढ़ता हूँ—अहं पठामि। २. हम दोनों पढ़ते हैं—आवां पठावः। ३. हम सब पढ़ते हैं—वयं पठामः। ४. अहं विद्यां पठामि। ५. आवां क्रीडां पश्यावः। ६. वयं पाठशालां गच्छामः। ७. अहम् अत्र आगच्छामि। ८. वयमत्र तिष्ठामः। ९. अहं जलं पिबामि। १०. अहं पुष्पं जिघ्रामि। ११. वयमत्र सीदामः। १२. बालिका कुतः आगच्छति।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. मैं पढ़ता हूँ। २. मैं पाठशाला को जाता हूँ। ३. मैं खेल देखता हूँ। ४. मैं फूल सूँघता हूँ। ५. मैं वहाँ से आता हूँ। ६. मैं यहाँ बैठता हूँ। ७. मैं लता को देखता हूँ। ८ मैं जल पीता हूँ। ९. मैं सत्य बोलता हूँ। १०. म यहाँ रुकता हूँ। ११. मैं विद्या पढ़ता हूँ। १२. मैं रमा को देखता हूँ। (ख) १३. हम दोनों कहाँ से आते हैं? १४. हम दोनों वहाँ से आते हैं। १५. हम दोनों जल पीते हैं। १६. हम दोनों राजा को देखते हैं। (ग) १७. हम सब विद्या पढ़ते हैं। १८. हम सब ईश्वर को नमस्कार करते हैं। १९. हम सब फूल सूँघते हैं। २०. हम सब बालिका की रक्षा करते हैं।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अहं पुष्पं घ्रामि।	अहं पुष्पं जिघ्रामि।	धातुरूप
(२) अहम् अत्र स्थामि।	अहमत्र तिष्ठामि।	"
(३) वयं बालिकायाः रक्षामि।	वयं बालिकां रक्षामः।	१, ३

४. शुद्ध करो तथा नियम बताओ—अहं दृश्यामि। अहं स्थामि। अहं पामि। अहं घ्रामि। वयं सदामः। आवां गच्छतः। वयं पश्यन्ति।

५. अभ्यास :—(क) २ (क) के वाक्यों को द्विवचन और बहुवचन में बदलो। (ख) इनके लट्, उत्तमपुरुष के रूप लिखो—भू, पठ्, रक्ष्, वद्, गम्, आगम्, दृश्, स्था, पा, घ्रा, सद्। (ग) इनके प्रथमा और द्वितीया के रूप लिखो—रमा, बालिका, लता, विद्या, कथा।

६. रिक्त स्थानों को भरो :—(लट् लकार) १. अहं जलम् (पा)। २. अहं गृहं (गम्)। ३. अहं लतां (दृश्)। ४. अहं पुष्पं (घ्रा)। ५. वयं सत्यं (वद्)। ६. आवामत्र (स्था)। ७. वयं पुस्तकं (पठ्)। ८. ते भोजनं (पच्)।

शब्दकोष ६०+२०=८०] अभ्यास ४ (व्याकरण)

(ख) कृ (करना), अस् (होना)। (२)। (ग) इत्थम् (ऐसे), तथा (वैसे), यथा (जैसे), कथम् (क्यों, कैसे), अपि (भी), न (नहीं), च (और), एव (ही)। (८)। (घ) एकः (एक), द्वौ (दो), त्रयः (तीन), चत्वारः (चार), पञ्च (पाँच), षट् (छः), सप्त (सात), अष्ट (आठ), नव (नौ), दश (दस)। (१०)

व्याकरण (कृ, अस्, लट्; कारक-परिचय)

१. कृ (करना) लट् २. अस् (होना) लट्

करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	प्र० पु०	अस्ति	स्तः	सन्ति	प्र० पु०
करोषि	कुरुथः	कुरुथ	म० पु०	असि	स्थः	स्थ	म० पु०
करोमि	कुर्वः	कुर्मः	उ० पु०	अस्मि	स्वः	स्मः	उ० पु०

२. संस्कृत में संवोधन को लेकर ८ विभक्तियाँ (कारक) होती हैं। उनके नाम, कारक-नाम और चिह्न ये हैं। इन्हें स्मरण कर लें।

विभक्ति		कारक	कारक-चिह्न
(१) प्रथमा	(प्र०)	कर्ता	—, ने
(२) द्वितीया	(द्वि०)	कर्म	को
(३) तृतीया	(तृ०)	करण	ने, से, द्वारा
(४) चतुर्थी	(च०)	संप्रदान	के लिए
(५) पंचमी	(पं०)	अपादान	से
(६) षष्ठी	(ष०)	सम्वन्ध	का, के, की
(७) सप्तमी	(स०)	अधिकरण	में, पर
(८) संवोधन	(सं०)	संवोधन	हे, अये, भोः

नियम ६—संस्कृत में 'च' (और) का प्रयोग एक शब्द के वाद कीजिए। अर्थात् हिन्दी में जहाँ 'और' लगता है, संस्कृत में 'च' एक शब्द के वाद में लगेगा। जैसे, फल और फूल—फलं पुष्पं च। फलं च पुष्पम्, अशुद्ध है। इसी प्रकार रामः कृष्णः च, वालकः वालिका च।

अभ्यास ४

१. उदाहरण-वाक्य :—१. अत्र एकः बालकः अस्ति। २. तत्र द्वौ मनुष्यौ स्तः। ३. अत्र त्रयः नृपाः सन्ति। ४. चत्वारः ग्रामाः। ५. पञ्च पुस्तकानि। ६. षट् पुष्पाणि। ७. सप्त बालिकाः। ८. अष्ट गृहाणि। ९. नव विद्यालयाः। १०. दश पाठशालाः। ११. सः किं करोति। १२. स पठति। १३. त्वं किं करोषि? १४. अहं भोजनं करोमि। १५. सः अपि अत्र एव पठति।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. वह है। २. वे दोनों वहाँ हैं। ३. सब बालक यहाँ हैं। ४. तू कहाँ है? ५. तुम दोनों यहाँ हो। ६. तुम सब कहाँ हो? ७. मैं बालक हूँ। ८. हम दोनों भी यहाँ ही हैं। ९. हम सब मनुष्य हैं। (ख) १०. वह क्या करता है? ११. वे सब भोजन करते हैं। १२. तू क्या करता है? १३. तुम सब क्या करते हो? १४. मैं भोजन करता हूँ। १५. हम राज्य करते हैं। (ग) १६. ईश्वर एक ही है। १७. दो बालक फूल सूँघते हैं। १८. तीन आदमी खाना खाते हैं। १९. चार बालक आ रहे हैं। २०. पाँच पुस्तकें और पाँच फूल यहाँ हैं। २१. छः बालिकाएँ इस प्रकार पढ़ रही हैं। २२. सात बालक भी यहीं पढ़ते हैं। २३. आठ पाठशाला यहाँ हैं। २४. नौ फूल वहाँ हैं। २५. दस आदमी गाँव को जा रहे हैं।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	तौ अस्ति। त्वम् अस्ति।	तौ स्तः। त्वम् असि।	१
(२)	तौ कुर्वन्ति। अहं करोषि।	तौ कुरुतः। अहं करोमि।	१
(३)	चत्वारः बालकाः आगच्छति।	चत्वारः बालकाः आगच्छन्ति।	१
(४)	पञ्च पुस्तकानि च पुष्पाणि।	० पुस्तकानि पुष्पाणि च।	६

४. शुद्ध करो :—तौ सन्ति। ते अस्ति। अहम् अस्ति। त्वम् अस्मि। ते करोति। त्वं करोति। अहं करोषि। वयं करोमि।

५. अभ्यास :—(क) १ से १० तक की गिनती के १० वाक्य बनाओ। (ख) अस् और कृ के लट् के रूप लिखो। (ग) विभक्ति और कारकों के नाम तथा उनके चिह्न बताओ।

६. रिक्त स्थान भरो :—(लट् लकार) १. सः अत्र (अस्)। २. ते तत्र (अस्)। ३. त्वम् (अस्)। ४. अहम् (अस्)। ५. स किं (कृ)। ६. त्वं किं (कृ)।

शब्दकोष ८०+२०=१००]　　**अभ्यास ५**　　(व्याकरण)

(क) भवान् (आप, पुंलिंग), भवती (आप, स्त्रीलिंग)। जनकः (पिता), पुत्रः (पुत्र), उपाध्यायः (गुरु), नरः (मनुष्य), सूर्यः (सूर्य), चन्द्रः (चन्द्रमा), प्राज्ञः (विद्वान्), सज्जनः (सज्जन), दुर्जनः (दुर्जन), शिष्यः (शिष्य), प्रश्नः (प्रश्न)। (१३)। (ख) खाद् (खाना), क्रीड् (खेलना), पत् (गिरना), स्मृ (स्मरण करना), जि (जीतना), नी (ले जाना), हृ (ले जाना, हरण करना)। (७)

सूचना—(क) जनक—प्रश्न, रामवत्। (ख) खाद्—हृ, भवतिवत्।

व्याकरण (राम, लट्, प्रथमा, संबोधन)

१. राम शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्दसंख्या १)। जनक आदि के रूप राम के तुल्य चलेंगे, अन्त में संक्षिप्त रूप लगाओ।

२. भू—लट् (वर्तमान)				संक्षिप्त रूप		
भवति	भवतः	भवन्ति	प्र० पु०	अति	अतः	अन्ति
भवसि	भवथः	भवथ	म० पु०	असि	अथः	अथ
भवामि	भवावः	भवामः	उ० पु०	आमि	आवः	आमः

सूचना—खाद् आदि के रूप भवति के तुल्य चलेंगे। संक्षिप्त रूप अन्त में लगेंगे। जैसे—खादति, क्रीडति, पतति, स्मरति, जयति, नयति, हरति।

*नियम ७—कर्ता (व्यक्तिनाम, वस्तुनाम आदि) में प्रथमा होती है। जैसे—रामः पठति। बालकः गच्छति।

नियम ८—किसी को संबोधन करने (पुकारने) में संबोधन विभक्ति होती है। जैसे—हे राम!, हे कृष्ण!, हे देवदत्त!

*नियम ९—भवत् (आप) शब्द के साथ सदा प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष) आता है, मध्यम पुरुष नहीं। भवत् के रूप पुंलिंग में चलते हैं:—भवान्, भवन्तौ, भवन्तः आदि। स्त्रीलिंग में—भवती, भवत्यौ, भवत्यः आदि। जैसे—भवान् पठति, भवन्तौ पठतः, भवन्तः पठन्ति। भवती पठति। भवत्यौ पठतः। भवत्यः पठन्ति।

*नियम १०—र् और ष् के बाद न को ण हो जाता है, यदि बीच में स्वर, ह, य, व, र, कवर्ग, पवर्ग, न्, बीच में हो तो भी। इन शब्दों में यह नियम लगेगा—राम, ईश्वर, नृप, ग्राम, पुत्र, नर, सूर्य, चन्द्र, शिष्य। अतः इनमें तृतीया एकवचन में एण और षष्ठी बहु० में आणाम् लगेगा।

अभ्यास ५

१. उदाहरण-वाक्य :—१. आप जाते हैं—भवान् गच्छति । २. आप सब जाते हैं—भवन्तः गच्छन्ति । ३. आप हँसती हैं—भवती हसति । ४. पुत्रः भोजनं खादति । ५. पुत्रः क्रीडति । ६. पुष्पं पतति । ७. रामः ईश्वरं स्मरति । ८. नृपः राज्यं जयति । ९. शिष्यः पुस्तकं तत्र नयति । १०. दुर्जनः धनं हरति ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. वालक घर को जाता है । २. मनुष्य आते हैं । ३. पुत्र पिता को नमस्कार करता है । ४. वालक सूर्य और चन्द्रमा को देखता है । ५. शिष्य गुरु से कहता है (वद्) । ६. विद्वान् और सज्जन सत्य बोलते हैं । ७. दुर्जन असत्य बोलते हैं । ८. वालक खाना खाता है । ९. पुत्र खेलता है । १०. फूल गिरता है । ११. शिष्य पाठ याद करता है । १२. राजा राज्य को जीतता है । १३. वालक पुस्तक ले जाता है । १४. दुर्जन राज्य का हरण करता है । (ख) १५. तू पढ़ता है । १६. तू सत्य बोलता है । १७. तू भोजन करता है । १८. मैं यहाँ आता हूँ । १९. मैं खेलता हूँ । २०. मैं पुस्तक ले जाता हूँ । (ग) २१. आप यहाँ आते हैं । २२. आप सब वहाँ जाते हैं । २३. आप सत्य बोलती हैं । २४. आप सब पुस्तकें पढ़ती हैं ।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	भवान् आगच्छसि ।	भवान् आगच्छति ।	९
(२)	भवती सत्यं वदसि ।	भवती सत्यं वदति ।	९

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को द्विवचन और वहुवचन में वदलो । (ख) इन धातुओं के लट् के पूरे रूप लिखो—भू, पठ्, गम्, वद्, आगम्, दृश्, स्था, पा, घ्रा, सद्, खाद्, नी, हृ । (ग) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—राम, वालक, मनुष्य, नर, जनक, पुत्र ।

५. वाक्य वनाओ—खादति, क्रीडामि, स्मरामि, भवान्, भवती, भवत्यः ।

६. रिक्त स्थान भरो :—(लट् लकार) १. भवान् (हस्) । २. भवती (पठ्) । ३. वालकाः (पठ्) । ४. वयं (क्रीड्) । ५. यूयं (वद्) । ६. पुष्पाणि (पत्) । ७. दुर्जनः वालिकां (हृ) । ८. यूयं किं (खाद्) ।

शब्दकोष १००+२०=१२०] अभ्यास ६ (व्याकरण)

(क) धनम् (धन), फलम् (फल), पत्रम् (पत्ता, चिट्ठी); वनम् (वन), नगरम् (नगर), अध्ययनम् (पढ़ना), कार्यम् (कार्य)। (७)। (ख) तुद् (दुःख देना), इष् (चाहना), स्पृश् (छूना), लिख् (लिखना), प्रच्छ् (पूछना), विश् (प्रविष्ट होना)। (६)। (ग) अभितः (दोनों ओर), उभयतः (दोनों ओर), परितः (चारों ओर), सर्वतः (सब ओर), प्रति (ओर), धिक् (धिक्कार), विना (विना)। (७)

सूचना—(क) धन—कार्य, गृहवत्। (ख) तुद्—विश्, भवतिवत्।

व्याकरण ('गृह' लोट्, द्वितीया)

१. गृह शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्दसंख्या २६)। संक्षिप्त रूप लगाकर धन आदि के रूप गृह के तुल्य चलावें। नियम १० इन शब्दों में लगेगा—गृह, पुष्प, पत्र, नगर, कार्य। अतः इनमें आनि के स्थान पर आणि, एन की जगह एण और आनाम् की जगह आणाम् लगेगा।

२. तुद् आदि के रूप भू के तुल्य चलावें। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में इष् को इच्छ् और प्रच्छ् को पृच्छ् हो जाता है। जैसे—तुदति, इच्छति, स्पृशति, लिखति, पृच्छति, विशति।

३. भू—लोट् (आज्ञा अर्थ) संक्षिप्त रूप

भवतु	भवताम्	भवन्तु	प्र० पु०	अतु	अताम्	अन्तु
भव	भवतम्	भवत	म० पु०	अ	अतम्	अत
भवानि	भवाव	भवाम	उ० पु०	आनि	आव	आम

सूचना—संक्षिप्तरूप लगाकर पठ्, गम् आदि तथा तुद् आदि के रूप बनावें। जैसे, पठतु, गच्छतु, वदतु, तुदतु, इच्छतु, लिखतु, पृच्छतु आदि।

*नियम ११—(कर्मणि द्वितीया) कर्म कारक में द्वितीया होती है। जैसे—रामः विद्यालयं गच्छति। स पुस्तकं पठति। स प्रश्नं पृच्छति।

*नियम १२—अभितः, उभयतः, परितः, सर्वतः, प्रति, धिक् और विना के साथ द्वितीया होती है। जैसे—ग्रामम् अभितः उभयतः वा (गाँव के दोनों ओर)। ग्रामं प्रति। दुर्जनं धिक् (दुर्जन को धिक्कार)। रामं विना (राम के विना)।

अभ्यास ६

१. उदाहरण-वाक्य :—१. वह पुस्तक पढ़े—स पुस्तकं पठतु। २. तू खाना खा —त्वं भोजनं खाद। ३. मैं गाँव को जाऊँ—अहं ग्रामं गच्छानि। ४. गाँव के दोनों ओर जल है—ग्रामम् अभितः उभयतः वा जलम् अस्ति। ५. विद्यालय के चारों ओर फूल हैं—विद्यालयं परितः सर्वतः वा पुष्पाणि सन्ति। ६. स विद्यालयं प्रति (विद्यालय की ओर) गच्छतु। ७. स पृच्छतु। ८. त्वं लिख। ९. अहं पुष्पं धनं च इच्छानि। १०. सत्यं वद।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. वह पुस्तक पढ़े। २. वह गाँव को जावे। ३. वह फल खावे। ४. वह पत्ते को छूए। ५. वह फूल को चाहे। ६. वह पत्र लिखे। (ख) ७. तू ज्ञान और धन को चाह। ८. तू यहाँ आ। ९. तू वहाँ जा। १०. तू असत्य न बोल। ११. तू सत्य बोल। १२. तू भोजन पका। १३. तू सज्जन को दुःख न दे। १४. तू घर में प्रविष्ट हो। (ग) १५. मैं प्रश्न पूछूँ। १६. मैं विद्या पढ़ूँ। १७. मैं पत्र लिखूँ। १८. मैं पुस्तक चाहूँ। १९. मैं फूल को छूऊँ। (घ) २०. नगर के दोनों ओर जल है। २१. गाँव के चारों ओर वन है। २२. घर की ओर जाओ। २३. दुर्जन को धिक्कार। २४. विद्या के विना ज्ञान नहीं होता है।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	त्वम् असत्यं न वदतु।	त्वम् असत्यं न वद।	१
(२)	त्वं गृहे प्रविशन्तु।	त्वं गृहं प्रविश।	११, १
(३)	दुर्जनस्य धिक्।	दुर्जनं धिक्।	१२

४. अभ्यास :—(क) २ (क) (ख) (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) इनके पूरे रूप लिखो—गृह, फल, ज्ञान, पुस्तक, पुष्प, धन, वन। (ग) लोट् के पूरे रूप लिखो—भू, पठ्, लिख्, गम्, स्था, पा, दृश्, वद्, इष्, प्रच्छ्।

५. वाक्य बनाओ :—अभितः, उभयतः, परितः, सर्वतः, प्रति, धिक्, विना, पठतु, पठ, वद, तिष्ठ, इच्छानि, लिखानि, पृच्छानि।

६. रिक्त स्थान भरो—१.......अभितः जलम्। २..........उभयतः वनम्। ३. ...परितः पुष्पाणि सन्ति। ४. ....धिक्। ५. त्वं....पठ।

शब्दकोष १२०+२०=१४०] अभ्यास ७ (व्याकरण)

(क) कन्या (लड़की), अजा (बकरी), वसुधा (पृथ्वी), सुधा (अमृत), भार्या (पत्नी), आज्ञा (आज्ञा), निशा (रात्रि), जटा (जटा), क्षमा (क्षमा), माला (माला), गंगा (गंगा), यमुना (जमुना), शिला (शिला), प्रजा (प्रजा), लज्जा (लज्जा)। (१५)। (ख) चुर् (चुराना), चिन्त् (सोचना), कथ् (कहना), भक्ष् (खाना), रच् (बनाना)। (५)।

सूचना—(क) कन्या—लज्जा, रमावत्।

व्याकरण (रमा, लङ्, द्वितीया)

१. रमा शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द-संख्या १५)। संक्षिप्त-रूप लगाकर कन्या आदि के रूप बनाओ। नियम १० इन शब्दों में लगेगा—रमा, भार्या, क्षमा।

२. चुर् आदि धातुओं के निम्नलिखित रूप बनाकर 'भवति' के तुल्य रूप चलेंगे। चुर्—चोरयति, चिन्त्—चिन्तयति, कथ्—कथयति, भक्ष्—भक्षयति, रच्—रचयति।

३. संस्कृत में क्रिया (धातु) के १० प्रकार के रूप बनते हैं। इन्हें 'लकार' कहते हैं। इस पुस्तक में ५ लकार ही दिए गए हैं। उनके नाम और अर्थ ये हैं, इन्हें स्मरण कर लें। (१) लट् (वर्तमानकाल), (२) लोट् (आज्ञा अर्थ), (३) लङ् (भूतकाल), (४) विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ), (५) लृट् (भविष्यत् काल)।

४. भू—लङ् (भूतकाल) संक्षिप्तरूप

अभवत्	अभवताम्	अभवन्	प्र० पु०	अत्	अताम्	अन्
अभवः	अभवतम्	अभवत	म० पु०	अः	अतम्	अत
अभवम्	अभवाव	अभवाम	उ० पु०	अम्	आव	आम

सूचना—धातु से पहले 'अ' लगेगा, अन्त में संक्षिप्त रूप। जैसे, अपठत्, अगच्छत् आदि। धातु का प्रथम अक्षर स्वर होगा तो पहले 'आ' लगेगा।

*नियम १३—गमन (चलना, हिलना, जाना) अर्थ की धातुओं के साथ द्वितीया होती है। जैसे—ग्रामं गच्छति, गृहं गच्छति।

अभ्यास ७

१. उदाहरण-वाक्य :—१. उसने पुस्तक पढ़ी—स पुस्तकम् अपठत्। २. तू गाँव को गया—त्वं ग्रामम् अगच्छः। ३. मैंने भोजन खाया—अहं भोजनम् अखादम्। ४. दुर्जनः पुस्तकम् अचोरयत्। ५. सः अचिन्तयत्। ६. अहम् अकथयम्। ७. कन्या मालाम् अरचयत्। ८. प्रजा नृपम् अनमत्। ९. भार्या सुधाम् अपिवत्। १०. वसुधायां गंगा यमुना च स्तः। ११. स आगच्छत्।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. वह गाँव को गया। २. वह यहाँ आया। ३. वह हँसा। ४. वह बोला। ५. उसने विद्या पढ़ी। ६. उसने भोजन खाया। ७. उसने धन चुराया। ८. उसने माला बनाई। ९. उसने पत्र लिखा। १०. उसने कन्या की रक्षा की। (ख) ११. तूने पुस्तक पढ़ी। १२. तूने कन्या देखी। १३. तू घर को गया। १४. तूने जल पिया। १५. तूने बकरी छुई। (ग) १६. मैं रात्रि में घर गया। १७. मैंने अमृत पिया। १८. मैं शिला पर बैठा। १९. मैंने भोजन खाया। २०. मैंने पुस्तक बनाई। (घ) २१. कन्या लज्जा करती है। २२. शिष्य क्षमा चाहता है। २३. मालाएँ और जटाएँ यहाँ हैं। २४. गंगा और यमुना को देखो। २५. बकरी घर को जाती है।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	स ग्रामे अगच्छत्।	स ग्रामम् अगच्छत्।	१३
(२)	स कन्याया अरक्षत्।	स कन्याम् अरक्षत्।	११
(३)	अहम् गृहम् अगच्छत्।	अहं गृहम् अगच्छम्।	१

४. अभ्यास :—(क) २ (क) (ख) (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) २ (क) (ख) (ग) को लट् और लोट् में बदलो। (ग) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—रमा, बालिका, लता, विद्या, अजा, माला, गंगा। (घ) इन धातुओं के लङ के रूप लिखो—भू, पठ्, गम्, लिख्, वद्, दृश्, स्था, पा, घ्रा, चुर्, कथ्, भक्ष्।

५. वाक्य बनाओ :—अपठत्, अलिखम्, ऐच्छत्, अपश्यत्, अतिष्ठम्, अपिबम्, अजिघ्रत्, अचोरयत्, अभक्षयत्।

६. रिक्त-स्थान भरो :—(लङ लकार) १. स पत्रम् (लिख्)। २. स फलम् (इष्)। ३. अहं भोजनम् (भक्ष्)। ४. त्वं कन्याम् (दृश्)। ५. अहं पुष्पम् (घ्रा)।

शब्दकोष १४०+२०=१६०] अभ्यास ८ (व्याकरण)

(क) हरिः (विष्णु), मुनिः (मुनि), कविः (कवि), यतिः (संन्यासी), रविः (सूर्य), अग्निः (आग), गिरिः (पहाड़), कपिः (बन्दर), भूपतिः (राजा), सेनापतिः (सेनापति)। अर्थः (१. अर्थ, २. धन, ३. प्रयोजन), दण्डः (डंडा)। कन्दुकम् (गद), प्रयोजनम् (प्रयोजन)। (१४)। (ख) दिव् (१. चमकना, २. जुआ खेलना), नृत्, (नाचना), नश् (नष्ट होना), भ्रम् (घूमना)। (४)। (ग) सह (साथ), सार्धम् (साथ)। (२)

सूचना—(क) हरि—सेनापति, हरिवत्। (ख) दिव्—भ्रम्, दिव् के तुल्य।

व्याकरण (हरि, विधिलिङ्, तृतीया)

१. हरि शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द-संख्या २)। संक्षिप्त रूप लगाकर मुनि आदि के रूप हरिवत् बनाओ। नियम १० इन शब्दों में लगेगा—हरि, रवि, गिरि। जैसे—हरिणा, हरीणाम्।

२. दिव् आदि के निम्नलिखित रूप बनाकर 'भू' धातु के तुल्य रूप चलावें। दीव्यति, नृत्यति, नश्यति, भ्राम्यति। दीव्यतु, अदीव्यत्, दीव्येत् आदि।

३. भू—विधिलिङ् (आज्ञा अर्थ) संक्षिप्त रूप

भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	प्र० पु०	एत्	एताम्	एयुः
भवेः	भवेतम्	भवेत	म० पु०	एः	एतम्	एत
भवेयम्	भवेव	भवेम	उ० पु०	एयम्	एव	एम

संक्षिप्त रूप लगाकर पूर्वोक्त पठ् आदि के रूप इसी प्रकार चलावें।

*नियम १४—(कर्तृकरणयोस्तृतीया) करण कारक में तृतीया होती है और कर्मवाच्य या भाववाच्य में कर्ता में। जैसे—कन्दुकेन क्रीडति। दण्डेन गच्छति। रामेण भोजनं खादितम्।

*नियम १५—(सहयुक्तेऽप्रधाने) सह, सार्धम्, साकम्, समम् (जब साथ अर्थ में हों) के साथ तृतीया होती है। जैसे—पिता के साथ घर जाता है—जनकेन सह सार्धं साकं समं वा गृहं गच्छति।

नियम १६—किम्, कार्यम्, अर्थः, प्रयोजनम् (चारों प्रयोजन अर्थ में हों तो) के साथ तृतीया होती है। जैसे—दुर्जनेन पुत्रेण किम्, किं कार्यम्, कः अर्थः, किं प्रयोजनम् (दुर्जन पुत्र से क्या लाभ या क्या प्रयोजन ?)।

अभ्यास ८

१. उदाहरण-वाक्य :— १. उसे पढ़ना चाहिए (वह पढ़े)—सः पठेत्। २. तुझे भोजन खाना चाहिए—त्वं भोजनं खादेः। ३. मुझे जाना चाहिए—अहं गच्छेयम्। ४. त्वं दुर्जनेन सह न तिष्ठेः। ५. स दण्डेन क्रीडेत्। ६. यतिना सह कविः तिष्ठति। ७. दुर्जनेन कोऽर्थः, किं कार्यम्, किं प्रयोजनम्। ८. रविः दीव्यति। ९. बालिका नृत्यति। १०. गृहं नश्यति। ११. छात्रः भ्राम्यति।

२. संस्कृत बनाओ :— (क) १. उसे पढ़ना चाहिए। २. उसे हँसना चाहिए। ३. उसे यहाँ आना चाहिए। ४. उसे वहाँ नहीं जाना चाहिए। ५. उसे गेंद से खेलना चाहिए। ६. उसे पिता के साथ घूमना चाहिए। ७. कन्या को नाचना चाहिए। (ख) ८. तुझे पत्र लिखना चाहिए। ९. तुझे भोजन खाना चाहिए। १०. तुझे जल पीना चाहिए। ११. तू मुनि को देख। १२. तू हरि के साथ खेल। (ग) १३. मैं प्रश्न पूछूँ। १४. मैं पत्र लिखूँ। १५. मुझे पुस्तक पढ़नी चाहिए। १६. मैं फल चाहूँ। १७. मैं बन्दर के साथ खेलूँ। १८. मैं सूर्य को देखूँ। (घ) १९. सूर्य चमका। २०. बालिका नाची। २१. गाँव नष्ट हुआ। २२. गुरु शिष्य के साथ घूमता है। २३. दुर्जन शिष्य से क्या लाभ? २४. राजा सेनापति के साथ यहाँ आया। २५. पहाड़ पर बन्दर खेल रहे हैं।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	स जनकस्य सह भ्राम्येत्।	स जनकेन सह भ्राम्येत्।	१५
(२)	दुर्जनात् शिष्यात् कोऽर्थः।	दुर्जनेन शिष्येण कोऽर्थः।	१६
(३)	० सेनापतेः सह०।	० सेनापतिना सह०।	१५

४. अभ्यास—(क) २ (क) (ख) (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) २ (क) (ख) (ग) को लोट् और लङ् में बदलो। (ग) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—हरि, मुनि, कवि, कपि, भूपति। (घ) इन धातुओं के विधिलिङ् के रूप लिखो—भू, पठ्, लिख्, गम्, दृश्, स्था, पा, खाद्, दिव्, नृत्, नश्।

५. वाक्य बनाओ :—कन्दुकेन, सह, सार्धम्, कोऽर्थः, पठेत्, खादेयम्।

६. रिक्त स्थान भरो :—(विधिलिङ्) १. स पुस्तकं (पठ्)। २. त्वं पत्रं (लिख्)। ३. त्वं जनकेन सह (गम्)। ४. त्वं रविं (दृश्)। ५. कपिः (नृत्)।

शब्दकोष १६०+२०=१८०] अभ्यास ९ (व्याकरण)

(क) गुरुः (गुरु), शिशुः (बालक), भानुः (सूर्य), इन्दुः (चन्द्रमा), शत्रुः (शत्रु), पशुः (पशु), तरुः (वृक्ष), साधुः (सज्जन, सरल, चतुर), वायुः (हवा)। काणः (काणा), कर्णः (कान), बधिरः (बहरा), विवादः (विवाद)। नेत्रम् (आँख), सुखम् (सुख), दुःखम् (दुःख), हसितम् (हँसना)। (१७)। (ख) वस् (रहना), जीव् (जीना)। (२)। (ग) अलम् (बस) (१)

सूचना—(क) गुरु—वायु, गुरुवत्। (ख) वस्—जीव्, भवतिवत्।

व्याकरण (गुरु, लृट्, तृतीया)

१. गुरु शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द-संख्या ३)। संक्षिप्त रूप लगाकर शिशु आदि के रूप बनाओ। नियम १० इन शब्दों में लगेगा—गुरु, शत्रु, तरु। जैसे—गुरुणा, गुरूणाम्। शत्रुणा, शत्रूणाम्।

२. भू-लृट् (भविष्यत्) संक्षिप्त रूप

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र०पु०	(इ) स्यति	(इ) स्यतः	(इ)स्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म०पु०	(इ)स्यसि	(इ)स्यथः	(इ)स्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ०पु०	(इ)स्यामि	(इ)स्यावः	(इ)स्यामः

*सूचना—(क) इन पूर्वोक्त धातुओं में 'इष्यति' आदि लगाकर रूप बनावें:— भू, पठ्, गम्, रक्ष्, वद्, आगम्, कृ, खाद्, क्रीड्, पत्, स्मृ, हृ, इष्, लिख्, चुर्, चिन्त्, कथ्, भक्ष्, रच्, दिव्, नृत्, नश्, भ्रम्। जैसे—पठिष्यति, गमिष्यति।

(ख) इनमें 'स्यति' आदि लगावें:—पच्, नम्, दृश्, स्था, पा, घ्रा, सद्, जि, नी, तुद्, स्पृश्, प्रच्छ्, विश्, वस्। जैसे, स्थास्यति, पास्यति।

इन धातुओं के क्रमशः लृट् के रूप उदाहरण-वाक्यों में देखो।

*नियम १७—अलम् (बस, मत) के साथ तृतीया होती है। जैसे—झगड़ा मत करो—अलं विवादेन। मत हँसो—अलं हसितेन।

*नियम १८—(येनाङ्गविकारः) शरीर के जिस अंग में विकार से विकृत दिखाई पड़े, उसमें तृतीया होती है। जैसे—नेत्रेण काणः (एक आँख से काणा)।

*नियम १९—प्रकृति आदि क्रियाविशेषण शब्दों में तृतीया होती है। जैसे—स्वभाव से सरल—प्रकृत्या साधुः। सुखेन जीवति। दुःखेन जीवति।

अभ्यास ९

१. उदाहरण-वाक्य :—१. वह पढ़ेगा—स पठिष्यति। २. तू पढ़ेगा—त्वं पठिष्यसि। ३. मैं पढ़ूँगा—अहं पठिष्यामि। ४. स गृहं गमिष्यति, हसिष्यति, बालकं रक्षिष्यति, वदिष्यति, अत्र आगमिष्यति, कार्यं करिष्यति, भोजनं खादिष्यति, क्रीडिष्यति, पतिष्यति, स्मरिष्यति, हरिष्यति, एषिष्यति, लेखिष्यति, चोरयिष्यति, चिन्तयिष्यति, कथयिष्यति, भक्षयिष्यति, रचयिष्यति, देविष्यति, नर्तिष्यति, नशिष्यति, भ्रमिष्यति च। ५. स भोजनं पक्ष्यति, गुरुं नंस्यति, पुत्रं द्रक्ष्यति, स्थास्यति, जलं पास्यति, पुष्पं घ्रास्यति, सत्स्यति, शत्रुं जेष्यति, पुस्तकं नेष्यति, दुर्जनं तोत्स्यति, पुष्पं स्प्रक्ष्यति, प्रश्नं प्रक्ष्यति, गृहं प्रवेक्ष्यति, अत्र वत्स्यति च।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. वह पुस्तक पढ़ेगा। २. वह गाँव को जाएगा। ३. वह हँसेगा। ४. वह बालक की रक्षा करेगा। ५. वह बोलेगा। ६. वह घर आएगा। ७. वह काम करेगा। ८. वह फल खाएगा। ९. वह खेलेगा। १०. पत्ता गिरेगा। (ख) ११. तू ईश्वर को स्मरण करेगा। १२. तू धन नहीं हरेगा। १३. तू चाहेगा। १४. तू पत्र लिखेगा। १५. तू धन नहीं चुराएगा। १६. तू सोचेगा। १७. तू कथा कहेगा। १८. तू फल खाएगा। १९. तू पुस्तक बनाएगा। २०. तू नाचेगा। (ग) २१. मैं भ्रमण करूँगा। २२. मैं भोजन पकाऊँगा। २३. मैं पिता को नमस्कार करूँगा। २४. मैं चन्द्रमा को देखूँगा। २५. मैं यहाँ रुकूँगा। २६. मैं जल पीऊँगा। २७. मैं शत्रु को जीतूँगा। (घ) २८. विवाद मत करो। २९. मत हँसो। ३०. वह आँख से काणा है। ३१. वह कान से बहरा है। ३२. वह स्वभाव से सरल है। ३३. वह सुख से रहता है। ३४. वह दुःख से रहता है।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	अलं विवादस्य।	अलं विवादेन।	१७
(२)	कर्णस्य बधिरः।	कर्णेन बधिरः।	१८

४. अभ्यास—(क) २ (क) (ख) (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) इन शब्दों के रूप लिखो—गुरु, शिशु, भानु, शत्रु, वायु। (ग) इनके लृट् के रूप लिखो—भू, पठ्, गम्, वद्, कृ, खाद्, हृ, लिख्, दृश्, स्था, पा, जि।

शब्दकोष १८०+२०=२००] अभ्यास १० (व्याकरण)

(क) सर्व (सब), तत् (वह), यत् (जो), एतत् (यह), किम् (कौन) (सर्वनाम)। ब्राह्मणः (ब्राह्मण), क्षत्रियः (क्षत्रिय), वैश्यः (वैश्य), शूद्रः (शूद्र), वर्णः (वर्ण), पाठः (पाठ), लेखः (लेख), मोदकम् (लड्डू), दुग्धम् (दूध)। (१४)। (ख) अस् (होना), दा (यच्छ्) (देना), धाव् (दौड़ना), चल् (चलना), रुच् (अच्छा लगना)। (४)। (ग) नमः (नमस्कार), स्वस्ति (आशीर्वाद)। (२)।

व्याकरण (सर्वनाम पुंलिंग, अस् धातु, चतुर्थी)

सूचना—(क) सर्व—किम्, सर्ववत्। (ख) यच्छ्—चल्, भवतिवत्।

१. सर्व शब्द के पुंलिंग के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द-संख्या ३४क)।

सूचना—तत्, यत्, एतत् और किम् के रूप पुंलिंग में सर्व के तुल्य चलते हैं। इनका क्रमशः त, य, एत और क रूप रहता है, इनके ही रूप चलेंगे। तत् और एतत् का प्रथमा एक० में क्रमशः सः, एषः रूप बनता है। जैसे—सः तौ ते। यः यौ ये। एषः एतौ एते। कः कौ के इत्यादि।

२. अस् धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २३)।

३. दा (यच्छ्) के रूप भवति के तुल्य चलेंगे, परन्तु लृट् में दास्यति होगा। जैसे—यच्छति, यच्छतु आदि। रुच् का लट् में रोचते रूप होता है।

*नियम २०—सर्वनाम और विशेषण शब्दों का वही लिंग, विभक्ति और वचन होता है, जो विशेष्य का होता है। जैसे—सः बालकः, तं बालकम्, तेन बालकेन। कः मनुष्यः, यः मनुष्यः, एषः मनुष्यः।

*नियम २१—संप्रदान कारक (दान देना आदि) में चतुर्थी होती है। जैसे—ब्राह्मणाय धनं यच्छति ददाति वा। बालकाय पुस्तकं ददाति।

*नियम २२—नमः और स्वस्ति के साथ चतुर्थी होती है। जैसे—गुरवे नमः। जनकाय नमः। पुत्राय स्वस्ति। शिष्याय स्वस्ति।

*नियम २३—रुच् (अच्छा लगना) अर्थ की धातुओं के साथ चतुर्थी होती है। जैसे—शिष्याय मोदकं रोचते। पुत्राय दुग्धं रोचते।

अभ्यास १०

१. उदाहरण-वाक्य :—१. वह किस ब्राह्मण को धन देता है—स कस्मै ब्राह्मणाय धनं यच्छति। २. स तस्मै ब्राह्मणाय धनं ददाति। ३. गुरु को नमस्कार—गुरवे नमः। ४. पुत्र को आशीर्वाद—पुत्राय स्वस्ति। ५. पुत्र को फल अच्छा लगता है—पुत्राय फलं रोचते। ६. सर्वे छात्राः अत्र सन्ति। ७. ये छात्राः अत्र सन्ति, ते सर्वे धावन्तु। ८. एषः वालकः चलति। ९. चत्वारः वर्णाः सन्ति। १०. सः अस्तु, त्वम् एधि, अहम् असानि। ११. सः अत्र आसीत्, त्वम् आसीः, अहम् आसम्।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. वह इस ब्राह्मण को धन देता है। २. वह उस वालक को पुस्तक देता है। ३. वह पुत्र को लड्डू देता है। ४. वह किस शिष्य को फल देता है? ५. वह इस शिष्य को फल देता है। ६. उस गुरु को नमस्कार। ७. इस शिष्य को आशीर्वाद। ८. किस वालक को फल अच्छा लगता है? ९. पुत्र को लड्डू अच्छा लगता है। १०. गुरु सारे शिष्यों को फल देता है। (ख) ११. चार वर्ण हैं, ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र। १२. वह वालक पाठ पढ़ता है। १३. वह शिष्य लेख लिखता है। १४. वह शिशु चलता है। १५. यह क्षत्रिय दौड़ता है। (ग) १६. वह है। १७. तू है। १८. मैं यहाँ हूँ। १९. वह वहाँ होवे। २०. तू यहाँ हो। २१. मैं यहीं होऊँ। २२. वह यहाँ था। २३. तू कहाँ था। २४. मैं यहाँ ही था।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	एतं ब्राह्मणं धनं ददाति।	एतस्मै ब्राह्मणाय०।	२०,२१
(२)	कं वालकं फलं रोचते।	कस्मै वालकाय०।	२०,२३
(३)	गुरुं नमः। शिष्यं स्वस्ति।	गुरवे नमः। शिष्याय०।	२२

४. अभ्यास :—(क) २ (क) को वहुवचन में वदलो। (ख) २ (ग) को वहुवचन वनाओ। (ग) सर्व, तत्, यत्, एतत्, किम् के पुंलिग के रूप लिखो। (घ) अस् धातु के लट्, लोट्, लङ् के पूरे रूप लिखो।

५. वाक्य बनाओ :—यच्छति, ददाति, रोचते, नमः, स्वस्ति, आसीत्।

६. रिक्त स्थान भरो :—१. स......फलं यच्छति। २. स पुत्राय......। ३. ......नमः। ४. ......स्वस्ति। ५. ......आसीत्। ६. .....दुग्धं रोचते।

शब्दकोष २००+२०=२२०] **अभ्यास ११** (व्याकरण)

(क) मूर्खः (मूर्ख), चोरः (चोर), मोक्षः (मोक्ष)। स्नानम् (स्नान) पठनम् (पढ़ना), भक्षणम् (खाना)। (६)। (ख) क्रुध् (क्रोध करना), कुप् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना), असूय (दोष निकालना), निवेदि (निवेदन करना), उपदिश् (उपदेश देना), क्रन्द् (रोना)। (८)। (ग) अर्थम् (लिए), कृते (लिए)। (२)। (घ) सुन्दर (सुन्दर), शोभन (अच्छा), समीचीन (अच्छा), मधुर (मीठा)। (४)

सूचना—(क) मूर्ख—मोक्ष, रामवत्। स्नान—भक्षण, गृहवत्।

व्याकरण (सर्वनाम नपुंसक, अस् धातु, चतुर्थी)

१. सर्व शब्द के नपुंसक लिंग के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ३४ ख)। तत् यत् एतत् और किम् के रूप नपुंसक लिंग में सर्व के तुल्य चलेंगे। इन सबके रूप तृतीया से सप्तमी तक पुंलिंगवत् चलेंगे। प्रथमा और द्वितीया में अम् ए आनि लगेगा। तत् आदि के प्रथमा और द्वितीया एकवचन में तत्, यत्, एतत्, किम् ही रूप रहेंगे।

२. अस् धातु के विधिलिङ् और लृट् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २३) अस् को लृट् में भू होता है। अतः भविष्यति आदि रूप बनेंगे।

३. क्रुध् आदि के ये रूप बनाकर भू के तुल्य रूप चलेंगे :—क्रुध्यति, कुप्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति, निवेदयति, उपदिशति, क्रन्दति।

*नियम २४—(क्रुधद्रुहेर्ष्या०) क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय अर्थ की धातुओं के साथ जिस पर क्रोध किया जाय, उसमें चतुर्थी होती है। रामः मूर्खाय (राम मूर्ख पर) क्रुध्यति, कुप्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति।

*नियम २५—कथ्, निवेदय, उपदिश् धातुओं के साथ चतुर्थी होती है। जैसे—शिष्याय (शिष्य को) कथयति, निवेदयति, उपदिशति।

नियम २६—जिस प्रयोजन के लिए जो वस्तु या क्रिया होती है, उसमें चतुर्थी होती है। मोक्षाय हरिं नमति। शिशुः दुग्धाय क्रन्दति।

नियम २७—चतुर्थी के अर्थ में अर्थम् और कृते अव्ययों का प्रयोग होता है। अर्थम् शब्द के साथ मिल जाता है। कृते के साथ षष्ठी होती है। जैसे—पठनार्थम्, स्नानार्थम्। भोजनस्य कृते (भोजन के लिए)।

अभ्यास ११

१. उदाहरण-वाक्य :—१. कृष्णः तस्मै दुर्जनाय (उस दुर्जन पर) क्रुध्यति, कुप्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति वा। २. शिष्यः तस्मै गुरवे कथयति। ३. पुत्रः जनकाय निवेदयति। ४. गुरुः शिष्याय उपदिशति। ५. ज्ञानाय गुरुं नमति। ६. स स्नानार्थं गच्छति। ७. त्वं भोजनस्य कृते अत्र आगच्छ। ८. तत् फलं, तानि पुस्तकानि च अत्र सन्ति। ९. तानि पुष्पाणि सुन्दराणि शोभनानि च सन्ति। १०. सः अत्र स्यात्, त्वं स्याः, अहं स्याम्।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. राम चोर पर क्रोध करता है। २. चोर सज्जन से द्रोह करता है। ३. मूर्ख विद्वान् से ईर्ष्या करता है। ४. दुर्जन सज्जन के दोष निकालता है। ५. सेनापति उस राजा से कहता है। ६. बालक उस गुरु से निवेदन करता है। ७. मुनि बालक को उपदेश देता है। ८. वह मोक्ष के लिए विद्या पढ़ता है। ९. वह नहाने के लिए वहाँ जाता है। १०. वह पढ़ने के लिए विद्यालय को जाता है। ११. वह खाने के लिए फल चाहता है। १२. बालक दूध के लिए रोता है। (ख) १३. वे पुस्तकें सुन्दर हैं। १४. वे फल मधुर हैं। १५. वे फूल अच्छे हैं। १६. वह कार्य अच्छा है। १७. जो कार्य अच्छा है, वह करो (कुरु)। १८. कौन से फल मीठे हैं? (ग) १९. वह घर पर होवे। २०. तू वहाँ होना। २१. मैं यहाँ होऊँ। २२. वह वहाँ होगा। २३. तू कहाँ होगा? २४. मैं यहाँ होऊँगा।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	चोरः सज्जनात् द्रुह्यति।	चोरः सज्जनाय द्रुह्यति।	२४
(२)	तं नृपं कथयति।	तस्मै नृपाय कथयति।	२५,२०
(३)	ते पुस्तकानि सुन्दराः०।	तानि पुस्तकानि सुन्दराणि।	२०

४. अभ्यास :—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) अस् धातु के विधिलिङ् और लृट् के रूप लिखो। (ग) सर्व, तत्, यत्, एतत्, किम् के नपुंसक लिंग के रूप लिखो।

५. वाक्य बनाओ :—क्रुध्यति, द्रुह्यति, कथयति, अर्थम्, कृते, स्याम्।

६. रिक्त-स्थान भरो :—१. हरिः ...क्रुध्यति। २. मूर्खः.....असूयति। ३. स.....कथयति। ४. भोजनस्य कृते........। ५. तानि फलानि......सन्ति।

शब्दकोष २२०+२०=२४०] **अभ्यास १२** (व्याकरण)

(क) वृक्षः (वृक्ष), अश्वः (घोड़ा), प्रासादः (महल), यवः (जौ), क्षेत्रपालकः (खेत का रक्षक)। क्षेत्रम् (खेत)। (६)। (ख) भी (डरना), त्रै (रक्षा करना), आनी (लाना), वृ (हटाना), अधि+इ (पढ़ना)। (५)। (ग) अतः (इसलिए), अथवा (अथवा), वा (अथवा), यदि (यदि), सर्वत्र (सब जगह), सदा (सदा), सर्वदा (सदा), अन्यत्र (और जगह), अवश्यम् (अवश्य)। (९)

सूचना—(क) वृक्ष—क्षेत्रपालक, रामवत्।

व्याकरण (सर्वनाम स्त्रीलिंग, कृ धातु, पंचमी)

१. सर्व शब्द के स्त्रीलिंग के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ३४ ग)। तत् यत् एतत् और किम् के रूप स्त्रीलिंग में सर्वा के तुल्य चलेंगे। इनके क्रमशः ता या एता और का शब्द बनते हैं, इनके ही रूप चलेंगे। ता और एता के प्रथमा एक० में सा और एषा रूप होते हैं। शेष सर्वावत्।

२. कृ धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३६)।

३. भी आदि के क्रमशः ये रूप बनते हैं—बिभेति, त्रायते, आनयति (भवति-वत्), वारयति, अधीते।

*नियम २८—अपादान कारक में पंचमी होती है। जैसे—पेड़ से पत्ता गिरता है—वृक्षात् पत्रं पतति। अश्वात् मनुष्यः पतति।

नियम २९—(भीत्रार्थानां भयहेतुः) भय और रक्षा अर्थ की धातुओं के साथ भय के कारण में पंचमी होती है। जैसे—चोराद् बिभेति। चोरात् त्रायते।

*नियम ३०—जिससे विद्या पढ़ी जाए, उसमें पंचमी होती है। जैसे—गुरोः पठति। उपाध्यायात् अधीते।

नियम ३१—जिस वस्तु से किसी को हटाया जाए, उसमें पंचमी होती है। क्षेत्र-पालकः यवेभ्यः पशुं वारयति निवारयति वा।

अभ्यास १२

१. उदाहरण-वाक्य :—१. प्रासादात् वालकः पतति । २. तस्याः लतायाः एतत् पुष्पं पतति । ३. वालकः दुर्जनात् विभेति । ४. सज्जनः तां वालिकां चोरात् त्रायते । ५. क्षेत्रपालकः क्षत्रात् पशुं वारयति । ६. एतां लतां पश्य । ७. कां कन्यां पश्यसि ? ८. तस्यै वालिकायै फलं यच्छ । ९. सः कार्यं करोतु, त्वं कुरु, अहं करवाणि । १०. सः कार्यम् अकरोत्, त्वम् अकरोः, अहम् अकरवम् ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. वृक्ष से पत्ते गिरते हैं । २. घोड़े से वालक गिरा । ३. गाँव से वालक आता है । ४. वह वालिका घर से पुस्तक लाती है । ५. शिष्य गुरु से डरता है । ६. राजा वालक को चोर से वचाता है । ७. वह वालक गुरु से पढ़ता है । ८. वह मुनि से विद्या पढ़ता है । ९. क्षेत्रपाल खेत से पशु को हटाता है । १०. महल से पुत्र गिरा । **(ख)** ११. उस लता को देखो । १२. इस कन्या को फल दो । १३. इस लता से यह फूल गिरा । १४. सारी कथा कहो । १५. किस कन्या को पूछते हो ? **(ग)** १६. वह काम करता है । १७. तू भोजन करता है । १८. मैं स्नान करता हूँ । १९. वह काम करे । २०. तू भी सदा काम कर । २१. मैं अवश्य काम करूँ । २२. उसने और जगह काम किया । २३. तूने काम किया । २४. मैंने काम किया ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अश्वेन वालकः अपतत्	अश्वात् वालकः अपतत् ।	२८
(२) सः गुरुणा पठति ।	स गुरोः पठति ।	३०
(३) तं कन्यां फलं यच्छ ।	तस्यै कन्यायै फलं यच्छ ।	२०, २१

४. अभ्यास :—(क) २ (ग) को वहुवचन में वदलो । **(ख)** कृ धातु के लट्, लोट्, लङ के पूरे रूप लिखो । **(ग)** सर्व, तत्, यत्, एतत्, किम् के स्त्रीलिंग के रूप लिखो ।

५. वाक्य बनाओ :—पतति, विभेति, त्रायते, वारयति, अधीते, अन्यत्र ।

६. रिक्त स्थान भरो :—१. वृक्षात् पत्रं. . . . .। २. बालकः. . . . . विभेति । ३. चोरात्. . . .। ४. यवेभ्यः पशुं. . . .। ५. तस्याः कन्यायाः पुस्तकम्. . . . .।

शब्दकोष २४०+२०=२६०] **अभ्यास १३** (व्याकरण)

(क) युष्मद् (तू) (सर्वनाम)। अङ्कुरः (अंकुर), प्रजा (प्रजा), वीजम् (वीज)। (४)। (ख) उद्भू (निकलना), प्रभू (१. उत्पन्न होना, २. समर्थ होना), जन् (उत्पन्न होना), नि+ली (छिपना)। (४)। (ग) अति (अधिक), इव (तुल्य), चेत् (यदि), नोचेत् (नहीं तो)। (४)। (घ) पटु (चतुर), पटुतर (उससे चतुर), गुरु (१. भारी, २. श्रेष्ठ), गुरुतर (उससे भारी या अच्छा), दूर (दूर), समीप (पास), पार्श्व (समीप), निकट (समीप)। (८)।

व्याकरण (युष्मद्, कृ धातु, पंचमी)

१. युष्मद् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ३९)

२. कृ धातु के विधिलिङ्ग और लृट् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३६)।

३. उद्भू आदि धातुओं के क्रमशः ये रूप होते हैं :—उद्भवति (भवतिवत्), प्रभवति (भवतिवत्), जायते, निलीयते।

*नियम ३२—उद्भवति, प्रभवति, उद्गच्छति, जायते (ये जब उत्पन्न होना या निकलना अर्थ में हों), निलीयते के साथ पंचमी होती है। जैसे—प्रजापति से संसार उत्पन्न होता है—प्रजापतेः लोकः जायते, उद्भवति वा। हिमालयात् गङ्गा उद्भवति, प्रभवति, उद्गच्छति वा। भार्यायाः पुत्रः जायते। वीजेभ्यः अंकुराः जायन्ते। नृपात् चोरः निलीयते।

*नियम ३३—तुलना में जिससे तुलना की जाती है, उसमें पंचमी होती है। जैसे—राम से कृष्ण अधिक चतुर है—रामात् कृष्णः पटुतरः। धन से ज्ञान अधिक अच्छा है—धनात् ज्ञानं गुरुतरम्। दुर्जनात् सज्जनः गुरुतरः। असत्यात् सत्यं गुरुतरम्।

नियम ३४—दूर और समीपवाची शब्दों में पंचमी, द्वितीया और तृतीया तीनों विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—गाँव से दूर—ग्रामाद् दूरम्। जनकस्य समीपम्, समीपात्, समीपेन वा। पिता के पास से आता हूँ—जनकस्य समीपात् पार्श्वात् निकटात् वा आगच्छामि।

अभ्यास १३

१. उदाहरण-वाक्य :—१. वीजेभ्यः अंकुराः जायन्ते। २. रमायाः उमा पटुतरा। ३. अहं दूरात् आगच्छामि। ४. रामः कृष्ण इव अति पटुः गुरुः च अस्ति। ५. तुम पढ़ते हो तो पढ़ो, नहीं तो यहाँ से हट जाओ—त्वं पठसि चेत् पठ, नो चेत् इतः दूरं गच्छ। ६. त्वं पठसि, यूयं पठथ। ७. त्वां पश्यामि, युष्मान् वदामि। ८. त्वया सह कः एषः अस्ति। ९. तुभ्यं युष्मभ्यं वा किं रोचते। १०. तव गृहं कुत्र अस्ति। ११. सः एतत् कार्यं कुर्यात्, त्वं कुर्याः, अहं कुर्याम्। १२. स भोजनं करिष्यति।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. वीजों से अंकुर उत्पन्न होते हैं। २. प्रजापति से प्रजा उत्पन्न होती है। ३. हिमालय से गंगा निकलती है। ४. सेनापति से चोर छिपता है। ५. देवदत्त से यज्ञदत्त अधिक चतुर है। ६. धन से विद्या अधिक अच्छी है। ७. मैं गुरु के पास से यहाँ आ रहा हूँ। ८. वह वहुत दूर से आ रहा है। ९. देवदत्त कृष्ण की तरह वहुत चतुर और श्रेष्ठ हैं। १०. तुम पत्र लिखते हो तो लिखो, नहीं तो यहाँ से हटो। (ख) ११. तू यहाँ आया। १२. मैं तुझको देखता हूँ। १३. तेरे साथ वहाँ कौन है ? १४. तुझे फल अच्छा लगता है या लड्डू ? १५. तेरी पुस्तक कहाँ है ? (ग) १६. वह काम करे। १७. तू काम कर। १८. मैं भोजन करूँ। १९. वह काम करेगा। २०. तू भोजन करेगा। २१. मैं स्नान करूँगा।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) सेनापतिना चोरः निलीयते।	सेनापतेः चोरः ०।	३२
(२) धनेन विद्या गुरुः।	धनात् विद्या गुरुतरा।	३३, २०
(३) करेत्, करेः, करेयम्।	कुर्यात्, कुर्याः, कुर्याम्।	धातुरूप

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को द्विवचन और वहुवचन में बदलो। (ख) २ (ग) को वहुवचन में बदलो। (ग) युष्मद् शब्द के पूरे रूप लिखो। (घ) कृ धातु के विधिलिङ् और लृट् के रूप लिखो।

५. वाक्य बनाओ :—जायते, उद्भवति, उद्गच्छति, निलीयते, त्वया, तुभ्यम्, त्वत्, कुर्यात्, कुर्याः, कुर्याम्, करिष्यति, करिष्यामि।

शब्दकोष २६०+२०=२८०] **अभ्यास १४** (व्याकरण)

(क) अस्मद् (मैं) (सर्वनाम)। छात्रः (विद्यार्थी), अन्नम् (अन्न), निमित्तम्, कारणम्, हेतुः (तीनों का अर्थ है 'कारण')। (६)। (ग) स्म (भूतकालबोधक अव्यय), उपरि (ऊपर), अधः (नीचे), नीचैः (नीचे), पुरः (सामन), पश्चात् (पीछे), अग्रे (आगे), अग्रतः (आगे), यावत् (१. जितना, २. जबतक), तावत् (१. उतना, २. तबतक), इयत् (इतना), कियत् (कितना)। (१२)। (घ) श्रेष्ठ (श्रष्ठ), पटुतम (सब से चतुर)। (२)।

व्याकरण (अस्मद्, षष्ठी विभक्ति)

१. अस्मद् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ४०)।

नियम ३५—धातु के लट् लकार वाले रूप के साथ 'स्म' अव्यय लगाने से भूतकाल का अर्थ हो जाता है। जैसे—वह पढ़ता था—स पठति स्म।

* **नियम ३६**—सम्बन्धकारक के अर्थ में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—रामस्य पुस्तकम्। कृष्णस्य गृहम्। गंगायाः जलम्। वृक्षस्य पत्रम्।

नियम ३७—हेतु शब्द के साथ षष्ठी होती है। जैसे—अध्ययन के हेतु रहता है—अध्ययनस्य हेतोः वसति। धनस्य हेतोः पठति।

नियम ३८—निमित्त अर्थवाले शब्दों (निमित्त, हेतु, कारण, प्रयोजन) के साथ प्रायः सभी विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—किसलिए पढ़ता है—किं निमित्तं पठति, केन निमित्तेन, कस्मै निमित्ताय, कस्य हेतोः, कस्मात् कारणात्, केन प्रयोजनेन वा।

***नियम ३९**—स्मरण अर्थ की धातुओं के साथ (खेदपूर्वक स्मरण में) कर्म में षष्ठी होती है। जैसे—मातुः स्मरति (माता को खेदपूर्वक स्मरण करता है)।

***नियम ४०**—बहुतों में से एक को छाँटने अर्थ में, जिससे छाँटा जाए, उसमें षष्ठी और सप्तमी दोनों होती हैं। छात्रों में राम श्रेष्ठ है—छात्राणां छात्रेषु वा रामः श्रेष्ठः। बालकानां बालकेषु वा कृष्णः पटुतमः।

नियम ४१—उपरि, अधः, नीचैः, पुरः, पश्चात्, अग्रे, अग्रतः के साथ षष्ठी होती है। जैसे—गृहस्य उपरि, अधः, पुरः, पश्चात्, अग्रे वा।

अभ्यास १४

१. उदाहरण-वाक्य :—१. यह राम का घर है—एतत् रामस्य गृहम् अस्ति। २. भोजनस्य हेतोः आगच्छ। ३. कस्मात् कारणात् हससि? ४. बालकः जनकस्य स्मरति। ५. शिष्याणां रामः श्रेष्ठः पटुतमः च अस्ति। ६. गृहस्य उपरि, पुरः, पश्चात् च के सन्ति? ७. अहं पठामि। ८. मां पश्य। ९. मया सह रामः अस्ति। १०. मह्यं मोदकं रोचते। ११. मम एतत् पुस्तकम् अस्ति। १२. मयि क्षमा सत्यं च स्तः। १३. यावत् इच्छसि तावत् भक्षय। १४. यावत् गुरुः अत्र अस्ति, तावत् अत्र एव तिष्ठ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. यह राम की पुस्तक है। २. यह सुशीला का घर है। ३. गंगा का जल मधुर है। ४. वृक्ष के पत्ते लाओ। ५. मैं यहाँ अध्ययन के हेतु रहता हूँ। ६. धन के हेतु विद्या पढ़ो। ७. किस लिए विद्यालय को जाते हो? ८. किस कारण से तुम पाठशाला नहीं आए? ९. बालक माता को स्मरण करता है। १०. छात्रों में कृष्ण श्रेष्ठ और सबसे चतुर है। ११. कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है। १२. घर के ऊपर, सामने और पीछे बालक हैं। १३. जितना चाहो उतना पढ़ो। १४. जबतक गुरु नहीं कहते हैं, तबतक यहाँ से न जाओ। १५. तुम कितना धन चाहते हो? १६. मैं इतना धन चाहता हूँ। (ख) १७. मुझको देखो। १८. मेरे साथ रमा यहाँ आई। १९. मुझको फल अच्छे लगते हैं। २०. मेरा घर यह है। २१. मुझमें सत्य और विद्या हैं।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	अध्ययनेन हेतुना वसामि।	अध्ययनस्य हेतोः ०।	३७
(२)	मातरं स्मरति।	मातुः स्मरति।	३९
(३)	कविभ्यः कालिदासः श्रेष्ठतमः।	कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।	४०

अभ्यास :—(क) २ (ख) को द्विवचन और बहुवचन में बदलो। (ख) अस्मद् शब्द के पूरे रूप लिखो।

५. वाक्य बनाओ :—अस्मान्, अस्मभ्यम्, अस्मत्, अस्माकम्, अस्मासु, हेतोः, श्रेष्ठः, पटतमः, यावत्, कियत्, इयत्।

शब्दकोष २८०+२०=३००]		अभ्यास १५		(व्याकरण)

(क) कर्तृ (करनेवाला), हर्तृ (हरनेवाला), धर्तृ (धर्ता), श्रोतृ (श्रोता), वक्तृ (वक्ता), गन्तृ (जानेवाला), द्रष्टृ (देखनेवाला), नेतृ (नेता), दातृ (दाता), भोक्तृ (खानेवाला)। गमनम् (जाना), शयनम् (सोना), दानम् (देना), भाषणम् (भाषण, बोलना), भद्रम् (कुशल), कुशलम् (कुशल) (१६)। (ग) समक्षम् (सामने), मध्ये (बीच में), अन्तः (अन्दर), अन्तरे (अन्दर)। (४)

सूचना—(क) कर्तृ—भोक्तृ, कर्तृवत्। गमन—भाषण, गृहवत्।

व्याकरण (कर्तृ, षष्ठी विभक्ति)

१. कर्तृ शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ४)। हर्तृ आदि के रूप कर्तृ शब्द के तुल्य चलेंगे।

नियम ४२—कृत् प्रत्यय (धातु के अन्त में तृ, ति, अ, अन आदि) लगाकर बने हुए शब्दों के कर्ता और कर्म में षष्ठी होती है। जैसे—बालक का जाना—बालकस्य गमनम्। इसी प्रकार बालकस्य शयनम्। धनस्य दानम्। पुस्तकस्य पठनम्। कार्यस्य कर्ता। धनस्य हर्ता। भाषणस्य श्रोता। धनस्य दाता। नराणां नेता।

नियम ४३—कृते (लिए), समक्षम्, मध्ये, अन्तः, अन्तरे के साथ षष्ठी होती है। जैसे—भोजन के लिए—भोजनस्य कृते। घर के सामने, मध्य में या अन्दर—गृहस्य समक्षम्, मध्ये, अन्तः वा।

नियम ४४—दूर और समीपवाची शब्दों के साथ षष्ठी और पंचमी दोनों होती हैं। जैसे—गाँव से दूर—ग्रामस्य ग्रामाद् वा दूरम्। पिता के समीप से—जनकस्य समीपात्। गुरोः पार्श्वात्, निकटात् वा।

नियम ४५—आशीर्वादसूचक शब्दों (भद्रम्, कुशलम्, सुखम्, शम् आदि) के साथ षष्ठी और चतुर्थी दोनों होती हैं। जैसे—राम का कुशल हो—रामस्य रामाय वा भद्रम्, कुशलम्, शं भूयात्। (भूयात्—होवे)।

अभ्यास १५

१. उदाहरण-वाक्य :—१. बच्चे का पढ़ना मुझे अच्छा लगता है—शिशोः पठनं मह्यं रोचते। २. बालकस्य गमनम्, धनस्य दानम्। ३. कार्यस्य कर्ता, धनस्य हर्ता, दण्डस्य धर्ता, भाषणस्य श्रोता, सत्यस्य वक्ता, ग्रामं गन्ता, विद्यालयस्य द्रष्टा, नराणां नेता, धनस्य दाता, भोजनस्य भोक्ता च एतस्मिन् नगरे सन्ति। ४. कार्यस्य कर्तारं धनस्य हर्तारं च अत्र आनय। ५. वक्तृभ्यः श्रोतृभ्यः नेतृभ्यः च फलानि देहि। ६. दातुः दानं पश्य।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. पुत्र का पढ़ना मुझे अच्छा लगता है। २. बालक का जाना देखो। ३. बच्चे का सोना मनोहर है। ४. पुस्तक का पढ़ना हितकर है। ५. धन का देना अच्छा है। ६. पढ़ने के लिए (कृते) यहाँ आओ। ७. मेरे सामने आओ। ८. खेत के बीच में मनुष्य खड़ा है। ९. घर के अन्दर मनुष्य है। १०. मैं पिता के समीप से यहाँ आ रहा हूँ। ११. घर से दूर भ्रमण के लिए जाओ। १२. शिष्य का कुशल हो। (ख) १३. कार्य का कर्ता यहाँ है। १४. पुस्तक का हर्ता वहाँ जाता है। १५. सत्य का धर्ता सुख से रहता है। १६. भाषण को सुननेवाला हँसता है। १७. सत्य को बोलनवाला सत्य बोलता है। १८. गाँव को जानेवाला गाँव को जाता है। १९. लता को देखने वाले को देखो। २०. नेता के साथ मनुष्य जा रहे हैं। २१. धन के दाता को ये फूल दो। २२. भोजन खानेवाले को फल और फूल दो।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) पुत्रं पठनं मम रोचते।	पुत्रस्य पठनं मह्यं रोचते।	४२,२३
(२) जनकं समीपात् आगच्छामि।	जनकस्य समीपात्०।	४४
(३) धनं दातारं फलानि यच्छ।	धनस्य दात्रे फलानि०।	४२,२१

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को बहुवचन में बदलो। (ख) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—कर्तृ, हर्तृ, श्रोतृ, वक्तृ, नेतृ, दातृ।

५. वाक्य बनाओ :—गमनम्, पठनम्, शयनम्, दानम्, भाषणम्, कर्तारः, हर्तारम्, धर्तारम्, श्रोत्रा, वक्तृभ्यः, नेतारः, दातुः, समक्षम्, कृते, कुशलम्।

शब्दकोष ३००+२०=३२०] अभ्यास १६ (व्याकरण)

(क) पितृ (पिता), भ्रातृ (भाई), जामातृ (जवाँई)। धर्मः (धर्म), प्रातः-कालः (प्रातःकाल), मध्याह्नः (दोपहर), सायंकालः (सायंकाल), दिनम् (दिन), वस्त्रम् (वस्त्र)। (९)। (ख) दह् (जलाना), ज्वल् (जलना), गै (गाना), आ+ह्वे (पुकारना, बुलाना), अभि+लष् (चाहना)। कृतः (किया), गतः (गया), आगतः (आया)। (८)। (ग) प्रातः (प्रातःकाल), सायम् (सायंकाल), नक्तम् (रात्रि)। (३)।

सूचना—(क) पितृ—जामातृ, पितृवत्। (ख) दह्—अभिलष्, भवतिवत्।

व्याकरण (पितृ, सप्तमी विभक्ति)

१. पितृ शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ५)। भ्रातृ और जामातृ के रूप पितृ के तुल्य चलेंगे।

२. दह् आदि के रूप भू के तुल्य चलेंगे। दहति, ज्वलति, गायति, आह्वयति, अभिलषति।

*नियम ४६—अधिकरण कारण में सप्तमी होती है। जैसे—विद्यालय में पढ़ता है—विद्यालये पठति। गृहे वस्त्राणि सन्ति। नगरे मनुष्याः सन्ति। (देखो नियम ४० भी)।

*नियम ४७—'विषय में, बारे में' अर्थ में तथा समय-बोधक शब्दों में सप्तमी होती है। जैसे—मोक्ष के बारे में इच्छा है—मोक्षे इच्छा अस्ति। धर्म के विषय में अभिलाषा है—धर्मे अभिलाषः अस्ति। वह प्रातःकाल यहाँ आता है—स प्रातःकाले प्रातः वा अत्र आगच्छति। स मध्याह्ने, सायंकाले सायं वा कार्यं करोति। सूचना—प्रातः, सायम्, नक्तम् के रूप नहीं चलते हैं। प्रातःकाल, सायंकाल आदि के रूप चलते हैं।

*नियम ४८—एक क्रिया के बाद दूसरी क्रिया होने पर पहली क्रिया में सप्तमी होती है। कर्तृवाच्य में कर्ता और कृदन्त में सप्तमी होगी। कर्मवाच्य में कर्म और कृदन्त में सप्तमी होगी तथा कर्ता में तृतीया। जैसे, राम के वन जाने पर भरत आए—रामे वनं गते भरतः आगतः। मेरे काम कर लेने पर गुरु आए—मया कार्ये कृते गुरुः आगतः। रामे आगते सीता अपि आगता।

अभ्यास १६

१. उदाहरणवाक्य :—१. गृहे बालकाः सन्ति। २. मम पठने अभिलाषः अस्ति। ३. प्रातःकाले सायंकाले च ईश्वरं नमत। ४. धर्मे अभिलाषं कुरु। ५. अध्ययने कृते भोजनं कुरु। ६. अग्निः गृहं दहति। ७. अग्निः गृहे ज्वलति। ८. शान्तिः गानं गायति। ९. पिता पुत्रम् आ ह्वयति १०. शिष्यः विद्याम् अभिलषति। ११. नक्तम् (रात में) अधिकं न पठ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. राम विद्यालय में पढ़ता है। २. इस कक्षा में १० बालक हैं। ३. घर में वस्त्र और पुस्तकें हैं। ४. गाँव में मनुष्य रहते हैं। ५. मेरी धर्म के विषय में इच्छा है। ६. पढ़ाई के विषय में अभिलाषा करो। ७. उसकी मोक्ष के बारे में इच्छा है। ८. प्रातःकाल और सायंकाल गुरु को प्रणाम करो। ९. दिन में पढ़ो। १०. रात्रि में अधिक न पढ़ो और न लिखो। ११. मेरे घर आने पर कृष्ण भी आया। १२. युधिष्ठिर के वन जाने पर अर्जुन भी वन को गया। (ख) १३. पिताजी आ रहे हैं। १४. पिता को देखो। १५. पिता के साथ पुत्र भी आया। १६. पिता को भोजन दो। १७. पिता से विद्या पढ़ो। १८. पिता की यह पुस्तक है। १९. भाई को बुलाओ। २०. जँवाई को फल और फूल दो। (ग) २१. आग वस्त्रों और वृक्षों को जलाती है। २२. आग जल रही। २३. बालिका गाना गा रही है। २४. गुरु शिष्य को बुलाता है। २५. वह धर्म को चाहता है।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	पठनस्य अभिलाषं कुरु।	पठने अभिलाषं कुरु।	४७
(२)	मम गृहे आगते ०।	मयि गृहम् आगते०।	४८,१३
(३)	पितुः सह पुत्रः आगतः।	पित्रा सह पुत्रः ०।	१५

४. अभ्यास :—(क) २ (ग) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् में बदलो। (ख) पितृ और भ्रातृ के पूरे रूप लिखो। (ग) इनके लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् के पूरे रूप लिखो—दह्, ज्वल्, गै, आ+ह्वे, अभि+लष्।

५. वाक्य बनाओ :—प्रातःकाले, सायंकाले, नक्तम्, अदहत्, अज्वलत्, अगायत्, आ ह्वयत्, अभ्यलषत्, कृते, गते, आगते।

शब्दकोष ३२०+२०=३४०] अभ्यास १७ (व्याकरण)

(क) भगवत् (भगवान्), भवत् (आप), श्रीमत् (श्रीमान्), बुद्धिमत् (बुद्धिमान्), धनवत् (धनवान्), बलवत् (बलवान्)। स्नेहः (स्नेह), विश्वासः (विश्वास), मृगः (हरिण), बाणः (बाण), श्रद्धा (श्रद्धा)। (११)। (ख) क्षिप् (फेंकना), मुच् (छोड़ना)। (२)। (घ) आसक्त (१. अनुरक्त, २. लगा हुआ), युक्त (लगा हुआ), लग्न (लगा हुआ), तत्पर (लगा हुआ), कुशल, निपुण, चतुर (तीनों का अर्थ है चतुर)। (७)

सूचना—(क) भगवत्—बलवत्, भगवत् के तुल्य।

व्याकरण (भगवत्, सप्तमी विभक्ति)

१. भगवत् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ८)। भवत् आदि के रूप भगवत् के तुल्य चलेंगे।

२. क्षिप् और मुच् के रूप लट् में क्षिपति, मुञ्चति हैं। इनके ये रूप बनाकर भवति के तुल्य रूप चलेंगे।

* **नियम ४९**—प्रेम, आसक्ति और आदरसूचक शब्दों और धातुओं के साथ सप्तमी होती है। जैसे—उसका मुझपर स्नेह है—तस्य मयि स्नेहः अस्ति। तस्य कन्यायां स्नेहः अस्ति। पिता पुत्रे स्नेहं करोति। रामः रमायाम् आसक्तः अस्ति। मम गुरौ आदरः अस्ति।

* **नियम ५०**—संलग्न और चतुर अर्थवाले शब्दों के साथ सप्तमी होती है। जैसे—वह पढ़ाई में संलग्न है—सः पठने लग्नः, युक्तः, तत्परः, आसक्तः वा अस्ति। राम विद्या में निपुण है—रामः विद्यायां कुशलः, निपुणः, चतुरः, पटुः, दक्षः वा अस्ति।

* **नियम ५१**—फेंकना अर्थ की धातुओं के साथ तथा विश्वास और श्रद्धा अर्थवाली धातुओं और शब्दों के साथ सप्तमी होती है। जसे—मृग पर बाण फेंकता है—मृगे बाणं क्षिपति, मुञ्चति वा। उसका धर्म पर विश्वास है—तस्य धर्मे विश्वासः श्रद्धा वा अस्ति। स धर्मे विश्वसिति। स मम वचने विश्वसिति।

अभ्यास १७

१. उदाहरण-वाक्य :—१. वुद्धिमान् शिष्येषु स्नेहं करोति। २. स धनवान् कन्यायाम् आसक्तः अस्ति। ३. अहं कार्ये लग्नः अस्मि। ४. सेनापतिः शत्रौ वाणं क्षिपति मुञ्चति वा। ५. मम भगवति श्रद्धा विश्वासः च स्तः। ६. भवान् कुतः आगच्छति? ७. श्रीमन्तं वुद्धिमन्तं च नमत। ८. धनवद्भिः वलवद्भिः च सह स वसेत्। ९. भवते नमः। १०. एतत् तस्य श्रीमतः गृहम् अस्ति। ११. भगवति विश्वासं श्रद्धां च कुरुत। १२. वुद्धिमत्सु विद्या धनवत्सु धनं च भवति।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. गुरु शिष्य पर स्नेह करता है। २. कृष्ण का उस कन्या से स्नह है। ३. राम रमा पर आसक्त है। ४. उस गुरु का शिष्यों में आदर है। ५. वह वुद्धिमान् पढ़ाई में संलग्न है। ६. कृष्ण वेद में निपुण और चतुर है। ७. मैं खेल में कुशल हूँ। ८. राजा दुर्जन पर वाण फेंकता है। ९. सेनापति मृग पर वाण छोड़ता है। १०. मेरा सत्य और धर्म पर विश्वास है। ११. तेरी भगवान् पर श्रद्धा है। १२. वह मेरे वचन पर विश्वास करता है। (ख) १३. भगवान् को नमस्कार करो। १४. आप क्या पढ़ते हैं? १५. आपके पास पढ़ने के लिए आया हूँ। १६. श्रीमान् को नमस्कार। १७. उस वुद्धिमान् को ये पुस्तकें दो। १८. यह उस धनवान् का घर है। १९. वलवान् वालक की रक्षा करता है। २०. आपमें ज्ञान, विद्या, सत्य और धर्म हैं।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	गुरुः शिष्यं स्नहं करोति।	गुरुः शिष्ये स्नेहं ०।	४९
(२)	राजा दुर्जनं वाणं क्षिपति।	राजा दुजने वाणं०।	५१
(३)	श्रीमानं नमः।	श्रीमते नमः।	२२, शब्दरूप
(४)	तस्य धनवानस्य गृहम्०।	तस्य धनवतः गृहम्०।	शब्दरूप

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को वहुवचन में वदलो। (ख) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो :—भगवत्, भवत्, श्रीमत्, वुद्धिमत्, धनवत्, वलवत्।

५. वाक्य बनाओ :—स्नहः, आसक्तः, आदरः, लग्नः, कुशलः, क्षिपति, मुञ्चति, श्रद्धा, विश्वसिति, भगवन्तम्, भवान्, धनवतः।

शब्दकोष ३४०+२०=३६०] अभ्यास १८ (व्याकरण)

(क) करिन् (हाथी), पक्षिन् (पक्षी), दण्डिन् (१. संन्यासी, २. दण्डधारी), विद्यार्थिन् (विद्यार्थी), स्वामिन् (स्वामी), मन्त्रिन् (मन्त्री), ज्ञानिन् (ज्ञानी), योगिन् (योगी), त्यागिन् (त्यागी), धनिन् (धनी)। (१०)। (ख) सेव् (सेवा करना), लभ् (पाना), वृध् (बढ़ना), मुद् (प्रसन्न होना), सह् (सहन करना), याच् (माँगना),। (६)। (ग) सकृत् (एकबार), असकृत् (बारबार), मुहुः (बार बार), पुनः (फिर) (४)

सूचना—(क) करिन्—धनिन्, करिन् के तुल्य। (ख) सेव्—याच्, सेवतेवत्।

व्याकरण (करिन्, लट्, अनुस्वार सन्धि)

१. करिन् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० १०)। पक्षिन् आदि के रूप इसी प्रकार चलाओ। नियम १० इन शब्दों में लगेगा—करिन्, पक्षिन्, मन्त्रिन्।

२. सेव्-लट् (आत्मनेपद) संक्षिप्तरूप

सेवते	सेवेते	सेवन्ते	प्र० पु०	अते	एते	अन्ते
सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे	म० पु०	असे	एथे	अध्वे
सेवे	सेवावहे	सेवामहे	उ० पु०	ए	आवहे	आमहे

संक्षिप्त रूप लगाकर लभ् आदि के रूप बनाओ। जैसे—लभते, वर्धते, मोदते, सहते, याचते।

सूचना—भ्वादिगण (१) की सभी आत्मनेपदी धातुओं के रूप सेव् के तुल्य चलेंगे।

३. सूचना—जिन धातुओं के अन्त में लट् में अति अतः अन्ति आदि लगता है, उन्हें परस्मैपदी कहते हैं और जिनके अन्त में अते एते अन्ते आदि लगता है, उन्हें आत्मनेपदी कहते हैं।

४. अभ्यास ५, ६, ७ में दिए प्रथमा, द्वितीया के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

* नियम ५२—(मोऽनुस्वारः) पद (शब्द) के अन्तिम म् के बाद कोई व्यंजन हो तो म् को अनुस्वार (ं) हो जाता है। बाद में स्वर हो तो म् नीचे रहेगा। जैसे, कार्यम्+करोति= कार्यं करोति। सत्यम्+वद=सत्यं वद। गृहम्+गच्छति=गृहं गच्छति। गृहम्+अगच्छत्=गृहमगच्छत्।

अभ्यास १८

१. उदाहरण-वाक्य :— १. वने करिणः सन्ति। २. रामः पक्षिणः पश्यति। ३. दण्डी दण्डेन सह भ्रमति। ४. विद्यार्थिनः स्वामिनः मन्त्रिणः ज्ञानिनः योगिनः त्यागिनः धनिनः च अत्र सन्ति। ५. विद्यार्थी गुरुं सेवते। ६. मन्त्री धनं लभते। ७. त्वं सुखेन वर्धसे। ८. अहं विद्यया मोदे। ९. योगी दुःखं सहते। १०. विद्यार्थी नृपं धनं याचते। ११. सकृत् कार्यं कुरु। १२. असकृत् मुहुः पुनः पुनः वा विद्यां पठ, सत्यं वद, धर्मं कुरु।

२. संस्कृत बनाओ :— (क) १. इस नगर में पाँच हाथी हैं। २. इन पक्षियों को देखो। ३. दण्डी इधर आ रहा है। ४. विद्यार्थी ज्ञानी योगी और त्यागी की सेवा करता है। ५. स्वामी धनी से धन माँगता है। ६. योगी दुःख सहता है। ७. मन्त्री धन पाता है और सुखपूर्वक बढ़ता है। ८. योगी और त्यागी प्रसन्न होते हैं। ९. योगी एक बार भोजन करता है। १०. धनी बार बार भोजन करता है। (ख) ११. ज्ञानी के चारों ओर विद्यार्थी हैं। १२. मन्त्री के दोनों ओर ज्ञानी हैं। १३. त्यागी वन को जाता है। १४. विद्यार्थी विद्यालय को जाते हैं। (ग) १५. वह गुरु की सेवा करता है। १६. वह धन पाता है। १७. तू बढ़ता है। १८. तू प्रसन्न होता है। १९. मैं दुःख सहता हूँ। २०. मैं राजा से धन माँगता हूँ।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	एतत् नगरे पंच हस्ती सन्ति।	एतस्मिन् नगरे पंच हस्तिनः ०।	२०
(२)	स्वामी धनिनः धनं याचते।	स्वामी धनिनं धनं याचते।	११
(३)	अहं नृपात् धनं याचे।	अहं नृपं धनं याचे।	११

४. अभ्यास :— (क) २ (ग) को द्विवचन और बहुवचन में बदलो। (ख) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—करिन्, पक्षिन्, दण्डिन्, विद्यार्थिन्, धनिन्। (ग) इनके लट् के पूरे रूप लिखो—सेव्, लभ्, वृध्, मुद्, सह्, याच्।

५. वाक्य बनाओ :— विद्यार्थिनः, धनिनाम्, सेवते, सहसे, सकृत्, मुहुः।

६. सन्धि करो :— कार्यम्+करोति। पुस्तकम्+पठति। गृहम्+गच्छति। लेखम्+लिखति। त्वम्+पठसि। सत्यम्+वद। पुस्तकम्+अपठत्।

शब्दकोष ३६०+२०=३८०] **अभ्यास १९** (व्याकरण)

(क) राजन् (राजा), मूर्धन् (सिर), तक्षन् (बढ़ई)। (३)। (ख) वृत् (होना), ईक्ष् (देखना), भाष् (कहना), कूर्द् (कूदना), यत् (यत्न करना), रम् (१. लगना, २. रमण करना), वन्द् (वन्दना करना), शिक्ष् (सीखना), कम्प् (काँपना), परा+अय् (भागना), चेष्ट् (चेष्टा करना), आलम्ब् (सहारा लेना), ध्वंस् (नष्ट होना)। (१३)। (ग) अन्यथा (नहीं तो), शीघ्रम् (शीघ्र), सहसा (एकदम), किंचित् (कुछ)। (४)।

सूचना--(क) राजन्--तक्षन्, राजन् के तुल्य। (ख) वृत्--ध्वंस्, सेव् के तुल्य।

व्याकरण (राजन्, लोट्, यण् सन्धि, तृतीया)

१. राजन् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० १३)। मूर्धन् और तक्षन् के रूप राजन् के तुल्य चलाओ।

२. सेव्–लोट् (आत्मनेपद) **संक्षिप्त रूप**

सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्	प्र० पु०	अताम्	एताम्	अन्ताम्
सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्	म० पु०	अस्व	एथाम्	अध्वम्
सेवै	सेवावहै	सेवामहै	उ० पु०	ऐ	आवहै	आमहै

संक्षिप्त रूप लगाकर लभ् आदि तथा वृत् आदि के रूप बनाओ।

३. वृत् आदि के लट् में ये रूप होते हैं:—वर्तते, ईक्षते, भाषते, कूर्दते, यतते, रमते, वन्दते, शिक्षते, कम्पते, पलायते, चेष्टते, आलम्बते, ध्वंसते। लोट् में सेव् के तुल्य इनके रूप चलाओ।

४. अभ्यास ८, ९ में दिए तृतीया के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

नियम ५३--(इको यणचि) इ ई को य्, उ ऊ को व्, ऋ को र्, लृ को ल् हो जाता है, यदि बाद में कोई स्वर हो तो। सवर्ण (वैसा ही) स्वर हो तो नहीं। जैसे, (१) प्रति+एकः=प्रत्येकः। इति+आह=इत्याह। यदि+अपि=यद्यपि। सुधी+उपास्यः=सुध्युपास्यः। (२) मधु+अरिः=मध्वरिः। वधू+औ=वध्वौ। गुरु+आज्ञा=गुर्वाज्ञा। (३) पितृ+आ=पित्रा। धातृ+अंशः=धात्रंशः। (४) लृ+आकृतिः=लाकृतिः।

अभ्यास १९

१. उदाहरण-वाक्य :—१. राजा राज्यं करोति। २. राजानं पश्य। ३. राज्ञा सह मन्त्री वर्तते। ४. राज्ञः आज्ञां कुरु, अन्यथा स कोपिष्यति। ५. बालकस्य मूर्ध्नि फलम् अपतत्। ६. तक्षा कार्यं करोति। ७. अत्र रामः वर्तते, स ईक्षते, भाषते, कूर्दते च। ८. स पुत्रम् ईक्षताम्, वचनं भाषताम्, कूर्दताम्, यतताम्, रमतां च। ९. त्वं गुरुं वन्दस्व, विद्यां शिक्षस्व, ज्ञानं लभस्व च। १०. अहं चेष्टै, वर्धै, मोदै, दुःखं सहै च। ११. दुर्जनः पलायताम्। १२. वन्दे मातरम्।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. राजा आ रहा है। २. राजा को नमस्कार करो। ३. राजा के साथ सेनापति है। ४. राजा को धन दो। ५. राजा का राज्य बढ़े। ६. बालक का सिर सूँघो। ७. शिष्य के सिर पर फूल गिरा। ८. बढ़ई इधर आ रहा है। ९. विद्या पढ़ो, नहीं तो दुःख होगा। १०. वह स्वभाव से सज्जन है। ११. वह आँख का काणा है। १२. विवाद मत करो। (ख) १३. यहाँ सुख हो। १४. वह लता को देखे। १५. वह सत्य बोले। १६. तू वृक्ष से नीचे कूद। १७. तू पढ़ाई में यत्न कर। १८. तू काम में लग। १९. मैं गुरु की वन्दना करूँ। २०. मैं विद्या सीखूँ। २१. दुर्जन सहसा काँपे। २२. चोर शीघ्र भाग जावे। २३. शिष्य चेष्टा करे। २४. बालक पिता का सहारा ले। २५. यह घर नष्ट हो। २६. वह धन पावे और बढ़े।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	राजाम्, राजेन, राजाय।	राजानम्, राज्ञा, राज्ञे।	शब्दरूप
(२)	त्वं पठनं यत।	त्वं पठने यतस्व।	धातुरूप
(३)	बालकः पितुः आलम्बतु।	बालकः पितरम् आलम्बताम्।	,, ११

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को बहुवचन में बदलो। (ख) राजन् शब्द के पूरे रूप लिखो। (ग) इनके लोट् के पूरे रूप लिखो—सेव्, लभ्, वृध्, मुद्, याच्, वृत्, ईक्ष्, भाष्, कूर्द्, यत्।

५. वाक्य बनाओ—अन्यथा, प्रकृत्या, भाषताम्, कूर्दस्व, यतस्व, शिक्षै।

६. सन्धि करो——यदि+अपि। इति+अत्र। पठति+अत्र। पठतु+अत्र। मधु+अरिः। पितृ+ए। धातृ+अंशः। कर्तृ+आ।

शब्दकोष ३८०+२०=४००] अभ्यास २० (व्याकरण)

(क) सिंहः (शेर), व्याघ्रः (बाघ), ऋक्षः (रीछ), शूकरः (सूअर), वृकः (भेड़िया), शृगालः (गीदड़), शशकः (खरगोश), वानरः (बन्दर), वृषभः (बैल), उष्ट्रः (ऊँट), गर्दभः (गधा), कुक्कुरः (कुत्ता), मार्जारः (बिल्ली), अजः (बकरा), मूषकः (चूहा)। (१५)। (ख) गच्छत् (जाता हुआ), पठत् (पढ़ता हुआ), लिखत् (लिखता हुआ), कुर्वत् (करता हुआ)। (४)। (ग) यत् (कि)। (१)।

सूचना—(क) सिंह—मूषक, रामवत्। (ख) गच्छत्—कुर्वत्, गच्छत् के तुल्य।

व्याकरण (गच्छत्, लङ्, अयादिसन्धि, चतुर्थी)

१. गच्छत् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ९)। पठत् आदि के रूप गच्छत् के तुल्य चलावो। इस प्रकार के बने हुए अन्य शब्दों के लिए देखो अभ्यास २६ का व्याकरण।

२. सेव्-लङ् (आत्मनेपद) संक्षिप्त रूप

असेवत	असेवेताम्	असेवन्त	प्र० पु०	अत	एताम्	अन्त
असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्	म० पु०	अथाः	एथाम्	अध्वम्
असेवे	असेवावहि	असेवामहि	उ० पु०	ए	आवहि	आमहि

सूचना—लङ् लकार में धातु से पहले अ लगता है। यदि धातु का पहला अक्षर कोई स्वर हो तो आ लगेगा। संक्षिप्त रूप लगाकर अभ्यास १८ और १९ में दी गई लभ् आदि धातुओं के रूप चलावो।

३. अभ्यास १०, ११ में दिए चतुर्थी के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

४. 'यत्' अव्यय 'कि' के अर्थ में आता है। जैसे, उसने कहा कि मैं नहीं जाऊँगा—सः अभाषत यत् अहं न गमिष्यामि।

* नियम ५४—(एचोऽयवायावः) ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् हो जाता है, बाद में कोई स्वर हो तो। (शब्द के अन्तिम ए या ओ के बाद अ होगा तो नहीं)। जैसे—(१) हरे+ए=हरये। जे+अः=जयः। कवे+ए=कवये। (२) भो+अति=भवति। पो+अनः=पवनः। (३) नै+अकः=नायकः। गै+अकः=गायकः। (४) पौ+अकः=पावकः। द्वौ+एतौ=द्वावेतौ।

अभ्यास २०

१. उदाहरण-वाक्य :— १. बालकः पठन्, लिखन्, कार्यं च कुर्वन् अस्ति। २. गच्छन्तं सिंहं पश्य। ३. पठता बालकेन सह रामः तिष्ठति। ४. गच्छते शिष्याय पुस्तकं यच्छ। ५. गच्छतः अश्वात् बालकः अपतत्। ६. लिखतः शिष्यस्य लेखं पश्य। ७. वृकः गच्छन् आसीत्। ८. रामः अभाषत यत् स सदा सत्यं वदिष्यति। ९. रामः गुरुम् असेवत, धनम् अलभत, अवर्धत, अमोदत च। १०. त्वं दुःखम् असहथाः, कन्याम् ऐक्षथाः च।

२. संस्कृत बनाओ :— (क) १. शिष्य जा रहा है। २. राम काम कर रहा है। ३. कृष्ण लिख रहा है। ४. एक शेर जा रहा था। ५. जाते हुए बाघ को देखो। ६. जाते हुए कुत्ते के साथ बकरा और बिल्ली भी हैं। ७. पढ़ते हुए बालक को लड्डू दो। ८. काम करते हुए शिष्य का काम देखो। ९. राम ने कहा कि वह घर जा रहा है। १०. वन में शेर, बाघ, रीछ, सूअर, भेड़िया, गीदड़, खरगोश और बन्दर रहते हैं। ११. नगर में घोड़े, बैल, ऊँट, गधे, कुत्ते, बिल्ली, बकरे और चूहे भी रहते हैं। (ख) १२. कुत्ते को भोजन दो। १३. मुझे लड्डू अच्छा लगता है। १४. गुरु को नमस्कार। १५. धन के लिए पढ़ो। (ग) १६. उसने धन पाया। १७. उसने गुरु की सेवा की। १८. तूने वृक्ष को देखा। १९. तूने कहा। २०. मैंने यत्न किया। २१. मैंने विद्या सीखी।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	गच्छन् व्याघ्रं पश्य।	गच्छन्तं व्याघ्रं पश्य।	२०
(२)	पठन् बालकं मोदकं यच्छ।	पठते बालकाय मोदकं यच्छ।	२०,२३
(३)	कार्यं कुर्वन् शिष्यस्य०।	कार्यं कुर्वतः शिष्यस्य०।	२०

४. अभ्यास :— (क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) गच्छत्, पठत्, कुर्वत् के पूरे रूप लिखो। (ग) इनके लङ् के रूप लिखो—सेव्, लभ्, वृध्, सह्, याच्, वृत्, भाष्, कूर्द्, यत्, वन्द्।

५. वाक्य बनाओ :— गच्छन्तम्, कुर्वतः, अलभत, ऐक्षत, असहत।

६. सन्धि करो :— मुने+ए। कवे+ए। जे+अति। भो+अति। पो+अनः। गुरो+ए। गै+अकः। गै+अति। पौ+अकः। द्वौ+इमौ।

शब्दकोष ४००+२०=४२०] **अभ्यास २१** (व्याकरण)

(क) मतिः (बुद्धि), वुद्धिः (वुद्धि), गतिः (चाल), धृतिः (धैर्य), कृतिः (कार्य), भूतिः (ऐश्वर्य), उक्तिः (कथन), मुक्तिः (मोक्ष), युक्तिः (युक्ति), भक्तिः (भक्ति), श्रुतिः (वेद), स्मृतिः (स्मृति), शक्तिः (वल), शान्तिः (शान्ति), प्रवृत्तिः (प्रवृत्ति), प्रणतिः (प्रणाम), भूमिः (पृथ्वी), समृद्धिः (ऐश्वर्य), रात्रिः (रात), अंगुलिः (उँगली)। (२०)। सूचना--मति--अंगुलि, मतिवत्।

व्याकरण (मति, विधिलिङ, गुणसंधि, पंचमी)

१. मति शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० १६)। वुद्धि आदि के रूप मति के तुल्य चलाओ।

२. सेव्—विधिलिङ (आत्मनेपद) संक्षिप्त रूप

सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्	प्र० पु०	एत	एयाताम्	एरन्
सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्	म० पु०	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि	उ० पु०	एय	एवहि	एमहि

अभ्यास १८, १९ में दी गई लभ् आदि धातुओं के रूप इसी प्रकार वनाओ।

३. अभ्यास १२, १३ में दिए पंचमी के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

*नियम ५५—दीर्घ, गुण, वृद्धि, संप्रसारण के लिए यह विवरण स्मरण कर लें। ऊपर स्वर दिए हैं। गुण, वृद्धि आदि कहने पर ऊपर के स्वर के नीचे गुण आदि के सामने जो स्वर दिए हैं, वे होंगे।

स्वर	अ, आ	इ, ई	उ, ऊ	ऋ, ॠ	ऌ	ए	ऐ	ओ	औ
१. दीर्घ	आ	ई	ऊ	ॠ	—	—	—	—	—
२. गुण	अ	ए	ओ	अर्	अल्	ए	—	ओ	—
३. वृद्धि	आ	ऐ	औ	आर्	आल्	ऐ	ऐ	औ	औ

४. संप्रसारण—य् को इ, व् को उ, र् को ऋ।

*नियम ५६—(आद्गुणः) अ या आ के वाद (१) इ या ई हो तो दोनों को 'ए', (२) उ या ऊ हो तो दोनों को 'ओ', (३) ऋ या ॠ हो तो दोनों को 'अर्', (४) ऌ हो तो दोनों को 'अल्' होगा। जैसे, रमा+ईशः=रमेशः। पर+उपकारः=परोपकारः। महा+उत्सवः=महोत्सवः। महा+ऋषिः=महर्षिः। तव+ऌकारः=तवल्कारः।

अभ्यास २१

१. उदाहरण-वाक्य :—१. मतिम् इच्छ। २. बुद्ध्या कार्यं कुरु। ३. करिणः गतिम् ईक्षस्व। ४. रामे धृतिः भक्तिः शक्तिः भूतिः शान्तिः च सन्ति। ५. मधुराम् उक्तिं भाषेथाः। ६. भूमौ युक्त्या वर्तेथाः। ७. श्रुतिं स्मृतिं च पठ। ८. भक्त्या ईश्वरम् ईक्षेथाः। ९. स गुरुं सेवेत, धनं लभेत, वर्धेत, मोदेत च। १०. त्वं दुःखं सहेथाः, ईश्वरं मतिं याचेथाः, ईश्वरं वन्देथाः, विद्यां च शिक्षेथाः। ११. अहं सत्यं भाषेय, फलम् ईक्षेय, यतेय, कार्ये रमेय, कुशलं वर्तेय च।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. बालक की मति अच्छी है। २. बुद्धि से कार्यों को करो। ३. बालक की चाल देखो। ४. दुःख में धैर्य रक्खो (धारय)। ५. रघुवंश कालिदास की कृति है। ६. इस नगर में राजा की भूति, समृद्धि और शक्ति को देखो। ७. श्रुति और स्मृति को शान्ति से पढ़ो। ८. यति भक्ति से मोक्ष को पावे। ९. भूमिपर बालक बैठें। १०. मधुर उक्ति को ही कहो। (ख) ११. रात्रि में बन्दर वृक्ष से पृथ्वी पर गिरा। १२. मुनि से श्रुति और स्मृति पढ़ो। १३. शिष्य सिंह से डरता है। १४. राम कृष्ण से अधिक चतुर है। (ग) (विधिलिङ) १५. शिष्य गुरु की सेवा करे, ज्ञान पावे, बढ़े और प्रसन्न हो। १६. तू ईश्वर से बुद्धि माँग, दुःखों को सह और भक्ति से मुक्ति को पा। १७. मैं गुरु की वन्दना करूँ, विद्या सीखूँ, यत्न करूँ, सत्य बोलूँ और धर्म में रमूँ।

३. अशुद्ध	शुद्ध	नियम
(१) बुद्धिना, शान्तिना, भक्तिना।	बुद्ध्या, शान्त्या, भक्त्या।	शब्दरूप
(२) सेवेत्, लभेत्, वर्धेत्।	सेवेत, लभेत, वर्धेत।	धातुरूप
(३) वन्देयम्, शिक्षेयम्, यतेयम्।	वन्देय, शिक्षेय, यतेय।	,,

४. अभ्यास :—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) इनके रूप लिखो —मति, बुद्धि, गति, कृति, युक्ति। (ग) इनके विधिलिङ के रूप लिखो— सेव्, लभ्, वृध्, मुद्, सह्, याच्, वृत्, ईक्ष्, भाष्। (घ) दीर्घ, गुण, वृद्धि, संप्रसारण से क्या समझते हो, लिखो।

५. सन्धि करो :—महा+ईशः। रमा+ईशः। तथा+इति। न+इति। पर+उपकारः। हित+उपदेशः। राज+ऋषिः। सप्त+ऋषिः। ब्रह्म+ऋषिः।

शब्दकोष ४२०+२०=४४०] **अभ्यास २२** (व्याकरण)

(क) नदी (नदी), गौरी (पार्वती), मही (पृथ्वी), रजनी (रात्रि), सखी (सखी), दासी (दासी), पुरी (नगरी), वाणी (वचन), सरस्वती (सरस्वती), बुद्धिमती (बुद्धिमान् स्त्री), ब्राह्मणी (१. ब्राह्मण स्त्री, २. ब्राह्मण की स्त्री), मृगी (हिरनी), सिंही (सिंहनी), सर्पिणी (साँपिन), राज्ञी (रानी), भवती (आप, स्त्रीलिंग), श्रीमती (ऐश्वर्यवाली स्त्री), कौमुदी (चाँदनी), कमलिनी (कमलिनी), इन्द्राणी (इन्द्र की स्त्री)। (२०)

सूचना—(क) नदी—इन्द्राणी, नदीवत्।

व्याकरण (नदी, लृट्, वृद्धि सन्धि, षष्ठी)

१. नदी शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० १७)। गौरी आदि नदीवत्।

२. अभ्यास १४, १५ में दिए षष्ठी के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

३. सेव्-लृट्	(आत्मनेपद)			संक्षिप्त रूप		
सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते	प्र० पु०	इष्यते	इष्येते	इष्यन्ते
सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे	म० पु०	इष्यसे	इष्येथे	इष्यध्वे
सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे	उ० पु०	इष्ये	इष्यावहे	इष्यामहे

कुछ धातुओं में इष्यते वाले रूप लगते हैं, कुछ में स्यते स्येते आदि।

*सूचना—अभ्यास १८, १९ की इन धातुओं में 'इष्यते' वाला रूप लगेगा :— सेविष्यते, वर्धिष्यते, मोदिष्यते, सहिष्यते, याचिष्यते, वर्तिष्यते, ईक्षिष्यते, भाषिष्यते, कूर्दिष्यते, यतिष्यते, वन्दिष्यते, शिक्षिष्यते, कम्पिष्यते, पलायिष्यते, चेष्टिष्यते, आलम्बिष्यते, ध्वंसिष्यते। इन धातुओं में 'स्यते' वाला रूप लगेगा :—लभ्—लप्स्यते, रम्—रंस्यते।

*नियम ५७—(वृद्धिरेचि) (१) अ या आ के बाद ए या ऐ होगा तो दोनों को 'ऐ' होगा। (२) अ या आ के बाद ओ या औ होगा तो दोनों को 'औ' होगा। जैसे—

अत्र+एकः=अत्रैकः। राज+ऐश्वर्यम्=राजैश्वर्यम्। सा+एषा=सैषा। महा+ओषधिः=महौषधिः। तण्डुल+ओदनम्=तण्डुलौदनम्।

अभ्यास २२

१. उदाहरण-वाक्य :—१. रमा गौरीं वन्दिष्यते। २. ब्राह्मणी नद्यां स्नानं करिष्यति। ३. सरस्वती वाणीं भाषिष्यते। ४. राज्ञी सखीभिः सह पुर्यां भ्रमति। ५. बुद्धिमती दासीं पृच्छति। ६. सिंही मृगीम् इच्छति। ७. इन्द्राणी श्रीमतीं भवतीं किं पृच्छति? ८. राज्ञी नृपं सेविष्यते, वन्दिष्यते, भाषिष्यते, ईक्षिष्यते च। ९. श्रीमती धनं लप्स्यते रंस्यते च।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. नदी को देखो। २. नदी में स्नान करो। ३. नदी का जल मीठा है। ४. जल के लिए नदी पर जाओ। ५. रानी पार्वती को प्रणाम करेगी। ६. पृथ्वी पर ब्राह्मणी बैठी है। ७. आप क्या पढ़ती हैं? ८. इन्द्राणी इन्द्र के साथ घूमेगी। ९. रात्रि में रानी दासियों और सखियों के साथ घूमती है। १०. बुद्धिमती वचन कहेगी। ११. ब्राह्मणी सरस्वती की वन्दना करेगी। १२. मृगी सिंहनी से डरती है। १३. चाँदनी में नगर में आदमी घूमते हैं। (ख) १४. पुत्र माता को स्मरण करता है। १५. कमलिनी के फूल को देखो। १६. पुस्तकों में वेद श्रेष्ठ है। १७. धर्मों में वैदिक धर्म श्रेष्ठ हैं। १८. साँपिन का चलना देखो। (ग) १९. कृष्ण गुरु की सेवा करेगा, दुःख सहेगा, सत्य बोलेगा और प्रसन्न रहेगा। २०. तू यत्न करेगा, विद्या सीखेगा, धर्म का सहारा लेगा और बढ़ेगा। २१. मैं सत्य बोलूँगा, धन पाऊँगा, यत्न करूँगा, धर्म में रमूँगा और प्रसन्न रहूँगा।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) मृगी सिंहीं बिभेति।	मृगी सिंह्याः बिभेति।	२९
(२) लभिष्यते, रमिष्ये।	लप्स्ये, रंस्ये।	धातुरूप

४. अभ्यास :—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) इनके रूप लिखो—नदी, गौरी, बुद्धिमती, भवती, श्रीमती। (ग) इनके लृट् के रूप लिखो—सेव्, लभ्, वृध्, मुद्, सह्, याच्, वृत्, भाष्, लभ्, रम्।

५. वाक्य बनाओ :—सेविष्यते, शिक्षिष्ये, सहिष्ये, लप्स्यते, रंस्ये।

६. सन्धि करो :—अत्र+एषः। न+एतत्। पश्य+एतम्। सा+एषा। देव+औदार्यम्। राज्य+ऐश्वर्यम्। जल+ओघः। वन+ओषधिः।

शब्दकोष ४४०+२०=४६०] **अभ्यास २३** (व्याकरण)

(क) धेनुः (गाय), रेणुः (धूल), रज्जुः (रस्सी)। सुलेखः (सुलेख), परिणामः (परिणाम), अंकः (अंक), अवकाशः (छुट्टी)। कक्षा (श्रेणी), परीक्षा (परीक्षा), संचिका (कापी), लेखनी (कलम), मसी (स्याही)। मसीपात्रम् (दावात), मित्रम् (मित्र), उत्तरम् (उत्तर), क्रीडाक्षेत्रम् (क्रीडाक्षेत्र)। (१६)। (ख) उत्तीर्ण (उत्तीर्ण), अनुत्तीर्ण (फेल), उपस्थित (उपस्थित), अनुपस्थित (अनुपस्थित)। (४)

सूचना—(क) धेनु—रज्जु, धनुवत्।

व्याकरण (धेनु, क्त प्रत्यय, दीर्घसंधि)

१. धेनु शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० १९)। रेणु, रज्जु, धेनुवत्।

२. अभ्यास १६, १७ में दिये सप्तमी के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

***नियम ५८—(अकः सवर्णे दीर्घः)** अ इ उ ऋ के बाद सवर्ण (समान) अक्षर हो तो दोनों के स्थान पर उसी वर्ण का दीर्घ अक्षर हो जाता है। अर्थात् (१) अ या आ+अ या आ=आ। (२) इ या ई+इ या ई=ई। (३) उ या ऊ +उ या ऊ=ऊ। (४) ऋ+ऋ=ॠ। जैसे, हिम+आलयः= हिमालयः। विद्या+आलयः=विद्यालयः। श्री+ईशः=श्रीशः। गुरु+उपदेशः=गुरूपदेशः। होतृ+ऋकारः=होतॄकारः।

***नियम ५९—**भूतकाल अर्थ में धातु से क्त (त) प्रत्यय होता है। क्त का त शेष रहता है। जिन धातुओं के साथ और जगह बीच में इ लगता है, उनमें 'इत' जुड़ेगा, अन्य धातुओं में केवल 'त' जुड़ेगा। जैसे—पठ्—पठितः (पढ़ा), लिख्—लिखितः (लिखा), कृ—कृतः (किया), गम्—गतः (गया)।

***नियम ६०—**'त' प्रत्यय लगाकर अनुवाद बनाने के लिए यह नियम स्मरण कर लें:— (१) जब सकर्मक धातु से 'त' प्रत्यय होगा तो कर्म में प्रथमा, कर्ता में तृतीया, क्रिया का लिंग वचन और विभक्ति कर्म के अनुसार होगी, कर्ता के अनुसार नहीं। (२) अकर्मक धातु से त प्रत्यय होन पर कर्ता में तृतीया, क्रिया में नपुंसकलिंग एकवचन। (३) 'त' प्रत्ययान्त शब्द कर्म के अनुसार पुंलिंग होगा तो उसके रूप रामवत्, स्त्रीलिंग होगा तो रमावत्, नपुंसक लिंग होगा तो गृहवत्। जैसे—उसने काम किया—तेन कार्यं कृतम्। तेन पुस्तकं पठितम्। तेन लेखः लिखितः। तेन हसितम्। तेन भोजनं खादितम्। तेन बालकः रक्षितः।

अभ्यास २३

१. उदाहरण-वाक्य :—१. धेनुः गच्छति। २. धेनुं पश्य। ३. धेनवे अन्नं देहि। ४. तस्यां कक्षायां दश छात्राः सन्ति। ५. तेषां समीपे पुस्तकानि संचिकाः लेखन्यः मसीपात्राणि च सन्ति। ६. परीक्षायां षट् छात्राः उत्तीर्णाः, अन्ये अनुत्तीर्णाः च सन्ति। ७. मया भोजनं भक्षितम्। ८. तेन पुस्तकानि पठितानि। ९. मया पत्रं लिखितम्, पत्रे लिखिते, पत्राणि लिखितानि। १०. त्वया कार्यं कृतम्, कार्याणि कृतानि।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. गाय आई। २. गाय को लाओ। ३. गाय का दूध पीओ। ४. गाय को अन्न और जल दो। ५. धूल उठ रही है (उत्तिष्ठति)। ६. धूल पर न बैठो। ७. रस्सी लाओ। (ख) ८. यह विद्यालय है। ९. यहाँ पर छात्र पढ़ते हैं। १०. कक्षा में ९ छात्र उपस्थित हैं और १ अनुपस्थित है। ११. परीक्षा में सात छात्र उत्तीर्ण हैं और अन्य अनुत्तीर्ण। १२. कापी पर कलम से सुलेख लिखो। १३. परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करो। १४. आज विद्यालय में छुट्टी है, अतः क्रीडाक्षेत्र में खेलो। १५. इन छात्रों के पास पुस्तकें, कलम, स्याही और दावात हैं। १६. सत्य के बोलने में तत्पर होओ। १७. धर्मग्रन्थों में वेद श्रेष्ठ हैं। (ग) १८. बालक ने पुस्तक पढ़ी। १९. मैंने पुस्तकें पढ़ीं। २०. तूने काम किया। २१. मैंने लेख लिखा। २२. हमने लेख लिखे। २३. मैंने भोजन खाया। २४. सेनापति ने बालक की रक्षा की। २५. मैं हँसा। २६. तूने फल खाये। २७. मैंने ग्रन्थ पढ़े।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अहं पुस्तकानि पठितम्।	मया पुस्तकानि पठितानि।	६०
(२) सेनापतिः बालकस्य रक्षितम्।	सेनापतिना बालकः रक्षितः।	६०
(३) त्वं फलानि खादितम्।	त्वया फलानि खादितानि।	६०

४. अभ्यास :—(क) धेनु शब्द के पूरे रूप लिखो। (ख) इन धातुओं के क्त प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ :—पठ्, लिख्, गम्, कृ, रक्ष्, हस्।

५. वाक्य बनाओ :—कृतम्, रक्षितः, पठितानि, लिखितः, धेनोः, मित्रस्य।

६. सन्धि करो—विद्या+आलयः। शिष्ट+आचारः। महा+आत्मा। श्री+ईशः। गिरि+ईशः। पठति+इदम्। गुरु+उपदेशः। भानु+उदयः।

शब्दकोष ४६०+२०=४८०] अभ्यास २४ (व्याकरण)

(क) वारि (जल)। हस्तः (हाथ), दन्तः (दाँत), ओष्ठः (ओष्ठ), अधरः (नीचे का ओष्ठ), स्कन्धः (कन्धा), कण्ठः (गला), केशः (बाल), नखः (नाखून), पादः (पैर)। नासिका (नाक), ग्रीवा (गर्दन), जिह्वा (जीभ), जंघा (जाँघ)। मुखम् (मुँह), उरःस्थलम् (छाती), हृदयम् (हृदय), उदरम् (पेट), शरीरम् (शरीर)। (१९)। (घ) शुचि (स्वच्छ, पवित्र)। (१)

सूचना—(क) हस्त—पाद, रामवत्। नासिका—जंघा, रमावत्।

व्याकरण (वारि, क्त, दा धातु, पूर्वरूपसंधि)

१. वारि शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २७)। शुचि, वारिवत्।
२. दा धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २४)।

*नियम ६१—(एङः पदान्तादति)—पद (शब्दरूप या धातुरूप) के अन्तिम ए या ओ के बाद अ हो तो वह हट जाता है। (अ हटा है, इस बात को बताने के लिए ऽ चिह्न लगा दिया जाता है)। जैसे—लोके+अस्मिन्=लोकेऽस्मिन्। हरे+अव=हरेऽव। को+अपि=कोऽपि। विष्णो+अव=विष्णोऽव। को+अयम्=कोऽयम्।

*नियम ६२—जाना, चलना अर्थ की धातुओं और अकर्मक धातुओं से त प्रत्यय होनेपर कर्ता में प्रथमा और कर्म में द्वितीया होती है। जसे—स गृहं गतः। स विद्यालयं प्राप्तः। स आगतः। स सुप्तः। स मृतः।

सूचना—'त' प्रत्यय से बने कुछ प्रसिद्ध रूप ये हैं—(देखो पृष्ठ ९६, ९७)

अस्	भूतः	चुर्	चोरितः	धृ	धृतः	भू	भूतः
आप्	आप्तः	छिद्	छिन्नः	नम्	नतः	लिख्	लिखितः
ईक्ष्	ईक्षितः	जन्	जातः	नश्	नष्टः	वद्	उदितः
कथ्	कथितः	ज्ञा	ज्ञातः	पठ्	पठितः	वस्	उषितः
कृ	कृतः	त्यज्	त्यक्तः	पा	पीतः	वह्	ऊढः
क्रीड्	क्रीडितः	दा	दत्तः	प्रच्छ्	पृष्टः	श्रु	श्रुतः
खाद्	खादितः	दृश्	दृष्टः	ब्रू	उक्तः	स्था	स्थितः
गम्	गतः	धा	हितः	भक्ष्	भक्षितः	हृ	हृतः

अभ्यास २४

१. उदाहरण-वाक्य :—१. शुचि वारि पिव । २. शुचिना वारिणा स्नानं कुरु । ३. शुचिने वारिणे नदीं गच्छ । ४. रामः गृहं गतः । ५. कृष्णः गृहम् आगतः । ६. स नदीं प्राप्तः । ७. रामेण रावणस्य मूर्धा भिन्नः । ८. रामेण ब्राह्मणाय धनं दत्तम्, जलं पीतम्, भारः नीतः, वचनम् उक्तम्, कार्यं कृतम्, फलं हृतम्, पुस्तकं धृतम्, भोजनं खादितम्, प्रश्नः पृष्टः, गृहं त्यक्तम्, रावणः हतः, शत्रुः बद्धः, कार्यम् आरब्धम्, सीता दृष्टा, वने उषितः च । ९. देवः पुत्राय धनं ददाति, ददातु, अददात् वा । १०. त्वं शिष्याय धनं ददासि, देहि, अददाः वा ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. राम स्वच्छ जल पीता है । २. तूं स्वच्छ जल ला । ३. स्वच्छ जल के लिए तू नदी पर जा । ४. तू हाथ, पैर, मुँह, आँख, नाक, कान, बाल और गले को स्वच्छ कर । ५. उस कन्या के दाँत, ओष्ठ, नाखून, गर्दन, जंघा, और मुँह सुन्दर हैं । ६. हृदय को सदा पवित्र रक्खो (स्थापय) । (ख) ७. शिष्य विद्यालय को गया । ८. बालक आया । ९. बच्चा सोया । १०. रावण मरा (मृतः) । ११. मैंने धर्म को जाना, दान दिया, दूध पिया, वचन कहा, कार्य किया और धर्म को धारण किया । १२. तूने स्नान किया, भोजन खाया, प्रश्न पूछा, कार्य आरम्भ किया और शिष्य की रक्षा की । (ग) १३. वह दान देता है । १४. तू धन देता है । १५. मैं बालक को फल देता हूँ । १६. वह उसको फूल दे । १७. तू मुझे पुस्तक दे । १८. मैं तुझे धन दूँ । १९. उसने धन दिया । २०. तूने ब्राह्मण को भोजन दिया । २१. मैंने निर्धन को धन दिया ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अहं धर्मं ज्ञातः, दानं दत्तः ।	मया धर्मः ज्ञातः, दानं दत्तम् ।	६०
(२) त्वं स्नानं कृतः, भोजनं खादितः० ।	त्वया स्नानं कृतम्, ० खादितम् ।	६०

४. अभ्यास :—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो । (ख) वारि शब्द के पूरे रूप लिखो । (ग) इन धातुओं के क्त प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—कृ, हृ, धृ, मृ, दा, पा, स्था, ब्रू, प्रच्छ्, त्यज्, भिद्, हन्, स्वप्, गम्, दृश्, वह् । (घ) दा धातु के लट्, लोट्, लङ के रूप लिखो ।

५. सन्धि करो :—हरे+अव । गृहे+अस्मिन् । के+अत्र । धर्मे+अयम् । विष्णो+अव । को+अयम् । को+अत्र । को+अपि । सो+अपि ।

शब्दकोष ४८०+२०=५००] अभ्यास २५ (व्याकरण)

(क) मधु (शहद), दारु (लकड़ी), जानु (घुटना), अम्बु (जल), वस्तु (वस्तु), वसु (धन), अश्रु (आँसू)। (७)। (ख) प्र+आप् (पाना), स्वप् (सोना), ज्ञा (जानना), स्ना (नहाना), ब्रू (बोलना), धृ (धारण करना), मृ (मरना), त्यज् (छोड़ना), भिद् (तोड़ना), छिद् (काटना), हन् (मारना), आरभ् (आरंभ करना), वह् (१. ढोना, २. बहना)। (१३)

सूचना—(क) मधु—अश्रु, मधुवत्। (ख) धृ, त्यज्, वह्, भवतिवत्।

व्याकरण (मधु, क्तवतु, दा धातु, श्चुत्व संधि)

१. मधु शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २९)। दारु आदि के रूप मधु के तुल्य चलाओ।

२. दा धातु के विधिलिङ् और लृट् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २४)

नियम ६३—(स्तोः श्चुना श्चुः) स् या तवर्ग से पहले या बाद में श् या चवर्ग कोई भी हो तो स् को श् और तवर्ग को चवर्ग हो जाता है। जैसे—(१) रामस्+च= रामश्च। कस्+चित्=कश्चित्। हरिस्+च=हरिश्च। (२) तत्+च= तच्च। सत्+चित्=सच्चित्। उत्+चारणम्=उच्चारणम्। (३) सद्+जनः=सज्जनः। उद्+ज्वलः=उज्ज्वलः। याच्+ना=याच्ञा।

* **नियम ६४**—भूतकाल अर्थ में धातु से क्तवतु (तवत्) प्रत्यय होता है। क्तवतु का तवत् शेष रहता है। तवत् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि क्त (त) प्रत्यय लगाकर जो रूप बनता है, उसमें बाद में 'वत्' और जोड़ दो। जैसे, कृ—कृतः, तवत् में कृतवत्।

* **नियम ६५**—तवत् प्रत्ययान्त रूप के साथ अनुवाद के लिए यह नियम स्मरण कर लें :—कर्ता के तुल्य ही तवत् प्रत्ययान्त के लिंग, विभक्ति और वचन होंगे। कर्ता में प्रथमा होगी, कर्म में द्वितीया, क्रिया कर्ता के तुल्य। तवत् प्रत्ययान्त के रूप पुंलिग में भगवत् (शब्द० ८) के तुल्य, स्त्रीलिंग में 'ई' लगाकर नदी (शब्द० १७) के तुल्य और नपुंसक लिंग में जगत् (शब्द० ३३) के तुल्य चलेंगे। जैसे— उसने पुस्तक पढ़ी—स पुस्तकं पठितवान्। तौ पुस्तकं पठितवन्तौ। ते पुस्तकं पठितवन्तः। रमा पुस्तकं पठितवती।

अभ्यास २५

१. उदाहरण-वाक्य :—१. स मधु खादितवान् । २. मधु आनय । ३. मधुने वैश्यस्य गृहं गच्छ । ४. मधुनः भक्षणं कुरु । ५. शुचि अम्बु पिब । ६. एतत् वस्तु अत्रानय । ७. सः त्वम् अहं वा गृहं गतवान् । ८. तौ युवाम् आवां वा गृहं गतवन्तौ । ९. ते यूयं वयं वा गृहं गतवन्तः । १०. सम्भाषणं दत्तवान् । ११. सा वचनम् उक्तवती । १२. ते गृहं त्यक्तवन्तः । १३. स दारु छिन्नवान् । १४. रामः ब्राह्मणाय धनं दद्यात्, त्वं दद्याः, अहं च दद्याम् । १५. स धनं दास्यति, त्वं च दास्यसि ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. शहद लाओ । २. शहद खाओ । ३. शहद के लिए वर्तन लाओ । ४. शहद का सेवन करो । ५. अच्छी लकड़ी लाओ । ६. अपने घुटने को स्वच्छ करो । ७. स्वच्छ जल पीओ । ८. जल के लिए नदी पर जाओ । ९. मेरी वस्तु यहाँ लाओ । १०. इस वस्तु को ले जाओ । ११. वालक के आँसू भूमि पर गिर रहे हैं । (ख) (तवत् प्रत्यय) १२. उसने पुस्तक पढ़ी । १३. उसने लेख लिखा । १४. तू घर गया । १५. म यहाँ आया । १६. उसने धन पाया । १७. वह भूमि पर सोया । १८. उसने धर्म को जाना । १९. मैं नहाया । २०. लड़की वचन वोली । (ग) २१. उन्होंने वालक को पकड़ा (धृ) । २२. वे मरे । २३. तुम सबने घर छोड़ा । २४. तुमने घड़ा (घटः) तोड़ा । २५. हमने लकड़ियाँ काटीं । २६. हमने शेर मारा । २७. हमने काम आरंभ किया । २८. हमन भार ढोया । (घ) २९. वह धन दे । ३०. तू फल दे । ३१. मैं निर्धन को धन दूँ । ३२. वह विद्या देगा । ३३. तू रमा को फूल देगा । ३४. मैं साधु को भोजन दूँगा ।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	तेन लेखः लिखितवन्तः ।	स लेखं लिखितवान् ।	६५
(२)	तैः वालकः धृतवान् ।	ते बालकं धृतवन्तः ।	६५

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को वहुवचन में बदलो । (ख) २ (ग) को एक-वचन में वदलो । (ग) २ (घ) को वहुवचन में वदलो । (घ) मधु, अम्बु, वस्तु, अश्रु के पूरे रूप लिखो । (ङ) दा धातु के विधिलिङ और लृट् के रूप लिखो ।

५. सन्धि करो :—कृष्णः+च । गुरुः+च । कस+चत्त । सत्+चरित्रः । सत्+चित् । सत्+जनः । सत्+जलम् । [illegible]

शब्दकोष ५००+२०=५२०] **अभ्यास २६** (व्याकरण)

(क) पयस् (१. जल, २. दूध), यशस् (यश), शिरस् (शिर), सरस् (तालाब), मनस् (मन), तमस् (अन्धकार)। कोकिलः (कोयल), मयूरः (मोर), हंसः (हंस), शुकः (तोता), कपोतः (कबूतर), काकः (कौआ), बकः (बगुला), उलूकः (उल्लू)। (१४)। (ख) श्रु (सुनना), शक् (सकना) [(आप् (पाना)] (२)। (घ) स्वकीय (अपना), परकीय (दूसरे का), त्वदीय (तेरा), मदीय (मेरा)। (४)

सूचना—(क) पयस्—तमस्, पयस् के तुल्य। (ख) श्रु—आप्, श्रु के तुल्य।

व्याकरण (पयस्, शतृ प्रत्यय, श्रु धातु, जश्त्व संधि)

१. पयस् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ३०)। यशस् आदि के रूप पयस् के तुल्य चलाओ।

२. श्रु धातु के लट्, लोट्, लङ्‌ के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २९)। शक् और आप् धातु के रूप श्रु के तुल्य चलाओ।

नियम ६६— (झलां जश् झशि) वर्ग के १, २, ३, ४ (पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा वर्ण) को ३ (अपने वर्ग का तीसरा अक्षर) हो जाता है, बाद में वर्ग के ३ या ४ (तीसरा या चौथा वर्ण) हों तो। जसे—वुध्+धिः=वुद्धिः। सिध्+धिः =सिद्धिः। दुध्+धम्=दुग्धम्। लभ्+धः=लब्धः। युध्+धः=युद्धः।

***नियम ६७—**'रहा है' 'रहा था' आदि 'रहा' वाले प्रयोगों का अनुवाद संस्कृत में शतृ (अत्) प्रत्यय लगाकर होता है। परस्मैपदी धातु में लट् के स्थान पर शतृ होता है। शतृ का अत् शेष बचता है। शतृप्रत्यय लगाकर रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि धातु के लट् के प्रथम पुरुष बहुवचन के रूप में से अन्तिम इ और बीच के न् को हटा दें। इस प्रकार शतृ वाला रूप बचता है। शतृ प्रत्ययान्त के रूप पुंलिंग में गच्छत् (शब्द० ९) के तुल्य चलेंगे, स्त्रीलिंग में ई लगाकर नदीवत्, नपुंसक० में जगत् (शब्द० ३३) के तुल्य। शतृ के रूप—पठ्—पठन्ति—पठत्। लिख्—लिखन्ति—लिखत्। इसी प्रकार कृ—कुर्वत्। गम्—गच्छत्। हस्—हसत्। पच्—पचत्। दृश्—पश्यत्। स्था—तिष्ठत्। पा—पिबत्। घ्रा—जिघ्रत् आदि। शतृप्रत्ययान्त के बाद में अर्थ के अनुसार अस् धातु के लट् या लङ्‌ का प्रयोग करो। जैसे—वह पढ़ रहा है—स पठन् अस्ति।

अभ्यास २६

१. उदाहरण-वाक्य :—१. वह पढ़ रहा है—सः पठन् अस्ति। २. वे दो पढ़ रहे हैं—तौ पठन्तौ स्तः। ३. ते पठन्तः सन्ति। ४. त्वं पठन् असि। ५. यूयं पठन्तः स्थ। ६. अहं पठन् अस्मि। ७. वयं पठन्तः स्मः। ८. सा पठन्ती अस्ति। ९. स पठन् आसीत्। १०. स पठन् भविष्यति। ११. पठन्तं शिष्यं पश्य। १२. पठते शिष्याय दुग्धं देहि। १३. स हसन्, भोजनं पचन्, बालिकां पश्यन्, पुष्पं जिघ्रन्, जलं च पिबन् अस्ति। १४. पयः पिब। १५. यशांसि इच्छ। १६. स वचनं शृणोति, शृणोतु, अशृणोत् वा। १७. स धनम् आप्नोति, आप्नोतु, आप्नोत् वा।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. वह लिख रहा है। २. वे दो लिख रहे हैं। ३. वे सब लिख रहे हैं। ४. तू काम कर रहा है। ५. तुम दोनों जा रहे हो। ६. तुम सब हँस रहे हो। ७. मैं फलों को देख रहा हूँ। ८. हम दोनों जल पी रहे हैं। ९. हम सब फूल सूँघ रहे हैं। १०. वह पढ़ रहा था। ११. तू भोजन कर रहा था। १२. मैं काम कर रहा था। १३. रमा पढ़ रही थी। १४. बालक लिख रहा होगा। १५. इधर आते हुए कोयल, हंस, मोर और तोते को देखो। १६. वहाँ बैठे हुए कबूतरों, कौओं, बगुलों और उल्लुओं को देखो। १७. काम करते हुए बालक को लड्डू दो। १८. काम करते हुए मनुष्य का यश होता है। (ख) १९. जल पीओ। २०. यश के लिए यत्न करो। २१. अपने शिर को छुओ। २२. तालाब में बगुले हैं। २३. अपने मन को पवित्र करो। २४. अन्धकार में मत बैठो। (ग) २५. वह मेरा भाषण सुनता है। २६. तू दूसरे का वचन सुनता है। २७. मैं तेरा वचन सुनता हूँ। २८. वह सुने। २९. तू सुन। ३०. मैं सुनूँ। ३१. उसने सुना। ३२. तूने सुना। ३३. मैंने सुना।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) वयं पुष्पं जिघ्रन् सन्ति।	वयं पुष्पाणि जिघ्रन्तः स्मः।	६७
(२) कार्यं कुर्वन् नरं यशं भवति।	कार्यं कुर्वतः नरस्य यशः भवति।	६७,२०

४. अभ्यास—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) इनके रूप लिखो :— पयस्, यशस्, सरस्, मनस्। (ग) श्रु के लट्, लोट्, लङ् के पूरे रूप लिखो।

५. सन्धि करो :—ऋध्+धिः। शुध्+धिः। बुध्+धिः। वृध्+धिः।

शब्दकोष ५२०+२०=५४०] **अभ्यास २७** (व्याकरण)

(क) नामन् (नाम), प्रेमन् (प्रेम), व्योमन् (आकाश)। स्वर्णकारः (सुनार), लौहकारः (लोहार), चर्मकारः (चमार), कुम्भकारः (कुम्हार), रजकः (धोबी), नापितः (नाई), व्याधः (वहेलिया), क्षुरः (उस्तरा)। ऋतुः (ऋतु)। (१२)। (ख) प्र+क्षल् (धोना), प्रेर् (प्रेरणा देना), तड् (पीटना), धारि (१. रखना, २. पहनना), स्थापि (रखना), कृत् (काटना)। (६)। (ग) ह्यः (बीता हुआ कल), श्वः (आगामी कल)। (२)।

सूचना—(क) नामन्—व्योमन्, नामन् के तुल्य। (ख) प्रक्षल्—स्थापि, चुर् के तुल्य।

व्याकरण (नामन्, शानच् प्रत्यय, श्रु धातु, चर्त्व संधि)

१. नामन् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ३१)। प्रेमन् और व्योमन् के रूप नामन् के तुल्य चलाओ।

२. प्रक्षल् आदि के ये रूप बनाकर भवति के तुल्य रूप चलाओ—प्रक्षालयति, प्रेरयति, ताडयति, धारयति, स्थापयति, कृन्तति।

३. ह्यः और श्वः के अन्तर के लिए यह स्मरण कर लो—'ह्यो गतेऽनागतेऽह्नि श्वः'। बीते हुए दिन के लिए ह्यः, आगामी के लिए श्वः।

४. श्रु धातु के विधिलिङ् और लृट् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २९)। शक् और आप् के रूप श्रु के तुल्य चलाओ।

५. ६ ऋतुएँ और १२ मास ये हैं—वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरद्, हेमन्तः, शिशिरः। चैत्रः, वैशाखः, ज्येष्ठः, आषाढः, श्रावणः, भाद्रपदः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गशीर्षः, पौषः, माघः, फाल्गुनः।

नियम ६८—(खरि च) वर्ग के १, २, ३, ४ को १ (उसी वर्ग का पहला अक्षर) हो जाता है, बाद में वर्ग के १, २, श ष स कोई हों तो। जैसे—सद्+कारः =सत्कारः। तद्+परः=तत्परः। उद्+साहः=उत्साहः। सद्+पुत्रः =सत्पुत्रः।

नियम ६९—आत्मनेपदी धातुओं के लट् के स्थान पर शानच् (आन) हो जाता है, 'रहा' अर्थवाले प्रयोगों में। शानच् का आन शेष रहता है। कहीं पर 'मान' रहता है। शानच् प्रत्ययान्त के रूप पुंलिंग में रामवत्, स्त्रीलिंग में रमावत्, नपुंसक० में गृहवत्। शतृ के तुल्य शानच् में भी अर्थ के अनुसार अस् धातु का प्रयोग करो। शानच् के बने रूप—वर्तते—वर्तमानः। यजते—यजमानः। वर्धते—वर्धमानः। मोदते—मोदमानः।

अभ्यास २७

१. उदाहरण-वाक्य :—१. वह माँग रहा है—स याचमानः अस्ति। २. स मोदमानः आसीत्। ३ः अहं वर्तमानः आसम्। ४. मयि वर्तमाने (मेरे रहते हुए) कः एतत् कर्म कुर्यात्। ५. तव किं नाम अस्ति ? ६. मम नाम देवदत्तः अस्ति। ७. सर्वेषु प्रेम कुरु। ८. व्योम्नि पक्षिणः सन्ति। ९. रजकः वस्त्राणि प्रक्षालयति। १०. नापितः क्षुरेण केशान् कृन्तति। ११. वर्षे षड् ऋतवः, द्वादश मासाः च भवन्ति। १२. स मधुरं वचनं शृणुयात्, त्वं शृणुयाः, अहं च शृणुयाम्। १३. सभाषणं श्रोष्यति।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. वह प्रसन्न हो रहा है। २. वह माँग रहा था। ३. तू विद्यमान था। ४. तू बढ़ रहा है। ५. तेरे रहते हुए कौन दुष्ट यह काम कर सकता है ? ६. आपका क्या नाम है ? ७. मेरा नाम दयानन्द है। ८. इसका क्या नाम है ? ९. शिष्यों पर, पुत्रों पर और मित्रों पर प्रेम करो। १०. सब पर प्रेम करो। ११. आकाश स्वच्छ है। १२. आकाश में हंस हैं। १३. वह कल आया था और आज गया। १४. तुम आज जाओ और कल आना। १५. वर्ष में ६ ऋतुएँ और १२ मास होते हैं। १६. इस नगर में सुनार, लोहार, कुम्हार, धोवी, नाई, चमार और बहेलिये सभी रहते हैं। १७. नाई उस्तरे से बाल काटता है। १८. धोवी वस्त्रों को धोवे। १९. कुम्हार घड़ा बनाता है (रच्)। २०. लोहार लोहे को (लौहम्) पीटता है। २१. कुम्हार घड़े को पृथ्वी पर रखता है (स्थापि)। २२. बालक कपड़ा पहनता है (धारि)। २३. गुरु शिष्य को प्रेरणा देता है। (ख) २४. वह भाषण सुने। २५. तू सुन। २६. मैं सुनूं। २७. वह सुनेगा। २८. तू सुनेगा। २९. मैं सुनूँगा।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) नामः, प्रेमम्, व्योमे।	नाम, प्रेम, व्योम्नि।	शब्दरूप
(२) कुम्भकारः घटः पृथ्वीं स्थापयति।	कुम्भकारः घटं पृथ्व्यां ०।	११, ४६

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को बहुवचन में बदलो। (ख) इनके पूरे रूप लिखो—नामन्, प्रेमन्, व्योमन्। (ग) श्रु, आप् और शक् के पाँचों लकारों के रूप लिखो। (घ) इनके शानच् के रूप लिखो—याच्, मुद्, वृत्, वृध्, यज्।

५. सन्धि करो :—सद्+कर्म। सद्+पात्रम्। उद्+कृष्टः। उद्+साहः।

शब्दकोष ५४०+२०=५६०] अभ्यास २८ (व्याकरण)

(क) अग्रजः (बड़ा भाई), अनुजः (छोटा भाई), पितृव्यः (चाचा), मातुलः (मामा), पितामहः (दादा), मातामहः (नाना), पौत्रः (पोता), श्वशुरः (श्वसुर)। श्वश्रूः (सास), भगिनी (वहन)। (१०)। (ख) क्री (खरीदना), ग्रह् (ग्रहण करना), [ज्ञा (जानना),] शुभ् (शोभित होना)। (३)। (घ) कति (कितने), श्वेत (सफेद), हरित (हरा), रक्त (लाल), कृष्ण (काला), पीत (पीला), नील (नीला)। (७)।

सूचना—(क) अग्रज—श्वशुर, रामवत्। (ख) क्री—ज्ञा, क्री के तुल्य।

व्याकरण (एक, द्वि; तुमुन्, क्री धातु, विसर्गसंधि)

१. एक और द्वि शब्द के तीनों लिंगों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ४२–४३)।

२. क्री और ज्ञा धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३७–३८)। क्री के तुल्य ही ज्ञा और ग्रह् धातु के रूप चलाओ।

३. 'कति' के रूप वहुवचन में ही चलते हैं:—कति कति कतिभिः कतिभ्यः कतिभ्यः कतीनाम् कतिषु।

४. अग्रज आदि के स्त्रीलिंग वोधक शब्द ये हैं—अग्रजा (वड़ी वहन), अनुजा (छोटी वहन), पितृव्या, मातुलानी, पितामही, मातामही, पौत्री।

५. १ से १० तक क्रमवाची संख्या-शब्द ये हैं:—प्रथमः (पहला), द्वितीयः, तृतीयः, चतुर्थः, पंचमः, षष्ठः, सप्तमः, अष्टमः, नवमः, दशमः।

नियम ७०—(विसर्जनीयस्य सः) विसर्ग के वाद वर्ग के १, २ या श ष स हों तो विसर्ग को स् हो जाता है। (श् या चवर्ग वाद में हो तो स् को श् हो जाएगा)। जैसे—रामः+तिष्ठति=रामस्तिष्ठति। कः+चित्=कश्चित्। रामः+च=रामश्च।

*नियम ७१—को, के लिए, अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है। तुमुन् का तुम् शेष रहता है। यह अव्यय होता है, अतः इसके रूप नहीं चलते हैं। धातु को गुण होता है। जैसे—कृ—कर्तुम् (करने को), पठितुम् (पढ़ने को), लेखितुम् (लिखने को), स्नातुम् (नहाने को)। इन धातुओं के ये रूप होते हैं—हृ—हर्तुम्। धृ—धर्तुम्। रुद्—रोदितुम्। गम्—गन्तुम्। हन्—हन्तुम्। पच्—पक्तुम्। खाद्—खादितुम्। छिद्—छेत्तुम्। दा—दातुम्। पा—पातुम्। नी—नेतुम्। दृश्—द्रष्टुम्। वह्—वोढुम्। सह्—सोढुम्। प्रच्छ्—प्रष्टुम्।

अभ्यास २८

१. उदाहरण-वाक्य :—१. मैं पढ़ना चाहता हूँ—अहं पठितुम् इच्छामि। २. अहं कार्यं कर्तुं शक्नोमि। ३. स पुस्तकं पठितुम्, गृहं गन्तुम्, भोजनं खादितुम्, धनं दातुम्, भारं नेतुम्, शिष्यं द्रष्टुम्, प्रश्नं प्रष्टुम्, दुःखं सोढुम्, जलं पातुम्, भारं वोढुम् इच्छति। ४. एकः बालकः, एका बालिका, एकं पुस्तकं चात्र सन्ति। ५. एकस्मै बालकाय, एकस्यै बालिकायै च फलं देहि। ६. एकस्मिन् वने एकः सिंहः वसति स्म। ७. द्वौ छात्रौ, द्वे बालिके, द्वे पुस्तके चात्र सन्ति। ८. स वस्त्रं क्रीणाति, क्रीणातु, अक्रीणात् वा। ९. स धर्मं जानाति, जानातु, अजानात् वा। १०. स धनं गृह्णाति।

२. संस्कृत बनाओ :–(क) १. बड़ा भाई घर को जाना चाहता है। २. छोटा भाई पुस्तक पढ़ना चाहता है। ३. बहन काम करना चाहती है। ४. मैं पढ़ने को विद्यालय जाता हूँ। ५. चाचा, दादा और मामा भोजन खाने को घर जाते हैं। ६. मेरा पौत्र यह काम कर सकता है। ७. राम पाठ पढ़ने को, फल खाने को, प्रश्न पूछने को, लेख लिखने को, जल पीने को, भोजन खाने को और खेल देखने को वहाँ जाता है। ८. वह पुस्तक रखने को (धृ), धन ले जाने को, शत्रु को मारने को, वृक्ष काटने को (छिद्) और नहाने को यहाँ आता है। (ख) ९. यहाँ पर एक बालक, एक कन्या और एक पीला फूल हैं। १०. एक शिष्य और एक बालिका को यह लाल पुस्तक दो। ११. एक वन में एक बाघ रहता था। १२. वहाँ पर दो शिष्य, दो बालिकाएँ और दो नीली पुस्तकें हैं। (ग) १३. वह हरी पुस्तक खरीदता है। १४. तू फल खरीदता है। १५. मैं सफेद वस्त्र खरीदता हूँ। १६. वह अन्न खरीदे। १७. उसने पशु खरीदा। १८. वह धर्म को जानता है। १९. तू सत्य को जान। २०. मैं पुस्तक को ग्रहण करूँ।

३. अशुद्ध	शुद्ध	नियम
(१) लिखितुम्, प्रच्छितुम्, दर्शितुम्।	लेखितुम्, प्रष्टुम्, द्रष्टुम्।	७१
(२) क्रयति, जानति, जान।	क्रीणाति, जानाति, जानीहि।	धातुरूप

४. अभ्यास :—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) एक और द्वि शब्द के तीनों लिंगों के पूरे रूप लिखो। (ग) क्री, ज्ञा, ग्रह् के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो। (घ) इनके तुमुन् के रूप लिखो—कृ, गम्, पठ्, लिख्, दृश्, नी, दा, पा।

५. सन्धि करो :—हरिः+तत्र। कः+तिष्ठति। रामः+च। हरिः+च।

शब्दकोष ५६०+२०=५८०] अभ्यास २९ (व्याकरण)

(क) पाचकः (रसोइया), सूपः (दाल), शाकः (साग), रोटिका (रोटी), शर्करा (शक्कर), लप्सिका (हलुआ)। भक्तम् (भात), पायसम् (खीर), मिष्टान्नम् (मिठाई), पक्वान्नम् (पकवान), नवनीतम् (मक्खन), घृतम् (घी), लवणम् (नमक), वासरः (दिन)। (१४)। (घ) शतम् (सौ), सहस्रम् (हजार), लक्षम् (लाख), कोटिः (करोड़), अधिकम् (अधिक), न्यूनम् (कम)। (६)

व्याकरण (त्रि, चतुर्; क्त्वा, ल्यप्; उत्व संधि)

१. त्रि और चतुर् शब्द के तीनों लिंग के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ४४—४५)।

२. क्री और ज्ञा धातु के विधिलिङ और लृट् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३७—३८)।

३. २० आदि के लिए संस्कृत शब्द ये हैं—विंशतिः (२०), त्रिंशत् (३०), चत्वारिंशत् (४०), पंचाशत् (५०), षष्टिः (६०), सप्ततिः (७०), अशीतिः (८०), नवतिः (९०)।

४. सात दिन ये हैं—रविवारः, सोमवारः मंगलवारः, बुधवारः, बृहस्पतिवारः, शुक्रवारः, शनिवारः।

नियम ७२—(ससजुषो रुः) शब्द के अन्तिम स् को रु (र्) हो जाता है। सूचना—प्रथमा के एकवचन में इसी र् का विसर्ग दिखाई देता है। संधि में यह 'र्' अ आ के अतिरिक्त अन्य स्वरों के बाद रहेगा। जैसे—हरिः+अवदत्=हरिरवदत्। गुरुः+अस्ति=गुरुरस्ति। वधूः+एषा=वधूरेषा। गुरोः+भाषणम्=गुरोर्भाषणम्।

* **नियम ७३**—(अतो रोरप्लुतादप्लुते) अः को ओ हो जाता है, बाद में अ हो तो। अर्थात् अः+अ=ओऽ। जैसे—कः+अपि=कोऽपि। कः+अस्ति=कोऽस्ति। कः+अयम्=कोऽयम्। सः+अपठत्=सोऽपठत्।

* **नियम ७४**—'कर' या 'करके' के अर्थ में क्त्वा (त्वा) प्रत्यय होता है। इसका त्वा बचता है। इसके रूप नहीं चलेंगे, अव्यय है। जैसे, पढ़कर—पठित्वा। इसी प्रकार कृ—कृत्वा, हृ—हृत्वा, लिख्—लिखित्वा, गम्—गत्वा, हन्—हत्वा, नम्—नत्वा, दा—दत्त्वा, ब्रू—उक्त्वा, स्वप्—सुप्त्वा, ग्रह्—गृहीत्वा, प्रच्छ्—पृष्ट्वा, वस्—उषित्वा, दृश्—दृष्ट्वा, पच्—पक्त्वा, खाद्—खादित्वा, पा—पीत्वा, लभ्—लब्ध्वा।

* **नियम ७५**—यदि कोई उपसर्ग (प्र, निर्, सम्, वि आदि) धातु से पहले हो तो त्वा के स्थान पर ल्यप् (य) होगा। जैसे—आदाय (लेकर), विक्रीय (बेचकर), आगम्य (आकर), प्रहृत्य (प्रहार करके), विहृत्य (घूमकर), आनीय (लाकर), आहूय (बुलाकर)।

अभ्यास २९

१. उदाहरण-वाक्य :—१. वह पढ़कर घर जाता है—स पठित्वा गृहं गच्छति। २. स स्नात्वा, पठित्वा, लिखित्वा, भोजनं खादित्वा, जलं पीत्वा च विद्यालयं गच्छति। ३. स धनम् आदाय, फलानि विक्रीय, शत्रुं प्रहृत्य, गृहम् आगम्य तिष्ठति। ४. त्रयः छात्राः, तिस्रः बालिकाः, त्रीणि फलानि चात्र सन्ति। ५. चत्वारः शिष्याः, चतस्रः कन्याः, चत्वारि पुस्तकानि च तत्र सन्ति। ६. स वस्त्रं क्रीणीयात्, पुस्तकं गृह्णीयात्, धर्मं जानीयात् च। ७. स पुस्तकं क्रेष्यति, वस्त्रं ग्रहीष्यति, धर्मं ज्ञास्यति च।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. छात्र पाठ पढ़कर, लेख लिखकर, भोजन खा कर और जल पीकर विद्यालय को जाता है। २. बालक नहाकर, ईश्वर को नमस्कार कर, रोटी भात दाल साग खाकर और पुस्तक लेकर (ग्रह्) पाठशाला को गया। ३. रसोइया भात दाल रोटी साग हलुआ और खीर पकाकर छात्रों को देता है। ४. राम मिठाई, पकवान, मक्खन, घी, दूध और चीनी खाकर यहाँ आता है। ५. कृष्ण वाटिका को देखकर, बालक को धन देकर, पुस्तकें पाकर (लभ्), प्रश्न पूछकर और वचन कहकर (ब्रू) यहाँ आया। ६. १०० छात्र, १ हजार पुस्तकें और १ लाख मनुष्य। ७. साग में नमक कुछ कम है। ८. सप्ताह में सात दिन होते हैं—रविवार, सोमवार आदि। (ख) ९. ३ शिष्य, ३ लड़कियाँ और ३ फूल वहाँ हैं। १०. ४ मनुष्य, ४ बालिकाएँ और ४ पुस्तकें यहाँ हैं। ११. ४ छात्रों और ४ छात्राओं को ४ पुस्तकें दो। (ग) १२. वह फल खरीदे। १३. तू वस्त्र खरीद। १४. मैं पुस्तक खरीदूँ। १५. वह फल खरीदेगा। १६. वह धर्म को जाने।

३.	अशुद्ध	शुद्ध	नियम
(१)	पात्वा, नमित्वा, ग्रहित्वा।	पीत्वा, नत्वा, गृहीत्वा।	७४
(२)	पश्यत्वा, दात्वा, ब्रूत्वा।	दृष्ट्वा, दत्त्वा, उक्त्वा।	७४

४. अभ्यास—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) त्रि, चतुर् के तीनों लिंगों के पूरे रूप लिखो। (ग) क्री, ग्रह्, ज्ञा के विधिलिङ्ग और लृट् के रूप लिखो। (घ) इनके क्त्वा (त्वा) प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—पठ्, लिख्, गम्, हन्, स्ना, खाद्, पच्, दृश्, लभ्, प्रच्छ्, ब्रू, वस्, ग्रह्, दा, पा।

५. सन्धि करो :—(क) कः+अपि। देवः+अधुना। सः+अयम्। रामः +अवदत्। (ख) हरिः+अगच्छत्। शिशुः+आगच्छत्। पितुः+इच्छा।

शब्दकोष ५८०+२०=६००]　　　　अभ्यास ३०　　　　　　(व्याकरण)

(क) यानम् (सवारी), संस्करणम् (१. पुस्तक आदि का संस्करण, २. सफाई)। आम्रम् (आम), दाडिमम् (अनार), द्राक्षाफलम् (अंगूर), बदरीफलम् (बेर), कदलीफलम् (केला), जम्बूफलम् (जामुन), बिल्वफलम् (बेल)। कंचुकः (कुर्ता), उत्तरीयः (चादर,) कम्बलः (कम्बल), पादयामः (पाजामा), आभूषणम् (गहना), अधोवस्त्रम् (धोती), अंगप्रोक्षणम् (अंगोछा), मुखप्रोक्षणम् (रूमाल), शाटिका (साड़ी), शय्या (बिस्तर), उपानत् (जूता)। (२०)।

व्याकरण (पंचन् से दशन्; तव्य, अनीय, ल्युट्; उत्वसंधि)

१. पंचन् से दशन् तक के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ४७—५१)।

२. आम्र आदि नपुंसक लिंग होंगे तो इनका अर्थ आम आदि फल होगा। पुंलिंग आम्रः, दाडिमः आदि का अर्थ आम आदि का वृक्ष होगा।

नियम ७६—(हशि च) अः को ओ हो जाता है, बाद में वर्ग के ३, ४, ५, ह, य, व, र, ल, कोई हों तो। जैसे—रामः+गच्छति=रामो गच्छति। कृष्णः+वदति +कृष्णो वदति। कः+वा=को वा। बालः+लिखति=बालो लिखति।

* **नियम ७७**—(एतत्तदोः सुलोपः ०) एषः और सः के विसर्ग का लोप हो जाता है, बाद में कोई व्यंजन हो तो। जैसे—सः+पठति=स पठति। सः+लिखति =स लिखति। सः+गच्छति=स गच्छति। एषः+गच्छति=एष गच्छति।

नियम ७८—'चाहिए' अर्थ में धातु के साथ 'तव्य' प्रत्यय लगता है। धातु को गुण होता है। जैसे—कृ+तव्य=कर्तव्यम् (करना चाहिए)। इसीप्रकार हर्तव्यम्, पठितव्यम्, लेखितव्यम्, गन्तव्यम्, हसितव्यम्, खादितव्यम्, वक्तव्यम्।

नियम ७९—'चाहिए' अर्थ में धातु के साथ 'अनीय' प्रत्यय भी लगता है। धातु को गुण होता है। तव्य और अनीय के साथ कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा होगी। इनके रूप कर्म के अनसार चलेंगे। जैसे—मया भोजनं कर्तव्यं करणीयं वा। त्वया पुस्तकानि पठितव्यानि, पठनीयानि वा। मया लेखः लेखनीयः।

नियम ८०—भाववाचक शब्द बनाने के लिए धातु के ल्युट् (अन) प्रत्यय होता है। ल्युट् का 'अन' बचता है। गुण होता है। नपुंसक ० में ही रूप चलेगा। जैसे, कृ—करणम् (करना)। इसी प्रकार पठनम्, गमनम्, लेखनम्, भाषणम्, हरणम्, मरणम्, स्थानम् आदि।

अभ्यास ३०

१. उदाहरण-वाक्य :—१. मुझे पुस्तक पढ़नी चाहिए—मया पुस्तकं पठितव्यं पठनीयं वा। २. मया भोजनं खादितव्यम्। ३. त्वया ग्रामः गन्तव्यः। ४. त्वया मया अस्माभिः वा कार्यं करणीयं कर्तव्यं वा। ५. त्वया पुस्तकानि पठनीयानि। ६. अस्मिन् वने आम्राः, दाडिमाः, वदर्यः, कदल्यः, विल्वाः च (इनके वृक्ष) सन्ति। ७. अस्मिन् उपवने (वगीचे में) आम्राणि, दाडिमानि, द्राक्षाफलानि, कदलीफलानि (इनके फल) सन्ति। ८. पंचभिः, षड्भिः, सप्तभिः, अष्टभिः वा छात्रैः एतत् कार्यं करणीयम्।

२. संस्कृत वनाओ :—(क) १. मेरे लिए सवारी लाओ। २. शरीर की सफाई करो। ३. वह प्रतिदिन (प्रतिदिनम्) आम, अनार, अंगूर और केला खाता है। ४. तू जामुन, वेल और वेर खाता है। ५. उस छात्र के पास कुर्ता, धोती, पाजामा, अँगोछा, रूमाल, चादर, कम्वल, विस्तर और जूता हैं। ६. इस लड़की के पास साड़ी, अँगोछा, रूमाल और वहुत से (वहूनि) आभूषण हैं। (ख) ७. मुझे पुस्तक पढ़नी चाहिए। ८. तुझे खाना खाना चाहिए। ९. उसे गाँव को जाना चाहिए। १०. तुझे हँसना चाहिए। ११. मुझे लेख लिखना चाहिए। १२. तुझे ग्रन्थ पढ़ना चाहिए। १३. उसे काम करना चाहिए। १४. तुझे सत्य वोलना चाहिए (वक्तव्यम्)। (ग) १५. इस वगीचे में पाँच आम, ६ अनार, ७ वेर, ८ केले और ९ वेल के पेड़ हैं। १६. पाँच छात्रों ने यह पुस्तक पढ़ी है। १७. दस छात्रों का आज भाषण होगा। १८. सदा सत्य वोलो, धर्म करो, यत्न करो, सुखी हो और सदा यश पाओ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अहं भोजनं खादितव्यः।	मया भोजनं खादितव्यम्।	७९
(२) स कार्यं कर्तव्यः।	तेन कार्यं कर्तव्यम्।	७९

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को वहुवचन में वदलो। (ख) पंचन् से दशन् तक के पूरे रूप लिखो। (ग) इन धातुओं के तव्य, अनीय और ल्युट् प्रत्यय लगाकर रूप लिखो—कृ, हृ, धृ, भृ, पठ्, लिख्, गम्, हस्, खाद्।

५. सन्धि करो :—शिष्यः+गच्छति। रामः+लिखति। वालकः+वदति। रामः+जयति। देवः+हसति। सः+पठति। सः+लिखति। सः+गच्छति।

व्याकरण

आवश्यक निर्देश

१. जिन शब्दों और धातुओं के तुल्य अन्य शब्दों और धातुओं के रूप चलते हैं, उनके रूपों के सामने उनका संक्षिप्त रूप दिया गया है। संक्षिप्त रूप का भाव यह है कि उस प्रकार के सभी शब्दों या धातुओं के अन्त में वह अंश रहेगा। अतः उस प्रकार से चलनेवाले सभी शब्दों और धातुओं के अन्त में संक्षिप्त रूप लगाकर रूप बनावें। संक्षिप्त रूपों को शुद्ध स्मरण कर लें।

२. शब्दों और धातुओं के रूप के साथ अभ्यासों की संख्यायें दी गई हैं। उसका भाव यह है कि उस शब्द या धातु का प्रयोग उस अभ्यास में हुआ है और उस प्रकार से चलनेवाले शब्द या धातु भी उसी अभ्यास में दिये हुए हैं।

३. संक्षेप के लिए निम्नलिखित संकेतों का उपयोग किया गया है :—

(क) शब्दरूपों में प्रथमा आदि के लिए उनके प्रथम अक्षर रक्खे गये हैं। जैसे—प्र०—प्रथमा, द्वि०—द्वितीया, तृ०—तृतीया, च०—चतुर्थी, पं०—पंचमी, ष०—षष्ठी; स०—सप्तमी, सं०—संबोधन।

(ख) पुं०—पुंलिंग, स्त्री०—स्त्रीलिंग, नपुं०—नपुंसक लिंग। एक०—एकवचन, द्वि०—द्विवचन, वहु०—वहुवचन। प्रत्येक शब्द और धातु के रूप में ऊपर से नीचे की ओर प्रथम पंक्ति एकवचन की हैं, दूसरी द्विवचन की और तीसरी वहुवचन की। जो शब्द किसी विशेष वचन में ही चलते हैं, उनमें उसी वचन के रूप हैं। दे०—देखो। अ०—अभ्यास।

(ग) धातुरूपों में प्र० पु०—प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष), म० पु०—मध्यम पुरुष, उ० पु०—उत्तम पुरुष। प० —परस्मैपद, आ०—आत्मनेपद, उ०—उभयपद।

४. सर्वनाम शब्दों का संबोधन नहीं होता, अतः उनके रूप संबोधन में नहीं होते।

५. संक्षिप्त रूपों में न का ण हो जाता है, यदि वह र् या ष् के वाद होता है। यदि र् या ष् के वाद और न के पहले स्वर, ह य व र, कवर्ग, पवर्ग, न, बीच में हों तो भी न का ण हो जायेगा। संक्षिप्तरूपों में न ही रक्खा गया है, वही सर्वसाधारण है। (देखो अभ्यास ५ में नियम १०)।

(१) शब्दरूप-संग्रह

(१) राम (राम) अकारान्त पुंलिंग				(१) राम (संक्षिप्त रूप) (देखो अभ्यास ५)		
रामः	रामौ	रामाः	प्र०	अः	औ	आः
रामम्	,,	रामान्	द्वि०	अम्	,,	आन्
रामेण	रामाभ्याम्	रामैः	तृ०	एन	आभ्याम्	ऐः
रामाय	,,	रामेभ्यः	च०	आय	,,	एभ्यः
रामात्	,,	,,	पं०	आत्	,,	,,
रामस्य	रामयोः	रामाणाम्	ष०	अस्य	अयोः	आनाम्
रामे	,,	रामेषु	स०	ए	,,	एषु
हे राम	हे रामौ	हे रामाः	सं०	अ	औ	आः

(२) हरि (विष्णु) इकारान्त पु०				(२) हरि (सं० रूप) (दे० अ० ८)		
हरिः	हरी	हरयः	प्र०	इः	ई	अयः
हरिम्	,,	हरीन्	द्वि०	इम्	,,	ईन्
हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः	तृ०	इना	इभ्याम्	इभिः
हरये	,,	हरिभ्यः	च०	अये	,,	इभ्यः
हरेः	,,	,,	पं०	एः	,,	,,
,,	हर्योः	हरीणाम्	ष०	,,	योः	ईनाम्
हरौ	,,	हरिषु	स०	औ	,,	इषु
हे हरे	हे हरी	हे हरयः	सं०	ए	ई	अयः

(३) गुरु (गुरु) उकारान्त पुं०				(३) गुरु (सं० रूप) (दे० अ० ९)		
गुरुः	गुरू	गुरवः	प्र०	उः	ऊ	अवः
गुरुम्	,,	गुरून्	द्वि०	उम्	,,	ऊन्
गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः	तृ०	उना	उभ्याम्	उभिः
गुरवे	,,	गरुभ्यः	च०	अवे	,,	उभ्यः
गुरोः	,,	,,	पं०	ओः	,,	,,
,,	गुर्वोः	गुरूणाम्	ष०	,,	वोः	ऊनाम्
गुरौ	,,	गुरुषु	स०	औ	,,	उषु
हे गुरो	हे गुरू	हे गुरवः	सं०	ओ	ऊ	अवः

(४) कर्तृ (करनेवाला) ऋकारान्त पुं०

कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	प्र०
कर्तारम्	,,	कर्तॄन्	द्वि०
कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः	तृ०
कर्त्रे	,,	कर्तृभ्यः	च०
कर्तुः	,,	,,	पं०
,,	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्	ष०
कर्तरि	,,	कर्तृषु	स०
हे कर्तः	हे कर्तारौ	हे कर्तारः	सं०

(४) कर्तृ (सं० रूप) (दे० अ० १५)

आ	आरौ	आरः
आरम्	,,	ॠन्
रा	ऋभ्याम्	ऋभिः
रे	,,	ऋभ्यः
उः	,,	,,
,,	रोः	ॠणाम्
अरि	,,	ऋषु
अः	आरौ	आरः

(५) पितृ (पिता) ऋकारान्त पुं०

पिता	पितरौ	पितरः	प्र०
पितरम्	,,	पितॄन्	द्वि०
पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः	तृ०
पित्रे	,,	पितृभ्यः	च०
पितुः	,,	,,	पं०
,,	पित्रोः	पितॄणाम्	ष०
पितरि	,,	पितृषु	स०
हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः	सं०

(५) पितृ (सं० रूप) (दे० अ० १६)

आ	अरौ	अरः
अरम्	,,	ॠन्

शेष कर्तृवत् (दे० शब्द ४)

(६) गो (गाय या बैल) ओकारान्त पुं० स्त्री०

गौः	गावौ	गावः	प्र०
गाम्	,,	गाः	द्वि०
गवा	गोभ्याम्	गोभिः	तृ०
गवे	,,	गोभ्यः	च०
गोः	,,	,,	पं०
,,	गवोः	गवाम्	ष०
गवि	,,	गोषु	स०
हे गौः	हे गावौ	हे गावः	सं०

सूचना :—

साधारणतया (द्यो शब्द को छोड़कर) अन्य कोई शब्द गो शब्द के तुल्य नहीं चलता।

(७) भूभृत् (राजा, पर्वत) तकारान्त पुं०				(७) भूभृत् (सं० रूप)		
भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः	प्र०	त्	तौ	तः
भूभृतम्	,,	,,	द्वि०	तम्	,,	,,
भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः	तृ०	ता	द्भ्याम्	द्भिः
भूभृते	,,	भूभृद्भ्यः	च०	ते	,,	द्भ्यः
भूभृतः	,,	,,	पं०	तः	,,	,,
,,	भूभृतोः	भूभृताम्	ष०	,,	तोः	ताम्
भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु	स०	ति	,,	त्सु
हे भूभृत्	हे भूभृतौ	हे भूभृतः	सं०	त्	तौ	तः

(८) भगवत् (भगवान्) तकारान्त पुं०				(८) भगवत् (सं०रूप) (दे०अ०१७)		
भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः	प्र०	आन्	अन्तौ	अन्तः
भगवन्तम्	,,	भगवतः	द्वि०	अन्तम्	,,	अतः
भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः	तृ०	ता	द्भ्याम्	द्भिः
भगवते	,,	भगवद्भ्यः	च०	ते	,,	द्भ्यः
भगवतः	,,	,,	पं०	तः	,,	,,
,,	भगवतोः	भगवताम्	ष०	,,	तोः	ताम्
भगवति	,,	भगवत्सु	स०	ति	,,	त्सु
हे भगवन्	हे भगवन्तौ	हे भगवन्तः	सं०	अन्	अन्तौ	अन्तः

(९) गच्छत् (जाता हुआ) तकारान्त पुं०				(९) गच्छत् (सं० रू०) (दे०अ०२०)		
गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः	प्र०	अन्	अन्तौ	अन्तः
गच्छन्तम्	,,	गच्छतः	द्वि०	शेष भगवत् के तुल्य (देखो शब्द ८)		
गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः	तृ०			
गच्छते	,,	गच्छद्भ्यः	च०			
गच्छतः	,,	,,	पं०			
,,	गच्छतोः	गच्छताम्	ष०			
गच्छति	,,	गच्छत्सु	स०			
हे गच्छन्	हे गच्छन्तौ	हे गच्छन्तः	सं०			

(१०) करिन् (हाथी) इन्नन्त पुं०

करी	करिणौ	करिणः	प्र०
करिणम्	"	"	द्वि०
करिणा	करिभ्याम्	करिभिः	तृ०
करिणे	"	करिभ्यः	च०
करिणः	"	"	पं०
"	करिणोः	करिणाम्	ष०
करिणि	"	करिषु	स०
हे करिन्	हे करिणौ	हे करिणः	सं०

(१०) करिन् (सं०रूप) (दे०अ०१८)

ई	इनौ	इनः
इनम्	"	"
इना	इभ्याम्	इभिः
इने	"	इभ्यः
इनः	"	"
"	इनोः	इनाम्
इनि	"	इषु
इन्	इनौ	इनः

(११) पथिन् (मार्ग) इन्नन्त पुं०

पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः	प्र०
पन्थानम्	"	पथः	द्वि०
पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः	तृ०
पथे	"	पथिभ्यः	च०
पथः	"	"	पं०
"	पथोः	पथाम्	ष०
पथि	पथोः	पथिषु	स०
हे पन्थाः	हे पन्थानौ	हे पन्थानः	सं०

सूचना—साधारणतया पथिन् शब्द के तुल्य अन्य किसी शब्द के रूप नहीं चलते हैं।

(१२) आत्मन् (आत्मा) अन्नन्त पुं०

आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः	प्र०
आत्मानम्	"	आत्मनः	द्वि०
आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः	तृ०
आत्मने	"	आत्मभ्यः	च०
आत्मनः	"	"	पं०
"	आत्मनोः	आत्मनाम्	ष०
आत्मनि	"	आत्मसु	स०
हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मानः	सं०

(१२) आत्मन् (सं० रूप)

आ	आनौ	आनः
आनम्	"	अनः
अना	अभ्याम्	अभिः
अने	"	अभ्यः
अनः	"	"
"	अनोः	अनाम्
अनि	"	असु
अन्	आनौ	आनः

(१३) राजन् (राजा) अन्नन्त पुं० (१३) राजन् (सं०रूप) (दे० अ० १९)

राजा	राजानौ	राजानः	प्र०	आ	आनौ	आनः
राजानम्	,,	राज्ञः	द्वि०	आनम्	,,	नः
राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः	तृ०	ना	अभ्याम्	अभिः
राज्ञे	,,	राजभ्यः	च०	ने	,,	अभ्यः
राज्ञः	,,	,,	पं०	नः	,,	अभ्यः
,,	राज्ञोः	राज्ञाम्	ष०	,,	नोः	नाम्
राज्ञि, राजनि	,,	राजसु	स०	नि, अनि	,,	असु
हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः	सं०	अन्	आनौ	आनः

(१४) विद्वस् (विद्वान्) असन्त पुं०

विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः	प्र०
विद्वांसम्	,,	विदुषः	द्वि०
विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः	तृ०
विदुषे	,,	विद्वद्भ्यः	च०
विदुषः	,,	,,	पं०
,,	विदुषोः	विदुषाम्	ष०
विदुषि	,,	विद्वत्सु	स०
हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः	सं०

सूचना—साधारणतया अन्य किसी शब्द के रूप विद्वस् के तुल्य नहीं चलते हैं।

(१५) रमा (लक्ष्मी) आकारान्त स्त्री० (१५) रमा (सं० रूप) (दे० अ० ७)

रमा	रमे	रमाः	प्र०	आ	ए	आः
रमाम्	,,	,,	द्वि०	आम्	,,	,,
रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः	तृ०	अया	आभ्याम्	आभिः
रमायै	,,	रमाभ्यः	च०	आयै	,,	आभ्यः
रमायाः	,,	,,	पं०	आयाः	,,	,,
,,	रमयोः	रमाणाम्	ष०	,,	अयोः	आनाम्
रमायाम्	,,	रमासु	स०	आयाम्	,,	आसु
हे रमे	हे रमे	हे रमाः	सं०	ए	ए	आः

(१६) मति (बुद्धि) इकारान्त स्त्री० (१६) मति (सं० रूप) (दे० अ० २१)

मतिः	मती	मतयः	प्र०	इः	ई	अयः
मतिम्	,,	मतीः	द्वि०	इम्	,,	ईः
मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः	तृ०	या	इभ्याम्	इभिः
मत्यै, मतये	,,	मतिभ्यः	च०	यै, अये	,,	इभ्यः
मत्याः, मतेः	,,	,,	पं०	याः, एः	,,	,,
,, ,,	मत्योः	मतीनाम्	ष०	,, ,,	योः	ईनाम्
मत्याम्, मतौ	,,	मतिषु	स०	याम्, औ	,,	इषु
हे मते	हे मती	हे मतयः	सं०	ए	ई	अयः

(१७) नदी (नदी) ईकारान्त स्त्री० (१७) नदी (सं०रूप) (दे० अ० २२)

नदी	नद्यौ	नद्यः	प्र०	ई	यौ	यः
नदीम्	,,	नदीः	द्वि०	ईम्	,,	ईः
नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः	तृ०	या	ईभ्याम्	ईभिः
नद्यै	,,	नदीभ्यः	च०	यै	,,	ईभ्यः
नद्याः	,,	,,	पं०	याः	,,	,,
,,	नद्योः	नदीनाम्	ष०	,,	योः	ईनाम्
नद्याम्	,,	नदीषु	स०	याम्	,,	ईषु
हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः	सं०	इ	यौ	यः

(१८) स्त्री (स्त्री) ईकारान्त स्त्री०

स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः	प्र०
स्त्रियम्, स्त्रीम्	,,	स्त्रियः, स्त्रीः	द्वि०
स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः	तृ०
स्त्रियै	,,	स्त्रीभ्यः	च०
स्त्रियाः	,,	,,	पं०
,,	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्	ष०
स्त्रियाम्	,,	स्त्रीषु	स०
हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः	सं०

सूचना—स्त्री शब्द के तुल्य अन्य किसी शब्द के रूप नहीं चलते हैं।

(१९) धेनु (गाय) उकारान्त स्त्री० (१९) धेनु (सं० रूप) (दे० अ० २३)

धेनुः	धेनू	धेनवः	प्र०	उः	ऊ	अवः
धेनुम्	,,	धेनूः	द्वि०	उम्	,,	ऊः
धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः	तृ०	वा	उभ्याम्	उभिः
धेन्वै, धेनवे	,,	धेनुभ्यः	च०	वै, अवे	,,	उभ्यः
धेन्वाः, धेनोः	,,	,,	पं०	वाः, ओः	,,	,,
,, ,,	धेन्वोः	धेनूनाम्	ष०	,, ,,	ओः	ऊनाम्
धेन्वाम्, धेनौ	,,	धेनुषु	स०	वाम्, औ	,,	उषु
हे धेनो	हे धनू	हे धेनवः	सं०	ओ	ऊ	अवः

(२०) वधू (वहू) ऊकारान्त स्त्री० (२०) वधू (सं० रूप)

वधूः	वध्वौ	वध्वः	प्र०	ऊः	वौ	वः
वधूम्	,,	वधूः	द्वि०	ऊम्	,,	ऊः
वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः	तृ०	वा	ऊभ्याम्	ऊभिः
वध्वै	,,	वधूभ्यः	च०	वै	,,	ऊभ्यः
वध्वाः	,,	,,	पं०	वाः	,,	,,
,,	वध्वोः	वधूनाम्	ष०	,,	वोः	ऊनाम्
वध्वाम्	,,	वधूषु	स०	वाम्	,,	ऊषु
हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः	सं०	उ	वौ	वः

(२१) मातृ (माता) ऋकारान्त स्त्री० (२१) मातृ (सं० रूप)

माता	मातरौ	मातरः	प्र०	आ	अरौ	अरः
मातरम्	,,	मातॄः	द्वि०	अरम्	,,	ॠः
मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः	तृ०	रा	ऋभ्याम्	ऋभिः
मात्रे	,,	मातृभ्यः	च०	रे	,,	ऋभ्यः
मातुः	,,	,,	पं०	उः	,,	,,
,,	मात्रोः	मातॄणाम्	ष०	,,	रोः	ॠणाम्
मातरि	,,	मातृषु	स०	अरि	,,	ऋषु
हे मातः	हे मातरौ	हे मातरः	सं०	अः	अरौ	अरः

(२२) वाच् (वाणी) चकारान्त स्त्री० (२२) वाच् (सं० रूप)

वाक्-ग्	वाचौ	वाचः	प्र०	क्, ग्	चौ	चः
वाचम्	,,	,,	द्वि०	चम्	,,	,,
वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः	तृ०	चा	ग्भ्याम्	ग्भिः
वाचे	,,	वाग्भ्यः	च०	चे	,,	ग्भ्यः
वाचः	,,	,,	पं०	चः	,,	,,
,,	वाचोः	वाचाम्	ष०	,,	चोः	चाम्
वाचि	,,	वाक्षु	स०	चि	,,	क्षु
हे वाक्-ग्	वाचौ	वाचः	सं०	क्, ग्	चौ	चः

(२३) दिश् (दिशा) शकारान्त स्त्री० (२३) दिश् (सं० रूप)

दिक्-ग्	दिशौ	दिशः	प्र०	क्-ग्	शौ	शः
दिशम्	,,	,,	द्वि०	शम्	,,	,,
दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः	तृ०	शा	ग्भ्याम्	ग्भिः
दिशे	,,	दिग्भ्यः	च०	शे	,,	ग्भ्यः
दिशः	,,	,,	पं०	शः	,,	,,
,,	दिशोः	दिशाम्	ष०	,,	शोः	शाम्
दिशि	,,	दिक्षु	स०	शि	शोः	क्षु
हे दिक्-ग्	दिशौ	दिशः	सं०	क्-ग्	शौ	शः

(२४) क्षुध् (भूख) धकारान्त स्त्री०

क्षुत्	क्षुधौ	क्षुधः	प्र०
क्षुधम्	,,	,,	द्वि०
क्षुधा	क्षुद्भ्याम्	क्षुद्भिः	तृ०
क्षुधे	,,	क्षुद्भ्यः	च०
क्षुधः	,,	,,	पं०
,,	क्षुधोः	क्षुधाम्	ष०
क्षुधि	,,	क्षुत्सु	स०
हे क्षत्	हे क्षुधौ	हे क्षुधः	सं०

सूचना—साधारणतया क्षुध् शब्द के तुल्य किसी शब्द के रूप नहीं चलते हैं।

(२५) उपानह् (जूता) हकारान्त स्त्री०

उपानत्	उपानहौ	उपानहः	प्र०
उपानहम्	,,	,,	द्वि०
उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः	तृ०
उपानहे	,,	उपानद्भ्यः	च०
उपानहः	,,	,,	पं०
,,	उपानहोः	उपानहाम्	ष०
उपानहि	,,	उपानत्सु	स०
हे उपानत्	हे उपानहौ	हे उपानहः	सं०

सूचना—साधारणतया उपानह् शब्द के तुल्य किसी शब्द के रूप नहीं चलते हैं।

(२६) गृह (घर) अकारान्त नपुं०

				(२६) गृह (सं० रूप) (दे० अ० ६)		
गृहम्	गृहे	गृहाणि	प्र०	अम्	ए	आनि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
गृहेण	गृहाभ्याम्	गृहैः	तृ०	एन	आभ्याम्	ऐः
गृहाय	,,	गृहेभ्यः	च०	आय	,,	एभ्यः
गृहात्	,,	,,	पं०	आत्	,,	,,
गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्	ष०	अस्य	अयोः	आनाम्
गृहे	,,	गृहेषु	स०	ए	,,	एषु
हे गृह	हे गृहे	हे गृहाणि	सं०	अ	ए	आनि

(२७) वारि (जल) इकारान्त नपुं०

				(२७) वारि (सं० रूप) (दे० अ० २४)		
वारि	वारिणी	वारीणि	प्र०	इ	इनी	ईनि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः	तृ०	इना	इभ्याम्	इभिः
वारिणे	,,	वारिभ्यः	च०	इने	,,	इभ्यः
वारिणः	,,	,,	पं०	इनः	,,	,,
,,	वारिणोः	वारीणाम्	ष०	,,	इनोः	ईनाम्
वारिणि	,,	वारिषु	स०	इनि	,,	इषु
हे वारि-रे	हे वारिणी	हे वारीणि	सं०	इ, ए	इनी	ईनि

(२८) दधि (दही) इकारान्त नपुं०				(२८) दधि (सं० रूप)		
दधि	दधिनी	दधीनि	प्र०	इ	इनी	ईनि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः	तृ०	ना	इभ्याम्	इभिः
दध्ने	,,	दधिभ्यः	च०	ने	,,	इभ्यः
दध्नः	,,	,,	पं०	नः	,,	,,
,,	दध्नोः	दध्नाम्	ष०	,,	नोः	नाम्
दध्नि, दधनि	,,	दधिषु	स०	नि, अनि	,,	इषु
हे दधि-धे	दधिनी	दधीनि	सं०	इ, ए	इनी	ईनि

(२९) मधु (शहद) उकारान्त नपुं०				(२९) मधु (सं० रूप) (दे० अ० २५)		
मधु	मधुनी	मधूनि	प्र०	उ	उनी	ऊनि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः	तृ०	उना	उभ्याम्	उभिः
मधुने	,,	मधुभ्यः	च०	उने	,,	उभ्यः
मधुनः	,,	,,	पं०	उनः	,,	,,
,,	मधुनोः	मधूनाम्	ष०	,,	उनोः	ऊनाम्
मधुनि	,,	मधुषु	स०	उनि	,,	उषु
हे मधु-धो	मधुनी	मधूनि	सं०	उ, ओ	उनी	ऊनि

(३०) पयस् (दूध, जल) असन्त नपुं०				(३०) पयस् (सं०रूप) (दे०अ०२६)		
पयः	पयसी	पयांसि	प्र०	अः	असी	आंसि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,
पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः	तृ०	असा	ओभ्याम्	ओभिः
पयसे	,,	पयोभ्यः	च०	असे	,,	ओभ्यः
पयसः	,,	,,	पं०	असः	,,	,,
,,	पयसोः	पयसाम्	ष०	,,	असोः	असाम्
पयसि	,,	पयःसु	स०	असि	,,	अःसु
हे पयः	हे पयसी	हे पयांसि	सं०	अः	असी	आंसि

(३१) नामन् (नाम) अन्नन्त नपुं०				(३१) नामन् (सं०रूप) (दे०अ०२७)		
नाम	नामनी	नामानि	प्र०	अ	अनी	आनि
"	"	"	द्वि०	"	"	"
नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः	तृ०	ना	अभ्याम्	अभिः
नाम्ने	"	नामभ्यः	च०	ने	"	अभ्यः
नाम्नः	"	"	पं०	नः	"	"
"	नाम्नोः	नाम्नाम्	ष०	"	नोः	नाम्
नाम्नि, नामनि	"	नामसु	स०	नि, अनि	"	असु
हे नाम, नामन्	हे नामनी	हे नामानि	सं०	अ, अन्	अनी	आनि

(३२) अहन् (दिन) अन्नन्त नपुं०			
अहः	अहनी	अहानि	प्र०
"	"	"	द्वि०
अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः	तृ०
अह्ने	"	अहोभ्यः	च०
अह्नः	"	"	पं०
"	अह्नोः	अह्नाम्	ष०
अह्नि, अहनि	"	अहःसु	स०
हे अहः	हे अहनी	हे अहानि	सं०

सूचना—अहन् शब्द के तुल्य अन्य किसी शब्द के रूप नहीं चलते हैं।

(३३) जगत् (संसार) तकारान्त नपुं०				(३३) जगत् (सं० रूप)		
जगत्	जगती	जगन्ति	प्र०	अत्	अती	अन्ति
"	"	"	द्वि०	"	"	"
जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः	तृ०	अता	अद्भ्याम्	अद्भिः
जगते	"	जगद्भ्यः	च०	अते	"	अद्भ्यः
जगतः	"	"	पं०	अतः	"	"
"	जगतोः	जगताम्	ष०	"	अतोः	अताम्
जगति	"	जगत्सु	स०	अति	"	अत्सु
हे जगत्	हे जगती	हे जगन्ति	सं०	अत्	अती	अन्ति

(३४) (क) सर्व (सब) सर्वनाम पुं० — (३४) (क) सर्व (सं० रूप) (दे० अ० १०)

सर्वः	सर्वौ	सर्वे	प्र०	अः	औ	ए
सर्वम्	,,	सर्वान्	द्वि०	अम्	,,	आन्
सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः	तृ०	एन	आभ्याम्	ऐः
सर्वस्मै	,,	सर्वेभ्यः	च०	अस्मै	,,	एभ्यः
सर्वस्मात्	,,	,,	पं०	अस्मात्	,,	,,
सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	ष०	अस्य	अयोः	एषाम्
सर्वस्मिन्	,,	सर्वेषु	स०	अस्मिन्	,,	एषु

(३४) (ख) सर्व (सब) नपुं० — (३४) (ख) सर्व (सं० रूप) (देखो अ० ११)

सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	प्र०	अम्	ए	आनि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,

शेष पुंलिंग के तुल्य (देखो ३४ क) — शेष पुंलिंग के तुल्य (देखो ३४ क)

(३४) (ग) सर्व (सब) स्त्रीलिंग — (३४) (ग) सर्व (सं० रूप) (देखो अ० १२)

सर्वा	सर्वे	सर्वाः	प्र०	आ	ए	आः
सर्वाम्	,,	,,	द्वि०	आम्	,,	,,
सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः	तृ०	अया	आभ्याम्	आभिः
सर्वस्यै	,,	सर्वाभ्यः	च०	अस्यै	,,	आभ्यः
सर्वस्याः	,,	,,	पं०	अस्याः	,,	,,
,,	सर्वयोः	सर्वासाम्	ष०	,,	अयोः	आसाम्
सर्वस्याम्	,,	सर्वासु	स०	अस्याम्	,,	आसु

(३५) किम् (कौन) (देखो अ० १०–१२)

(क) पुंलिग—कः कौ के प्र०

कम् ,, कान् द्वि०

शेष सर्व (पुंलिंग) के तुल्य।

(ख) नपुं०—किम् के कानि प्र०

,, ,, ,, द्वि०

केन काभ्याम् कैः तृ०

शेष सर्व (नपुं०) के तुल्य।

(ग) स्त्रीलिंग—का के काः प्र०

काम् ,, ,, द्वि०

शेष सर्व (स्त्री०) के तुल्य।

सूचना—तीनों लिंगों में शेष सभी स्थानों पर 'क' के रूप चलेंगे।

---

(३६) तत् (वह) (दे० अ० १०-१२)

(क) पुंलिंग—सः तौ ते प्र०

तम् ,, तान् द्वि०

शेष सर्व (पुंलिंग) के तुल्य।

(ख) नपुं०—तत् ते तानि प्र०

,, ,, ,, द्वि०

तेन ताभ्याम् तैः तृ०

शेष सर्व (नपुं०) के तुल्य।

(ग) स्त्रीलिंग—सा ते ताः प्र०

ताम् ,, ,, द्वि०

शेष सर्व (स्त्री०) के तुल्य।

सूचना—तीनों लिंगों में शेष सभी स्थानों पर 'त' के रूप चलेंगे।

---

(३७) एतत् (यह) (देखो अ० १०–१२)

(क) पुंलिंग—एषः एतौ एते प्र०

एतम् ,, एतान् द्वि०

शेष सर्व (पुं०) के तुल्य।

(ख) नपुं०—एतत् एते एतानि प्र०

,, ,, ,, द्वि०

एतेन एताभ्याम् एतैः तृ०

शेष सर्व (नपुं०) के तुल्य।

(ग) स्त्रीलिंग—एषा एते एताः प्र०

एताम् ,, ,, द्वि०

शेष सर्व (स्त्री०) के तुल्य।

सूचना—तीनों लिंगों में शेष सभी स्थानों पर 'एत' के रूप चलेंगे।

---

(३८) यत् (जो) (दे० अ० १०-१२)

(क) पुंलिंग—यः यौ ये प्र०

यम् ,, यान् द्वि०

शेष सर्व (पुं०) के तुल्य।

(ख) नपुं०—यत् ये यानि प्र०

,, ,, ,, द्वि०

येन याभ्याम् यैः तृ०

शेष सर्व (नपुं०) के तुल्य।

(ग) स्त्रीलिंग—या ये याः प्र०

याम् ,, ,, द्वि०

शेष सर्व (स्त्री०) के तुल्य।

सूचना—तीनों लिंगों में शेष सभी स्थानों पर 'य' के रूप चलेंगे।

---

(३९) युष्मद् (तू) (देखो अ० १३)				(४०) अस्मद् (मैं) (दे० अ० १४)		
त्वम्	युवाम्	यूयम्	प्र०	अहम्	आवाम्	वयम्
त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः	द्वि०	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः	तृ०	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः	च०	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्	पं०	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः	ष०	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
त्वयि	युवयोः	युष्मासु	स०	मयि	आवयोः	अस्मासु

(४१) (क) इदम् (यह) पुं०				(४१) (ग) इदम् (यह) स्त्री०		
अयम्	इमौ	इमे	प्र०	इयम्	इमे	इमाः
इमम्	,,	इमान्	द्वि०	इमाम्	,,	,,
अनेन	आभ्याम्	एभिः	तृ०	अनया	आभ्याम्	आभिः
अस्मै	,,	एभ्यः	च०	अस्यै	,,	आभ्यः
अस्मात्	,,	,,	पं०	अस्याः	,,	,,
अस्य	अनयोः	एषाम्	ष०	,,	अनयोः	आसाम्
अस्मिन्	,,	एषु	स०	अस्याम्	,,	आसु

(४१) (ख) इदम् (यह) नपुं०				(४२) एक (एक) (दे० अ० २८)		
				पुंलिंग	नपुंसक०	स्त्रीलिंग
इदम्	इमे	इमानि	प्र०	एकः	एकम्	एका
,,	,,	,,	द्वि०	एकम्	,,	एकाम्
अनेन	आभ्याम्	एभिः	तृ०	एकेन	एकेन	एकया
शेष इदम् (पुं०) के तुल्य।			च०	एकस्मै	एकस्मै	एकस्यै
			पं०	एकस्मात्	एकस्मात्	एकस्याः
			ष०	एकस्य	एकस्य	,,
			स०	एकस्मिन्	एकस्मिन्	एकस्याम्

सूचना—एकवचन में ही रूप चलते हैं।

(४३) द्वि (दो) (देखो अ० २८)

पुंलिंग	नपुं०, स्त्रीलिंग	
द्वौ	द्वे	प्र०
"	"	द्वि०
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	तृ०
"	"	च०
"	"	पं०
द्वयोः	द्वयोः	ष०
"	"	स०

सूचना—केवल द्विवचन में रूप चलेंगे।

(४४) त्रि (तीन) (देखो अ० २९)

	पुं०	नपुं०	स्त्री०
प्र०	त्रयः	त्रीणि	तिस्रः
द्वि०	त्रीन्	"	"
तृ०	त्रिभिः	त्रिभिः	तिसृभिः
च०	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
पं०	"	"	"
ष०	त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्
स०	त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु

सूचना—वहु० में ही रूप चलेंगे।

---

(४५) चतुर् (चार) (देखो अ० २९)   (४६) पंचन् (पाँच) (४७) षष् (छः)

पुँ०	नपुं०	स्त्री०		पंचन्	षष्
चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः	प्र०	पञ्च	षट्
चतुरः	"	"	द्वि०	"	"
चतुर्भिः	चतुर्भिः	चतसृभिः	तृ०	पञ्चभिः	षड्भिः
चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	च०	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः
"	"	"	पं०	"	"
चतुर्णाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	ष०	पञ्चानाम्	षण्णाम्
चतुर्षु	चतुर्षु	चतसृषु	स०	पञ्चसु	षट्सु

---

(४८) सप्तन् (सात) (४९) अष्टन् (आठ) (५०) नवन् (नौ) (५१) दशन् (दस)

सप्तन्	अष्टन्			नवन्	दशन्
सप्त	अष्ट	अष्टौ	प्र०	नव	दश
"	"	"	द्वि०	"	"
सप्तभिः	अष्टभिः	अष्टाभिः	तृ०	नवभिः	दशभिः
सप्तभ्यः	अष्टभ्यः	अष्टाभ्यः	च०	नवभ्यः	दशभ्यः
"	"	"	पं०	"	"
सप्तानाम्	अष्टानाम्	अष्टानाम्	ष०	नवानाम्	दशानाम्
सप्तसु	अष्टसु	अष्टासु	स०	नवसु	दशसु

सूचना—त्रि से दशन् तक के रूप वहुवचन में ही चलेंगे। (देखो अ० २९-३०)।

(२) संख्याएँ

१ एकः, एकम्, एका
२ द्वौ, द्वे, द्वे
३ त्रयः, त्रीणि, तिस्रः
४ चत्वारः, चत्वारि, चतस्रः
५ पञ्च
६ षट्
७ सप्त
८ अष्ट, अष्टौ
९ नव
१० दश
११ एकादश
१२ द्वादश
१३ त्रयोदश
१४ चतुर्दश
१५ पञ्चदश
१६ षोडश
१७ सप्तदश
१८ अष्टादश
१९ एकोनविंशतिः
२० विंशतिः
२१ एकविंशतिः
२२ द्वाविंशतिः
२३ त्रयोविंशतिः
२४ चतुर्विंशतिः
२५ पञ्चविंशतिः
२६ षड्विंशतिः
२७ सप्तविंशतिः
२८ अष्टाविंशतिः

२९ एकोनत्रिंशत्
३० त्रिंशत्
३१ एकत्रिंशत्
३२ द्वात्रिंशत्
३३ त्रयस्त्रिंशत्
३४ चतुस्त्रिंशत्
३५ पञ्चत्रिंशत्
३६ षट्त्रिंशत्
३७. सप्तत्रिंशत्
३८ अष्टात्रिंशत्
३९ एकोनचत्वारिंशत्
४० चत्वारिंशत्
४१ एकचत्वारिंशत्
४२ द्विचत्वारिंशत्
४३ त्रित्वारिंशत्
४४ चतुश्चत्वारिंशत्
४५ पञ्चचत्वारिंशत्
४६ षट्चत्वारिंशत्
४७ सप्तचत्वारिंशत्
४८ अष्टचत्वारिंशत्
४९ एकोनपञ्चाशत्
५० पञ्चाशत्
५१ एकपञ्चाशत्
५२ द्विपञ्चाशत्
५३ त्रिपञ्चाशत्
५४ चतुःपञ्चाशत्
५५ पञ्चपञ्चाशत्
५६ षट्पञ्चाशत्

५७ सप्तपञ्चाशत्
५८ अष्टपञ्चाशत्
५९ एकोनषष्टिः
६० षष्टिः
६१ एकषष्टिः
६२ द्विषष्टिः
६३ त्रिषष्टिः
६४ चतुःषष्टिः
६५ पञ्चषष्टिः
६६ षट्षष्टिः
६७ सप्तषष्टिः
६८ अष्टषष्टिः
६९ एकोनसप्ततिः
७० सप्ततिः
७१ एकसप्ततिः
७२ द्विसप्ततिः
७३ त्रिसप्ततिः
७४ चतुःसप्ततिः
७५ पञ्चसप्ततिः
७६ षट्सप्ततिः
७७ सप्तसप्ततिः
७८ अष्टसप्ततिः
७९ एकोनाशीतिः
८० अशीतिः
८१ एकाशीतिः
८२ द्वयशीतिः
८३ त्र्यशीतिः
८४ चतुरशीतिः

८५ पञ्चाशीतिः	९१ एकनवतिः	९७ सप्तनवतिः
८६ षडशीतिः	९२ द्विनवतिः	९८ अष्टनवतिः
८७ सप्ताशीतिः	९३ त्रिनवतिः	९९ नवनवतिः
८८ अष्टाशीतिः	९४ चतुर्नवतिः	एकोनशतम्
८९ एकोननवतिः	९५ पञ्चनवतिः	१०० शतम्
९० नवतिः	९६ षण्णवतिः	

१ हजार—सहस्रम्। १० हजार—अयुतम्। १ लाख—लक्षम्। १० लाख—नियुतम्, प्रयुतम्। १ करोड़—कोटिः। १० करोड़—दशकोटिः। १ अरब—अर्बुदम्।

सूचना—१. (क) १०१ आदि संख्याओं के लिए अधिक शब्द लगाकर संख्या शब्द बनावें। जैसे—१०१ एकाधिकं शतम्। १०२ द्व्यधिकं शतम् आदि। (ख) २०० आदि के लिए दो आदि संख्यावाचक शब्द पहले रखकर बाद में 'शती' रखें, या शत पहले रखकर द्वयम्, त्रयम्, चतुष्टयम् आदि रखें। जैसे—२०० द्विशती, शतद्वयम्, ३०० त्रिशती, शतत्रयम्। ४०० चतुःशती, ५०० पञ्चशती, ६०० षट्शती, ७०० सप्तशती (हिन्दी, सतसई) आदि।

२. त्रि (३) से अष्टादशन् (१८) तक सारे शब्दों के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं। दशन् से अष्टादशन् तक के दशन् के तुल्य।

३. एकोनविंशति से नवविंशति (२९) तक सारे शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिंग हैं। इनके रूप एकवचन में ही चलते हैं। इकारान्त विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति तथा जिनके अन्त में ये हों, उनके रूप 'मति' के तुल्य चलेंगे। तकारान्त त्रिंशत्, चत्वारिंशत् के रूप स्त्रीलिंग एकवचन में चलेंगे।

४. शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम्, प्रयुतम् आदि शब्द सदा एकवचनान्त नपुंसक लिंग हैं। गृहवत् एक० में रूप चलेंगे। कोटि के मतिवत्।

५. संख्येय (क्रमवाचक विशेषण) बनाने के लिए ये नियम हैं :—(१) १ से १० तक के क्रमवाचक प्रथम द्वितीय आदि अभ्यास २८ में दिए हैं। (२) ११ से १८ तक के संख्येय शब्दों में अन्त में 'अ' लग जाता है। जैसे—एकादशः (११वाँ)। (३) १९ से आग संख्येय शब्दों के अन्त में 'तम' लगता है। जैसे—विंशतितमः (२० वाँ), त्रिंशत्तमः (३०वाँ), शततमः (१००वाँ)।

(३) धातुरूप-संग्रह

भ्वादिगण (परस्मैपदी धातुएँ)

(१) भू (होना) लट् (वर्तमान)				(१) भू (सं० रूप) (दे० अ० ५)		
भवति	भवतः	भवन्ति	प्र० पु०	अति	अतः	अन्ति
भवसि	भवथः	भवथ	म० पु०	असि	अथः	अथ
भवामि	भवावः	भवामः	उ० पु०	आमि	आवः	आमः
लोट् (आज्ञा अर्थ)				लोट् (सं० रूप) (दे० अ० ६)		
भवतु	भवताम्	भवन्तु	प्र० पु०	अतु	अताम्	अन्तु
भव	भवतम्	भवत	म० पु०	अ	अतम्	अत
भवानि	भवाव	भवाम	उ० पु०	आनि	आव	आम
लङ् (भूतकाल)				लङ् (सं० रूप) (दे० अ० ७)		
अभवत्	अभवताम्	अभवन्	प्र० पु०	अत्	अताम्	अन्
अभवः	अभवतम्	अभवत	म० पु०	अः	अतम्	अत
अभवम्	अभवाव	अभवाम	उ० पु०	अम्	आव	आम
				सूचना—धातु के पहले अ लगेगा।		
विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)				विधिलिङ् (सं०रूप) (दे०अ०८)		
भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	प्र० पु०	एत्	एताम्	एयुः
भवेः	भवेतम्	भवेत	म० पु०	एः	एतम्	एत
भवेयम्	भवेव	भवेम	उ० पु०	एयम्	एव	एम
लृट् (भविष्यत्)				लृट् (सं० रूप) (दे० अ० ९)		
भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र० पु०	इष्यति	इष्यतः	इष्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म० पु०	इष्यसि	इष्यथः	इष्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ० पु०	इष्यामि	इष्यावः	इष्यामः

सूचना—(१) कुछ धातुओं में इष्यति वाले रूप लगते हैं और कुछ में स्यति स्यतः स्यन्ति आदि विना इ वाले रूप लगते हैं।

(२) भ्वादिगण (१) की परस्मैपदी सभी धातुओं के रूप पाँचों लकारों में भू धातु के तुल्य चलते हैं। उपर्युक्त संक्षिप्त रूप अन्त में लगेंगे।

सूचना—पठ् आदि के लट् आदि में प्रारम्भिक रूप दिए गए हैं। शेष भू के तुल्य चलाओ।

(२) पठ् (पढ़ना) (दे० अ० ५–९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे।
(यहाँ केवल प्रारम्भिक रूप दिए हैं।)

(३) गम् (जाना) (दे० अ० ५–९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे। गम् को गच्छ् लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में होगा।

लट्—	पठति	पठतः	पठन्ति	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
लोट्—	पठतु	पठताम्	पठन्तु	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
लङ्—	अपठत्	अपठताम्	अपठन्	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
वि० लिङ्-	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
लृट्—	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति

(४) स्था (रुकना) (दे० अ० ५–९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे। स्था को तिष्ठ् लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में।

(५) पा (पीना) (दे० अ० ५–९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे। पा को पिब् लट्, लोट्, लङ्, विधि-लिङ् में।

लट्—	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
लोट्—	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
लङ्—	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
वि० लिङ्-	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
लृट्—	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति

(६) हस् (हँसना) (देखो अ० ५–९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे।

(७) रक्ष् (रक्षा करना) (देखो अ० ५–९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्—	हसति	हसतः	हसन्ति	रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति
लोट्—	हसतु	हसताम्	हसन्तु	रक्षतु	रक्षताम्	रक्षन्तु
लङ्—	अहसत्	अहसताम्	अहसन्	अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्
वि० लिङ्-	हसेत्	हसेताम्	हसेयुः	रक्षेत्	रक्षेताम्	रक्षेयुः
लृट्—	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति	रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति

(८) वद् (बोलना) (देखो अ०५–९) (९) पच् (पकाना) (दे० अ० ५–९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे। सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्—	वदति	वदतः	वदन्ति	पचति	पचतः	पचन्ति
लोट्—	वदतु	वदताम्	वदन्तु	पचतु	पचताम्	पचन्तु
लङ्—	अवदत्	अवदताम्	अवदन्	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
वि० लिङ्-	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
लृट्—	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति

(१०) नम् (प्रणाम करना) (दे०अ०५–९) (११) दृश् (देखना) (दे०अ०५–९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे। सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे। दृश् को पश्य् लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में।

लट्—	नमति	नमतः	नमन्ति	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
लोट्—	नमतु	नमताम्	नमन्तु	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
लङ्—	अनमत्	अनमताम्	अनमन्	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
वि० लिङ्-	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
लृट्—	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति

(१२) सद् (बैठना) (दे० अ० ५–९) (१३) स्मृ (स्मरण करना) (दे० अ० ५–९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे। सद् को सीद् लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में। सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्—	सीदति	सीदतः	सीदन्ति	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
लोट्—	सीदतु	सीदताम्	सीदन्तु	स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु
लङ्—	असीदत्	असीदताम्	असीदन्	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
वि० लिङ्-	सीदेत्	सीदेताम्	सीदेयुः	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
लृट्—	सत्स्यति	सत्स्यतः	सत्स्यन्ति	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति

(१४) जि (जीतना)। सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् के प्रथम रूप ये हैं :—जयति, जयतु, अजयत्, जयेत्, जेष्यति।

आत्मनेपदी धातुएँ

(१५) सेव् (सेवा करना) लट् (वर्तमान)				(१५) सेव् (सं. रू.) (दे० अ० १८)		
सेवते	सेवेते	सेवन्ते	प्र० पु०	अते	एते	अन्ते
सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे	म० पु०	असे	एथे	अध्वे
सेवे	सेवावहे	सेवामहे	उ० पु०	ए	आवहे	आमहे
	लोट् (आज्ञा अर्थ)			लोट् (सं० रू०) (दे० अ० १९)		
सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्	प्र० पु०	अताम्	एताम्	अन्ताम्
सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्	म० पु०	अस्व	एथाम्	अध्वम्
सेवै	सेवावहै	सेवामहै	उ० पु०	ऐ	आवहै	आमहै
	लङ् (भूतकाल)			लङ् (सं० रू०) (दे० अ० २०)		
असेवत	असेवेताम्	असेवन्त	प्र० पु०	अत	एताम्	अन्त
असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्	म० पु०	अथाः	एथाम्	अध्वम्
असेवे	असेवावहि	असेवामहि	उ० पु०	ए	आवहि	आमहि

सूचना—धातु से पहले 'अ' लगेगा।

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)				विधिलिङ् (सं०रू०) (दे०अ०२१)		
सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्	प्र० पु०	एत	एयाताम्	एरन्
सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्	म० पु०	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि	उ० पु०	एय	एवहि	एमहि
	लृट् (भविष्यत्)			लृट् (सं० रू०) (दे० अ० २२)		
सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते	प्र० पु०	इष्यते	इष्येते	इष्यन्ते
सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे	म० पु०	इष्यसे	इष्येथे	इष्यध्वे
सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे	उ० पु०	इष्ये	इष्यावहे	इष्यामहे

सूचना—(१) कुछ धातुओं में इष्यते वाले रूप लगते हैं और कुछ में स्यते स्येते स्यन्ते आदि विना इ वाले रूप लगते हैं।

(२) भ्वादिगण (१) की आत्मनेपदी सभी धातुओं के रूप पाँचों लकारों में सेव् धातु के तुल्य चलते हैं। उपर्युक्त संक्षिप्तरूप अन्त में लगेंगे।

सूचना—लभ् आदि के लट् आदि में प्रारम्भिक रूप दिए हैं। शेष सेव् के तुल्य रूप चलाओ। इनके प्रयोग के लिए देखो अभ्यास १८ से २२।

(१६) लभ् (पाना) (दे० अ० १८–२२)

सूचना—सेव् के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्	लभते	लभेते	लभन्ते
लोट्	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
लङ्	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
वि० लिङ्	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
लृट्	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते

(१७) वृध् (बढ़ना)

सूचना—सेव् के तुल्य रूप चलेंगे।

वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्
अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
वर्धिष्यते	वर्धिष्येते	वर्धिष्यन्ते

(१८) मुद् (प्रसन्न होना)

सूचना—सेव् के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्	मोदते	मोदेते	मोदन्ते
लोट्	मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्
लङ्	अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त
वि० लिङ्	मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्
लृट्	मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते

(१९) सह् (सहना)

सूचना—सेव् के तुल्य रूप चलेंगे।

सहते	सहेते	सहन्ते
सहताम्	सहेताम्	सहन्ताम्
असहत	असहेताम्	असहन्त
सहेत	सहेयाताम्	सहेरन्
सहिष्यते	सहिष्येते	सहिष्यन्ते

(२०) याच् (माँगना)

सूचना—सेव् के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्	याचते	याचेते	याचन्ते
लोट्	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
लङ्	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
वि० लिङ्	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
लृट्	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते

(२१) नी (ले जाना)।

सूचना—नी और हृ के रूप भू और सेव् दोनों के तुल्य चलते हैं। दोनों के लट्, लोट्, लङ्, विधि-लिङ्, लृट् के रूप क्रमशः ये हैं:—

परस्मैपद—नयति, नयतु, अनयत्, नयेत्, नेष्यति।

आत्मनेपद—नयते, नयताम्, अनयत, नयेत, नेष्यते।

(२२) हृ (ले जाना)—परस्मै०—हरति, हरतु, अहरत्, हरेत्, हरिष्यति।

आत्मनेपद—हरते, हरताम्, अहरत, हरेत, हरिष्यते।

(२३) अस् (होना) (दे० अ० १०–११) (२४) दा (देना) (दे०अ०२४–२५)

सूचना—अस् को लृट् में भू हो जाता है। (परस्मैपद के रूप ये हैं)

लट्				लट्		
अस्ति	स्तः	सन्ति	प्र० पु०	ददाति	दत्तः	ददति
असि	स्थः	स्थ	म० पु०	ददासि	दत्थः	दत्थ
अस्मि	स्वः	स्मः	उ० पु०	ददामि	दद्वः	दद्मः

लोट्				लोट्		
अस्तु	स्ताम्	सन्तु	प्र० पु०	ददातु	दत्ताम्	ददतु
एधि	स्तम्	स्त	म० पु०	देहि	दत्तम्	दत्त
असानि	असाव	असाम	उ० पु०	ददानि	ददाव	ददाम

लङ्				लङ्		
आसीत्	आस्ताम्	आसन्	प्र० पु०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
आसीः	आस्तम्	आस्त	म० पु०	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
आसम्	आस्व	आस्म	उ० पु०	अददाम्	अदद्व	अदद्म

विधिलिङ्				विधिलिङ्		
स्यात्	स्याताम्	स्युः	प्र० पु०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
स्याः	स्यातम्	स्यात	म० पु०	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
स्याम्	स्याव	स्याम	उ० पु०	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

लृट्				लृट्		
भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र० पु०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म० पु०	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ० पु०	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

(२५) दिव् (चमकना आदि) (दे० अ० ८)

सूचना—धातु में य लगाकर भू के तुल्य।

लट्

दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

लोट्

दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत
दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

लङ्

अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

विधिलिङ्

दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

लृट्

देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ
देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः

(२६) नृत् (नाचना) (दे०अ०८)

सूचना—दिव् के तुल्य रूप चलेंगे। नृत् आदि के केवल प्रारम्भिक रूप ये हैं।

लट्	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
लोट्	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
लङ्	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
वि० लिङ्	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
लृट्	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति

(२७) नश् (नष्ट होना) (दे० अ० ८)

सूचना—दिव् के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
लोट्	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
लङ्	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
वि० लिङ्	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
लृट्	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति

(२८) भ्रम् (घूमना) (दे० अ० ८)

सूचना—दिव् के तुल्य रूप चलेंगे। भ्रम् के रूप भू के तुल्य भी चलते हैं। जैसे—भ्रमति भ्रमतु अभ्रमत् भ्रमेत्।

लट्	भ्राम्यति	भ्राम्यतः	भ्राम्यन्ति
लोट्	भ्राम्यतु	भ्राम्यताम्	भ्राम्यन्तु
लङ्	अभ्राम्यत्	अभ्राम्यताम्	अभ्राम्यन्
वि० लिङ्	भ्राम्येत्	भ्राम्येताम्	भ्राम्येयुः
लृट्	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति

(२९) श्रु (सुनना) (दे०अ० २६–२७)
सूचना——लट्, लोट्, लङ, विधिलिङ में श्रु का शृ हो जाता है।

(३०) आप् (पाना) (दे०अ० २६–२७)
सूचना——श्रु के तुल्य रूप चलेंगे।

श्रु				आप्		
	लट्				लट्	
शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति	प्र० पु०	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ	म० पु०	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
शृणोमि	शृणुवः	शृणुमः	उ० पु०	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः
	लोट्				लोट्	
शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु	प्र० पु०	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
शृणु	शृणुतम्	शृणुत	म० पु०	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम	उ० पु०	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम
	लङ				लङ	
अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्	प्र० पु०	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत	म० पु०	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
अशृणवम्	अशृणुव	अशृणुम	उ० पु०	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम
	विधिलिङ				विधिलिङ	
शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः	प्र० पु०	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात	म० पु०	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम	उ० पु०	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम
	लृट्				लृट्	
श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति	प्र० पु०	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ	म० पु०	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः	उ० पु०	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

(३१) शक् (सकना) (देखो अ० २६-२७)। सूचना——शक् के रूप आप् के तुल्य चलेंगे। लट्, लोट्, लङ, विधिलिङ, लृट् में क्रमशः प्रथम रूप ये हैं:—शक्नोति, शक्नोतु, अशक्नोत्, शक्नुयात्, शक्ष्यति।

सूचना—तुद्, इष्, प्रच्छ्, विश् को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में गुण नहीं होगा। भू के तुल्य रूप चलेंगे।

(३२) तुद् (दुःख देना) (दे० अ० ६)

लट्

तुदति	तुदतः	तुदन्ति
तुदसि	तुदथः	तुदथ
तुदामि	तुदावः	तुदामः

लोट्

तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु
तुद	तुदतम्	तुदत
तुदानि	तुदाव	तुदाम

लङ्

अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

विधिलिङ्

तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
तुदेयम्	तुदेव	तुदेम

लृट्

तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

———

(३३) इष् (चाहना) (दे० अ० ६)

सूचना—भू या तुद् के तुल्य रूप चलेंगे। लट् आदि में इष् को इच्छ् हो जाता है।

लट्	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
लोट्	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
लङ्	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
वि० लिङ्	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
लृट्	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति

(३४) प्रच्छ् (पूछना) (दे० अ० ६)

सूचना—भू या तुद् के तुल्य रूप चलेंगे। लट् आदि में प्रच्छ् को पृच्छ् हो जाता है।

लट्	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
लोट्	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
लङ्	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
वि० लिङ्	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
लृट्	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति

(३५) विश् (घुसना) (दे० अ० ६)

सूचना—भू या तुद् के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्	विशति	विशतः	विशन्ति
लोट्	विशतु	विशताम्	विशन्तु
लङ्	अविशत्	अविशताम्	अविशन्
वि० लिङ्	विशेत्	विशेताम्	विशेयुः
लृट्	वेक्ष्यति	वेक्ष्यतः	वेक्ष्यन्ति

(३६) कृ (करना) (दे० अ० १२-१३) (केवल परस्मैपद के रूप यहाँ दिए हैं)

(३७) क्री (खरीदना) (दे०अ०२८-२९) (केवल परस्मैपद के रूप यहाँ दिए हैं)

लट्

करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	प्र० पु०	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
करोषि	कुरुथः	कुरुथ	म० पु०	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
करोमि	कुर्वः	कुर्मः	उ० पु०	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

लोट्

करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु	प्र० पु०	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
कुरु	कुरुतम्	कुरुत	म० पु०	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
करवाणि	करवाव	करवाम	उ० पु०	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

लङ्

अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	प्र० पु०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	म० पु०	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म	उ० पु०	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

विधिलिङ्

कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः	प्र० पु०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात	म० पु०	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम	उ० पु०	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

लृट्

करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति	प्र० पु०	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ	म० पु०	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः	उ० पु०	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

(३८) ज्ञा (जानना) (दे० अ० २८–२९)
सूचना—लट्, लोट्, लङ, विधिलिङ में ज्ञा को 'जा' हो जाता है। क्री के तुल्य रूप चलेंगे।

(३९) ग्रह् (लेना) (दे० अ० २८-२९)
सूचना—लट्, लोट्, लङ, विधिलिङ में ग्रह् को गृह् हो जाता है। क्री के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्				लट्		
जानाति	जानीतः	जानन्ति	प्र० पु०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
जानासि	जानीथः	जानीथ	म० पु०	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
जानामि	जानीवः	जानीमः	उ० पु०	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः
लोट्				**लोट्**		
जानातु	जानीताम्	जानन्तु	प्र० पु०	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
जानीहि	जानीतम्	जानीत	म० पु०	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
जानानि	जानाव	जानाम	उ० पु०	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम
लङ				**लङ**		
अजानात्	आजानीताम्	अजानन्	प्र० पु०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
अजानाः	अजानीतम्	अजानीत	म० पु०	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
अजानाम्	अजानीव	अजानीम	उ० पु०	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम
विधिलिङ				**विधिलिङ**		
जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः	प्र० पु०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात	म० पु०	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम	उ० पु०	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम
लृट्				**लृट्**		
ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति	प्र० पु०	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ	म० पु०	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः	उ० पु०	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः

सूचना—चुर्, कथ्, भक्ष्, चिन्त् के अन्त में 'अय' लगाकर भू के तुल्य रूप चलते हैं। केवल परस्मैपद के रूप यहाँ दिए हैं।

(४०) चुर् (चुराना) (दे० अ० ७)

लट्

चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लोट्

चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
चोरय	चोरयतम्	चोरयत
चोरयानि	चोरयाव	चोरयाम

लङ्

अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

विधिलिङ्

चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

लृट्

चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

(४१) कथ् (कहना) (दे० अ० ७)

सूचना—चुर् के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्—कथयति
लोट्—कथयतु
लङ्—अकथयत्
विधिलिङ्—कथयेत्
लृट्—कथयिष्यति

---

(४२) भक्ष् (खाना) (दे० अ० ७)

सूचना—चुर् के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्—भक्षयति
लोट्—भक्षयतु
लङ्—अभक्षयत्
विधिलिङ्—भक्षयेत्
लृट्—भक्षयिष्यति

(४३) चिन्त् (सोचना) (दे० अ० ७)

सूचना—चुर् के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्—चिन्तयति
लोट्—चिन्तयतु
लङ्—अचिन्तयत्
विधिलिङ्—चिन्तयेत्
लृट्—चिन्तयिष्यति

---

(४) सन्धि-विचार

(१) यण् सन्धि (देखो अभ्यास १९)

(इको यणचि) इ ई को य्, उ ऊ को व्, ऋ को र्, ऌ को ल् हो जाता है, यदि बाद में कोई स्वर हो तो। सवर्ण (वैसा ही) स्वर हो तो नहीं। जैसे :—

प्रति+एकः=प्रत्येकः	मधु+अरिः=मध्वरिः	धातृ+अंशः=धात्रंशः
यदि+अपि=यद्यपि	अनु+अयः=अन्वयः	पितृ+आ=पित्रा
इति+आह=इत्याह	वधू+औ=वध्वौ	ऌ+आकृतिः=लाकृतिः

(२) अयादिसन्धि (देखो अभ्यास २०)

(एचोऽयवायावः) ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् हो जाता है, बाद में कोई स्वर हो तो। (शब्द के अन्तिम ए या ओ के बाद अ हो तो नहीं)। जैसे :—

हरे+ए=हरये	भो+अनम्=भवनम्	गै+अति=गायति
ने+अनम्=नयनम्	पो+अनः=पवनः	गै+अकः=गायकः
शे+अनम्=शयनम्	श्रो+अणम्=श्रवणम्	भौ+अकः=भावकः
संचे+अः=संचयः	गुरो+ए=गुरवे	द्वौ+इमौ=द्वाविमौ

(३) गुणसन्धि (देखो अभ्यास २१)

(आद्गुणः) (१) अ या आ के बाद इ या ई हो तो दोनों को 'ए' होगा। (२) अ या आ के बाद उ या ऊ हो तो दोनों को 'ओ' होगा। (३) अ या आ के बाद ऋ हो तो दोनों को 'अर्' होगा। (४) अ या आ के बाद ऌ हो दोनों को 'अल्'। जैसे :—

महा+ईशः=महेशः	हित+उपदेशः=हितोपदेशः	ब्रह्म+ऋषिः=ब्रह्मर्षिः
महा+ईश्वरः=महेश्वरः	गंगा+उदकम्=गंगोदकम्	सप्त+ऋषिः=सप्तर्षिः
न+इति=नेति	पश्य+उपरि=पश्योपरि	तव+ऌकारः=तवल्कार

(४) वृद्धिसन्धि (देखो अभ्यास २२)

(वृद्धिरेचि) (१) अ या आ के बाद ए या ऐ होगा तो दोनों को 'ऐ' होगा। (२) अ या आ के बाद ओ या औ होगा तो दोनों को 'औ' होगा। जैसे :—

अत्र+एषः=अत्रैषः	जल+ओघः=जलौघः
पश्य+एतम्=पश्यैतम्	तण्डुल+ओदनम्=तण्डुलौदनम्
न+एतत्=नैतत्	देव+औदार्यम्=देवौदार्यम्
जन+ऐक्यम्=जनैक्यम्	कार्य+औचित्यम्=कार्यौचित्यम्

(५) दीर्घसन्धि (देखो अभ्यास २३)

(अकः सवर्णे दीर्घः) अ इ उ ऋ के वाद कोई सवर्ण (सदृश) अक्षर हो तो दोनों के स्थान पर उसी वर्ण का दीर्घ अक्षर हो जाता है। अर्थात् (१) अ या आ+अ या आ=आ। (२) इ या ई+इ या ई=ई। (३) उ या ऊ+उ या ऊ=ऊ। (४) ऋ+ऋ=ॠ। जैसे :—

शिष्ट+आचारः=शिष्टाचारः	गिरि+ईशः=गिरीशः	भानु+उदयः=भानूदयः
दया+आनन्दः=दयानन्दः	इति+इदम्=इतीदम्	लघु+उर्मिः=लघूर्मिः
विद्या+आलयः=विद्यालयः	नदी+ईशः=नदीशः	होतृ+ऋकारः=होतॄकारः

(६) पूर्वरूप सन्धि (देखो अभ्यास २४)

(एङः पदान्तादति) पद (शब्दरूप या धातुरूप) के अन्तिम ए या ओ के वाद अ हो तो वह हट जाता है। (अ हटा है, इस वात को वताने के लिए चिह्न ऽ लगा दिया जाता है)। जैसे :—

हरे+अव=हरेऽव	विष्णो+अव=विष्णोऽव
विद्यालये+अत्र=विद्यालयेऽत्र	रामो+अयम्=रामोऽयम्
सर्वे+अपि=सर्वेऽपि	सो+अपि=सोऽपि

(७) श्चुत्वसंधि (देखो अभ्यास २५)

(स्तोः श्चुना श्चुः) स् या तवर्ग के पहले या वाद में श् या चवर्ग कोई भी हो तो स् को श् और तवर्ग को चवर्ग हो जाता है। जैसे :—

रामस्+च=रामश्च	सत्+चित्=सच्चित्	सद्+जनः=सज्जनः
विष्णुस्+च=विष्णुश्च	तत्+च=तच्च	उद्+ज्वलः=उज्ज्वलः
हरिस्+शेते=हरिश्शेते	अन्यत्+च=अन्यच्च	शार्ङ्गिन्+जय=शार्ङ्गिञ्जय

(८) जश्त्व सन्धि (१)

(झलां जशोऽन्ते) वर्ग के १, २, ३, ४ (अर्थात् पहले दूसरे तीसरे चौथे वर्ण) को ३ (अपने वर्ग का तीसरा अक्षर) हो जाता है, यदि वह पद (शब्द) का अन्तिम अक्षर हो तो। जैसे :—

दिक्+अम्बरः=दिगम्बरः	दिक्+गजः=दिग्गजः
जगत्+ईशः=जगदीशः	सुप्+अन्तः=सुबन्तः
सत्+आचारः=सदाचारः	अच्+अन्तः=अजन्तः

(९) जश्त्वसन्धि (२) (देखो अभ्यास २६)

(झलां जश् झशि) वर्ग के १, २, ३, ४ (पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे वर्ण) को ३ (अपने वर्ग का तीसरा अक्षर) हो जाता है, वाद में वर्ग के ३, ४ (तीसरा या चौथा वर्ण) हो तो। (यह नियम पद के बीच में लगता है और नियम ८ पद के अन्त में)। जैसे :—

बुध्+धिः=बुद्धिः	बुध्+धः=बुद्धः	दुघ्+धम्=दुग्धम्
शुध्+धिः=शुद्धिः	युध्+धः=युद्धः	दघ्+धः=दग्धः
ऋध्+धिः=ऋद्धिः	लभ्+धः=लब्धः	क्षुभ्+धः=क्षुब्धः

(१०) चर्त्वसन्धि (देखो अभ्यास २७)

(खरि च) वर्ग के १, २, ३, ४ को १ (उसी वर्ग का प्रथम अक्षर) हो जाता है, वाद में वर्ग के १, २, श ष स कोई हों तो। जैसे :—

सद्+कारः=सत्कारः	सद्+पुत्रः=सत्पुत्रः
उद्+साहः=उत्साहः	तद्+परः=तत्परः

(११) अनुस्वारसन्धि (देखो अभ्यास १८)

(मोऽनुस्वारः) शव्द के अन्तिम म् के वाद कोई व्यंजन (हल्) तो म् को अनुस्वार (ं) हो जाता है। वाद में स्वर हो तो नहीं। जैसे :—

सत्यम्+वद=सत्यं वद	पुस्तकम्+पठति=पुस्तकं पठति
धर्मम्+चर=धर्मं चर	भोजनम्+खादति=भोजनं खादति
कार्यम्+कुरु=कार्यं कुरु	ईश्वरम्+नमति=ईश्वरं नमति

(१२) विसर्गसन्धि (देखो अभ्यास २८)

(विसर्जनीयस्य सः) विसर्ग (:) के वाद वर्ग के १, २, श ष स कोई हों तो विसर्ग को स् हो जाता है। (श् या चवर्ग वाद में हो तो संधि-नियम ७ से स् को श् हो जाएगा।) जैसे :—

वालकः+तिष्ठति=वालकस्तिष्ठति	पुत्रः+चलति=पुत्रश्चलति
रामः+तरति=रामस्तरति	हरिः+च=हरिश्च
कः+चित्=कश्चित्	रामः+शेते=रामश्शेते

(१३) रुत्व सन्धि (देखो अभ्यास २९)

(ससजुषो रुः) शब्द के अन्तिम स् को रु (र्) हो जाता है। (सूचना—प्रथमा के एकवचन में इसी र् का विसर्ग रहता है। संधि में यह र् अ और आ के अतिरिक्त अन्य स्वरों के वाद रहता है)। जैसे :—

हरिः+अवदत्=हरिरवदत् | हरेः+एव=हरेरेव
गुरुः+अस्ति=गुरुरस्ति | गुरोः+धनम्=गुरोर्धनम्
पितुः+इच्छा=पितुरिच्छा | मुनेः+भाषणम्=मुनेर्भाषणम्

(१४) उत्वसन्धि (१) (देखो अभ्यास २९)

(अतो रोरप्लुतादप्लुते) अः को ओ हो जाता है, वाद में अ हो तो। अर्थात् अः+अ=ओऽ। जैसे :—

कः+अपि=कोऽपि | रामः+अवदत्=रामोऽवदत्
रामः+अस्ति=रामोऽस्ति | कः+अयम्=कोऽयम्
सः+अपठत्=सोऽपठत् | नृपः+अगच्छत्=नृपोऽगच्छत्

(१५) उत्वसन्धि (२) (देखो अभ्यास ३०)

(हशि च) अः को ओ हो जाता है, वाद में वर्ग के ३, ४, ५, ह य व र ल कोई हों तो। जैसे :—

रामः+गच्छति=रामो गच्छति | पुत्रः+वदति=पुत्रो वदति
कृष्णः+लिखति=कृष्णो लिखति | देवः+यजति=देवो यजति
नृपः+जयति=नृपो जयति | नृपः+रक्षति=नृपो रक्षति
वालः+हसति=वालो हसति | कः+मनुष्यः=को मनुष्यः

(१६) सुलोपसन्धि (देखो अभ्यास ३०)

(एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि) सः और एषः के विसर्ग का लोप हो जाता है, वाद में कोई व्यंजन हो तो। जैसे—

सः+गच्छति=स गच्छति | एषः+गच्छति=एष गच्छति
सः+लिखति=स लिखति | एषः+वदति=एष वदति
सः+पठति=स पठति | एषः+करोति=एष करोति

———

(५) प्रत्यय-विचार

(१) क्त (२) क्तवतु प्रत्यय

(देखो अभ्यास २३, २४, २५)

सूचना—(१) क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल में होते हैं। क्त का त और क्तवतु का तवत् शेष रहता है। धातु को गुण या वृद्धि नहीं होती है। संप्रसारण होता है। यहाँ पर केवल क्त प्रत्ययान्त के रूप दिए गए हैं। क्तवतु प्रत्ययान्त रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि क्त प्रत्ययान्त रूप के वाद में 'वत्' और जोड़ दो। अन्य नियमों के लिए देखो अभ्यास २३–२५।

(२) प्रत्यय-विचार में आगे सर्वत्र धातुएँ अकारादि-क्रम से दी गई हैं। अधिक प्रसिद्ध रूप ही यहाँ दिए गए हैं।

अद्	जग्धः, अन्नम्	कृष्	कृष्टः	छिद्	छिन्नः
अधि+इ	अधीतः	कॄ	कीर्णः	जन्	जातः
अर्च्	अर्चितः	क्रन्द्	क्रन्दितः	जीव्	जीवितः
अस्	भूतः	क्रम्	क्रान्तः	ज्ञा	ज्ञातः
आप्	आप्तः	क्री	क्रीतः	तप्	तप्तः
आ+रभ्	आरब्धः	क्रीड्	क्रीडितः	तुष्	तुष्टः
आ+लम्ब्	आलम्बितः	क्रुध्	क्रुद्धः	तृप्	तृप्तः
आ+ह्वे	आहूतः	क्षिप्	क्षिप्तः	त्यज्	त्यक्तः
इ	इतः	खाद्	खादितः	दण्ड्	दण्डितः
इष्	इष्टः	गण्	गणितः	दा	दत्तः
ईक्ष्	ईक्षितः	गम्	गतः	दुह्	दुग्धः
उत्+डी	उड्डीनः	गर्ज्	गर्जितः	दृश्	दृष्टः
कथ्	कथितः	गै (गा)	गीतः	धा	हितः
कम्प्	कम्पितः	ग्रह्	गृहीतः	धाव्	धावितः
कुप्	कुपितः	चल्	चलितः	धृ	धृतः
कूर्द्	कूर्दितः	चिन्त्	चिन्तितः	ध्वंस्	ध्वस्तः
कृ	कृतः	चुर्	चोरितः	नम्	नतः

नश्	नष्टः
नी	नीतः
पच्	पक्वः
पठ्	पठितः
पत्	पतितः
पा (१ प०)	पीतः
पाल्	पालितः
पुष्	पुष्टः
पूज्	पूजितः
पॄ	पूर्णः
प्रच्छ्	पृष्टः
प्रेर्	प्रेरितः
वन्ध्	वद्धः
वुध्	वुद्धः
ब्रू (वच्)	उक्तः
भक्ष्	भक्षितः
भण्	भणितः
भाष्	भाषितः
भिद्	भिन्नः
भी	भीतः
भुज्	भुक्तः
भू	भूतः
भ्रम्	भ्रान्तः
मन्	मतः
मिल्	मिलितः
मुच्	मुक्तः
मुह्	मुग्धः, मूढः
यज्	इष्टः
या	यातः
याच्	याचितः
युज्	युक्तः
रक्ष्	रक्षितः
रच्	रचितः
रञ्ज्	रक्तः
रम्	रतः
रुद्	रुदितः
रुध्	रुद्धः
रुह्	रूढः
लभ्	लव्धः
लिख्	लिखितः
लुभ्	लुव्धः
वच् (ब्रू)	उक्तः
वद्	उदितः
वप्	उप्तः
वस्	उषितः
वह्	ऊढः
विश्	विष्टः
वृत्	वृत्तः
वृध्	वृद्धः
व्यध्	विद्धः
शक्	शक्तः
शम्	शान्तः
शास्	शिष्टः
शिक्ष्	शिक्षितः
शी	शयितः
शुष्	शुष्कः
श्रि	श्रितः
श्रु	श्रुतः
सद्	सन्नः
सह्	सोढः
सिच्	सिक्तः
सिध्	सिद्धः
सिव्	स्यूतः
सृज्	सृष्टः
सेव्	सेवितः
स्तु	स्तुतः
स्था	स्थितः
स्निह्	स्निग्धः
स्पृश्	स्पृष्टः
स्वप्	सुप्तः
हन्	हतः
हस्	हसितः
हा (३ प.)	हीनः
हिंस्	हिंसितः
हु	हुतः
हृ	हृतः
हृष्	हृष्टः
ह्वे	हूतः

(३) शतृ प्रत्यय

(देखो अभ्यास २६)

सूचना—'रहा' अर्थ में परस्मैपदी धातुओं से लट् के स्थान पर शतृ प्रत्यय होता है। शतृ का अत् शेष रहता है। तीनों लिंगों में रूप चलते हैं। यहाँ केवल पुंलिग के रूप दिए गए हैं। अन्य नियमों के लिए देखो अभ्यास २६। प्रसिद्ध प्रयोग ही यहाँ दिए गए हैं। धातुएँ अकारादि-क्रम से दी गई हैं।

अस्	सन्	जीव्	जीवन्	भिद्	भिन्दन्
आप्	आप्नुवन्	ज्ञा	जानन्	भू	भवन्
आ+ह्वे	आह्वयन्	तप्	तपन्	भ्रम्	भ्रमन्
इष्	इच्छन्	तॄ	तरन्	रक्ष्	रक्षन्
कथ्	कथयन्	त्यज्	त्यजन्	रच्	रचयन्
कृ	कुर्वन्	दा	ददत्	लिख्	लिखन्
कृष्	कर्षन्	दुह्	दुहन्	वद्	वदन्
क्री	क्रीणन्	दृश्	पश्यन्	वस्	वसन्
क्रीड्	क्रीडन्	धा	दधत्	वह्	वहन्
खन्	खनन्	धाव्	धावन्	विश्	विशन्
खाद्	खादन्	नश्	नश्यन्	वृष्	वर्षन्
गण्	गणयन्	नी	नयन्	शक्	शक्नुवन्
गम्	गच्छन्	नृत्	नृत्यन्	श्रि	श्रयन्
गै	गायन्	पच्	पचन्	श्रु	शृण्वन्
ग्रह्	गृह्णन्	पठ्	पठन्	सद्	सीदन्
घ्रा	जिघ्रन्	पत्	पतन्	सिच्	सिञ्चन्
चर्	चरन्	पा (१ प.)	पिबन्	स्था	तिष्ठन्
चल्	चलन्	प्रच्छ्	पृच्छन्	स्मृ	स्मरन्
चिन्त्	चिन्तयन्	प्रेर्	प्रेरयन्	हन्	हनन्
चुर्	चोरयन्	ब्रू	ब्रुवन्	हस्	हसन्
जि	जयन्	भक्ष्	भक्षयन्	हृ	हरन्

(४) तुमुन्, (५) तव्यत्, (६) तृच् प्रत्यय (देखो अभ्यास २८,३०)

सूचना—(क) तुमुन् प्रत्यय 'को' 'के लिए' अर्थ में होता है। तुमुन् का तुम् शेष रहता है। इसके रूप नहीं चलते हैं। धातु को गुण होता है। (ख) तव्यत् प्रत्यय 'चाहिए' अर्थ में होता है। तव्यत् का तव्य शेष रहता है। तव्य प्रत्यय लगाकर रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि तुम् प्रत्यय वाले रूप में तुम् के स्थान पर तव्य लगा दो। (देखो अभ्यास ३०)। (ग) 'करने वाला' या 'वाला' अर्थ में तृच् प्रत्यय होता है। तृच् का तृ शेष रहता है। इसके रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि तुम् प्रत्यय वाले रूप में तुम् के स्थान पर तृ लगा दो। जैसे—कृ—कर्तुम्, कर्तव्य, कर्तृ। कर्ता, हर्ता, धर्ता, भर्ता, श्रोता आदि सब रूप तृच् प्रत्यय के ही हैं। धातुएँ अकारादि-क्रम से दी गई हैं।

अद्	अत्तुम्	कृष्	कर्ष्टुम्	चर्	चरितुम्
अधि+इ	अध्येतुम्	क्रन्द्	क्रन्दितुम्	चल्	चलितुम्
अर्च्	अर्चितुम्	क्रम्	क्रमितुम्	चि	चेतुम्
अस्	भवितुम्	क्री	क्रेतुम्	चिन्त्	चिन्तयितुम्
आप्	आप्तुम्	क्रीड्	क्रीडितुम्	चुर्	चोरयितुम्
आ+रभ्	आरब्धुम्	क्रुध्	क्रोद्धुम्	छिद्	छेत्तुम्
आ+रुह्	आरोढुम्	क्षिप्	क्षेप्तुम्	जप्	जपितुम्
आ+ह्वे	आह्वातुम्	खन्	खनितुम्	जि	जेतुम्
इ	एतुम्	खाद्	खादितुम्	जीव्	जीवितुम्
इष्	एषितुम्	गण्	गणयितुम्	ज्ञा	ज्ञातुम्
ईक्ष्	ईक्षितुम्	गम्	गन्तुम्	तप्	तप्तुम्
कथ्	कथयितुम्	गर्ज्	गर्जितुम्	तॄ	तरितुम्
कम्प्	कम्पितुम्	गै	गातुम्	त्यज्	त्यक्तुम्
कूर्द्	कूर्दितुम्	ग्रह्	ग्रहीतुम्	त्रै	त्रातुम्
कृ	कर्तुम्	घ्रा	घ्रातुम्	दंश्	दंष्टुम्

दह्	दग्धुम्	भिद्	भेत्तुम्	वृत्	वर्तितुम्
दा	दातुम्	भी	भेतुम्	वृध्	वर्धितुम्
दिश्	देष्टुम्	भुज्	भोक्तुम्	वृष्	वर्षितुम्
दुह्	दोग्धुम्	भू	भवितुम्	शक्	शक्तुम्
धा	धातुम्	भृ	भर्तुम्	शप्	शप्तुम्
धाव्	धावितुम्	भ्रम्	भ्रमितुम्	शिक्ष्	शिक्षितुम्
धृ	धर्तुम्	मिल्	मेलितुम्	शी	शयितुम्
ध्यै	ध्यातुम्	मुच्	मोक्तुम्	श्रि	श्रयितुम्
नम्	नन्तुम्	मृ	मर्तुम्	श्रु	श्रोतुम्
नश्	नष्टुम्	यज्	यष्टुम्	सह्	सोढुम्
नी	नेतुम्	या	यातुम्	सिच्	सेक्तुम्
नृत्	नर्तितुम्	याच्	याचितुम्	सिव्	सेवितुम्
पच्	पक्तुम्	युध्	योद्धुम्	सृ	सर्तुम्
पठ्	पठितुम्	रक्ष्	रक्षितुम्	सृज्	स्रष्टुम्
पत्	पतितुम्	रच्	रचयितुम्	सृप्	सर्प्तुम्
पद्	पत्तुम्	रम्	रन्तुम्	सेव्	सेवितुम्
पलाय्	पलायितुम्	रुद्	रोदितुम्	स्तु	स्तोतुम्
पा	पातुम्	लभ्	लब्धुम्	स्था	स्थातुम्
पाल्	पालयितुम्	लिख्	लेखितुम्	स्ना	स्नातुम्
प्रच्छ्	प्रष्टुम्	लिह्	लेढुम्	स्पृश्	स्प्रष्टुम्
प्रेर्	प्रेरयितुम्	वच्	वक्तुम्	स्मृ	स्मर्तुम्
वन्ध्	वन्द्धुम्	वद्	वदितुम्	हन्	हन्तुम्
ब्रू	वक्तुम्	वप्	वप्तुम्	हस्	हसितुम्
भक्ष्	भक्षयितुम्	वस्	वस्तुम्	हा	हातुम्
भज्	भक्तुम्	वह्	वोढुम्	हृ	हर्तुम्
भाष्	भाषितुम्	विश्	वेष्टुम्	हृष्	हर्षितुम्

(७) क्त्वा, (८) ल्यप् प्रत्यय (देखो अभ्यास २९)

सूचना—'कर' या 'करके' अर्थ में क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय होते हैं। क्त्वा का त्वा और ल्यप् का य शेष रहता है। धातु से पहले उपसर्ग नहीं होगा तो क्त्वा प्रत्यय होगा। यदि उपसर्ग (प्र, सम्, आ, उप, नि, वि आदि) पहले होगा तो ल्यप् होगा। दोनों प्रत्ययान्त रूप अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते। (देखो अभ्यास २९)। अधिक प्रचलित रूप ही यहाँ दिए गए हैं। धातुएँ अकारादि-क्रम से दी गई हैं।

अधि+इ	—	अधीत्य	जि	जित्वा	विजित्य
अस् (२ प०)	भूत्वा	संभूय	ज्ञा	ज्ञात्वा	विज्ञाय
आप्	आप्त्वा	प्राप्य	तन्	तनित्वा	वितत्य
इ	इत्वा	प्रेत्य	तुष्	तुष्ट्वा	सन्तुष्य
ईक्ष्	ईक्षित्वा	समीक्ष्य	तॄ	तीर्त्वा	उत्तीर्य
उत्+डी	—	उड्डीय	त्यज्	त्यक्त्वा	परित्यज्य
कूर्द्	कूर्दित्वा	प्रकूर्द्य	दा	दत्त्वा	आदाय
कृ	कृत्वा	उपकृत्य	दिश्	दिष्ट्वा	उपदिश्य
कृष्	कृष्ट्वा	आकृष्य	दुह्	दुग्ध्वा	संदुह्य
कॄ	कीर्त्वा	विकीर्य	दृश्	दृष्ट्वा	संदृश्य
क्रन्द्	क्रन्दित्वा	आक्रन्द्य	धा	हित्वा	विधाय
क्री	क्रीत्वा	विक्रीय	धाव्	धावित्वा	प्रधाव्य
क्रीड्	क्रीडित्वा	प्रक्रीड्य	ध्यै	ध्यात्वा	संध्याय
क्षिप्	क्षिप्त्वा	प्रक्षिप्य	नम्	नत्वा	प्रणम्य
खन्	खनित्वा	उत्खन्य	नश्	नष्ट्वा	विनश्य
गण्	गणयित्वा	विगणय्य	नि+वृ	—	निवृत्य
गम्	गत्वा	आगम्य	नी	नीत्वा	आनीय
ग्रह्	गृहीत्वा	संगृह्य	नृत्	नर्तित्वा	प्रनृत्य
घ्रा	घ्रात्वा	आघ्राय	पच्	पक्त्वा	संपच्य
चिन्त्	चिन्तयित्वा	संचिन्त्य	पठ्	पठित्वा	संपठ्य
छिद्	छित्त्वा	उच्छिद्य	पत्	पतित्वा	निपत्य

पलाय्	—	पलाय्य	लिख्	लिखित्वा	आलिख्य
पा (१ प०)	पीत्वा	निपाय	लिह्	लीढ्वा	आलिह्य
पॄ	पूर्त्वा	आपूर्य	वद्	उदित्वा	अनूद्य
प्रच्छ्	पृष्ट्वा	संपृच्छ्य	वप्	उप्त्वा	समुप्य
बुध्	बुद्ध्वा	प्रबुध्य	वस्	उषित्वा	उपोष्य
ब्रू	उक्त्वा	प्रोच्य	वह्	ऊढ्वा	प्रोह्य
भक्ष्	भक्षयित्वा	संभक्ष्य	विश्	विष्ट्वा	प्रविश्य
भज्	भक्त्वा	विभज्य	वृत्	वर्तित्वा	निवृत्य
भाष्	भाषित्वा	संभाष्य	वृष्	वर्षित्वा	प्रवृष्य
भिद्	भित्त्वा	प्रभिद्य	शम्	शान्त्वा	निशम्य
भुज्	भुक्त्वा	उपभुज्य	शास्	शिष्ट्वा	अनुशिष्य
भू	भूत्वा	संभूय	शी	शयित्वा	संशय्य
भ्रम्	भ्रमित्वा	संभ्रम्य	श्रि	श्रित्वा	आश्रित्य
मन्	मत्वा	अनुमत्य	श्रु	श्रुत्वा	संश्रुत्य
मिल्	मिलित्वा	संमिल्य	सह्	सहित्वा	संसह्य
मुच्	मुक्त्वा	विमुच्य	सिच्	सिक्त्वा	अभिषिच्य
यज्	इष्ट्वा	समिज्य	सृज्	सृष्ट्वा	विसृज्य
या	यात्वा	प्रमाय	सेव्	सेवित्वा	निषेव्य
युज्	युक्त्वा	प्रयुज्य	स्तु	स्तुत्वा	प्रस्तुत्य
युध्	युद्ध्वा	प्रयुध्य	स्था	स्थित्वा	प्रस्थाय
रक्ष्	रक्षित्वा	संरक्ष्य	स्पृश्	स्पृष्ट्वा	संस्पृश्य
रच्	रचयित्वा	विरचय्य	स्मृ	स्मृत्वा	विस्मृत्य
रभ्	रब्ध्वा	आरभ्य	हन्	हत्वा	निहत्य
रम्	रत्वा	विरम्य	हस्	हसित्वा	विहस्य
रुह्	रूढ्वा	आरुह्य	हा (३ प०)	हित्वा	विहाय
लप्	लपित्वा	विलप्य	हृ	हृत्वा	प्रहृत्य
लभ्	लब्ध्वा	उपलभ्य	ह्वे	हूत्वा	आहूय

(९) ल्युट्, (१०) अनीयर् प्रत्यय (देखो अभ्यास ३०)

सूचना--(क) भाववाचक शब्द बनाने के लिए धातु से ल्युट् प्रत्यय होता है। ल्युट् का अन शेष रहता है। धातु को गुण होता है। ल्युट् (अन) प्रत्यय वाले शब्द नपुंसकलिंग होते हैं। जैसे—हिन्दी में पढ़ना, लिखना, जाना, आना का संस्कृत में पठनम्, लेखनम्, गमनम्, आगमनम्। (ख) 'चाहिए' अर्थ में धातु से अनीयर् प्रत्यय होता है। अनीयर् का अनीय शेष रहता है। अनीय लगाकर रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि ल्युट् प्रत्यय वाले शब्द के अन्तिम अन के स्थान पर अनीय लगा दो। जैसे---पठ् का पठन, पठनीय। लिख्---लेखन, लेखनीय। धातुएँ अकारादि-क्रम से दी गई हैं।

अधि+इ	अध्ययनम्	क्रम्	क्रमणम्	जि	जयनम्
अन्विष्	अन्वेषणम्	क्री	क्रयणम्	जीव्	जीवनम
अर्च्	अर्चनम्	क्रीड्	क्रीडनम्	ज्ञा	ज्ञानम्
अर्ज्	अर्जनम्	क्रुध्	क्रोधनम्	ज्वल्	ज्वलनम्
अस्(२ प.)	भवनम्	क्षिप्	क्षेपणम्	तप्	तपनम्
आ+क्रम्	आक्रमणम्	खन्	खननम्	तुप्	तोपणम्
आ+चर्	अचरणम्	खाद्	खादनम्	तृप्	तर्पणम्
आ+रुह्	आरोहणम्	गण्	गणनम्	तॄ	तरणम्
आस्	आसनम्	गम्	गमनम्	त्यज्	त्यजनम्
आ+ह्वे	आह्वानम्	गर्ज्	गर्जनम्	त्रै	त्राणम्
ईक्ष्	ईक्षणम्	गै	गानम्	दंश्	दंशनम्
उद्+डी	उड्डयनम्	ग्रह्	ग्रहणम्	दण्ड्	दण्डनम्
कथ्	कथनम्	चर्	चरणम्	दह्	दहनम्
कम्प्	कम्पनम्	चल्	चलनम्	दा	दानम्
कूर्द्	कूर्दनम्	चि	चयनम्	दुह्	दोहनम
कृ	करणम्	चिन्त्	चिन्तनम्	दृश्	दर्शनम्
कृष्	कर्षणम्	चुर्	चोरणम्	धा	धानम्
क्रन्द्	क्रन्दनम्	छिद्	छेदनम्	धाव्	धावनम्

धृ	धरणम्	भज्	भजनम्	वृध्	वर्धनम्
ध्यै	ध्यानम्	भाष्	भाषणम्	वृष्	वर्षणम्
नश्	नशनम्	भुज्	भोजनम्	शप्	शपनम्
नि+गृ	निगरणम्	भू	भवनम्	शम्	शमनम्
निन्द्	निन्दनम्	भृ	भरणम्	शास्	शासनम्
नि+यम्	नियमनम्	भ्रम्	भ्रमणम्	शिक्ष्	शिक्षणम्
नि+विद्	निवेदनम्	मन्	मननम्	शी	शयनम्
नी	नयनम्	मिल्	मेलनम्	शुभ्	शोभनम्
नृत्	नर्तनम्	मुच्	मोचनम्	शुष्	शोषणम्
पच्	पचनम्	मुह्	मोहनम्	श्रु	श्रवणम्
पठ्	पठनम्	मृ	मरणम्	सं+मिल्	संमेलनम्
पत्	पतनम्	या	यानम्	सह्	सहनम्
पलाय्	पलायनम्	याच्	याचनम्	साध्	साधनम्
पा	पानम्	युज्	योजनम्	सिच्	सेचनम्
पाल्	पालनम्	रंज्	रंजनम्	सिव्	सेवनम्
पुष्	पोषणम्	रक्ष्	रक्षणम्	सृज्	सर्जनम्
पूज्	पूजनम्	रुद्	रोदनम्	सेव्	सेवनम्
प्र+काश्	प्रकाशनम्	लिख्	लेखनम्	स्तु	स्तवनम्
प्र+आप्	प्रापणम्	लोच्	लोचनम्	स्था	स्थानम्
प्र+हस्	प्रहसनम्	वच्	वचनम्	स्ना	स्नानम्
प्रेर्	प्रेरणम्	वञ्च्	वञ्चनम्	स्पृश्	स्पर्शनम्
प्रेष्	प्रेषणम्	वन्द्	वन्दनम्	स्मृ	स्मरणम्
बन्ध्	बन्धनम्	वर्ण्	वर्णनम्	स्वप्	स्वपनम्
ब्रू	वचनम्	वह्	वहनम्	हन्	हननम्
भंज्	भंजनम्	वि+धा	विधानम्	हु	हवनम्
भक्ष्	भक्षणम्	वृत्	वर्तनम्	हृ	हरणम्

(६) अनुवादार्थ गद्य-संग्रह

(१) संस्कृत-भाषा

शुद्ध भाषा को संस्कृत कहते हैं। इसके ही नाम देवभाषा, देववाणी आदि हैं। यह भारतवर्ष की एक बहुमूल्य निधि है। भारतवर्ष का सारा प्राचीन ज्ञान-भंडार इसी भाषा में है। वेद, उपनिषद्, दर्शन, रामायण, महाभारत, गीता आदि ग्रन्थ इसी भाषा में हैं। प्राचीन समय में संस्कृत-भाषा आर्यों के दैनिक व्यवहार की भाषा थी। पाणिनि और पतंजलि के कथनों से यह बात सर्वथा सिद्ध होती है। इस भाषा के ज्ञान से ही प्राचीन भारतीय-संस्कृति का ज्ञान होता है। हमारा कर्तव्य है कि हम इसके प्रचार और उन्नति के लिए प्रयत्न करें।

(२) कालिदास

महाकवि कालिदास संस्कृत-साहित्य का सर्वोत्तम कवि है। उसने नाटक, महाकाव्य और गीतिकाव्य लिखे हैं। उसके लिखे हुए ७ प्रमुख ग्रन्थ ये हैं :—(क) नाटक—मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञान-शाकुन्तल, (ख) महाकाव्य—कुमारसंभव, रघुवंश। (ग) गीतिकाव्य—ऋतुसंहार, मेघदूत। उसकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। उसकी रचनाओं में प्रसाद-गुण और माधुर्य-गुण हैं। वह नीरस कथा को भी सरस बना देता है। उसकी लोकप्रियता का मुख्य कारण है, उसकी सरल सुन्दर और शुद्ध शैली। वह बहुत कम शब्दों के द्वारा अधिक और सुन्दर अर्थ को कहता है। वह चरित्र-चित्रण में असाधारण पटु है। उसका भाषा पर पूर्ण अधिकार है। वह उपमाओं के लिए बहुत प्रसिद्ध है। उसकी रचनाएँ दूसरे कवियों के लिए आदर्श रही हैं।

संकेत :—(१) वचनैः, एतत्, सिध्यति, प्रयतेमहि। (२) कृतिषु, सम्पादयति, स्वल्पैरेव पदैः, वर्णयति, आदर्शरूपा अभवन्।

(३) विद्या

किसी वस्तु के ठीक ज्ञान को विद्या कहते हैं। संसार में जितने भी धन हैं, उनमें विद्या सर्वश्रेष्ठ धन है। विद्या से मनुष्य अपने कर्तव्य और अकर्तव्य को जानता है। विद्या से ही मनुष्य को ज्ञान होता है कि धर्म क्या है, अधर्म क्या है, पाप क्या है, पुण्य क्या है। विद्या से मनुष्य सन्मार्ग पर चलता है। विद्या से ही मनुष्य मनुष्य होता है। जो विद्याहीन है, वह अपने कर्तव्य को नहीं जानता। अतएव वह मूर्ख और पशु कहा जाता है। कहा भी है—विद्याविहीनः पशुः। सब धन व्यय करने से कम होते हैं, परन्तु विद्या व्यय करने से बढ़ती है। विद्या से ही मनुष्य का सम्मान होता है। विद्वान् राजा से भी अधिक सम्मानित होता है। हमारा कर्तव्य है कि परिश्रम से विद्या पढ़ें।

(४) सत्य

जो वस्तु जैसी है, उसे वैसा ही कहना सत्य कहा जाता है। समाज में सत्य की अत्यधिक आवश्यकता है। सत्य से ही समाज की स्थिति है। सत्यभाषण से ही मनुष्य निर्भीक होता है। सत्यभाषण से मनुष्य का यश तेज और गौरव बढ़ता है। जो सत्य बोलता है, वह पापों से दूर रहता है। सत्यभाषण सर्वश्रेष्ठ तप है। सत्य-भाषण के अभ्यास से ही मनुष्य महात्मा, त्यागी और तपस्वी होता है। सत्य की प्रतिष्ठा से ही संसार का कल्याण होता है। सत्य के प्रयोग से ही देश और जाति की उन्नति होती है। असत्यभाषण पाप का मूल है। असत्यभाषण से मनुष्य दुर्गुणों में फँसता है और उसका पतन हो जाता है। राजा हरिश्चन्द्र ने सत्य के लिए ही दुःख सहे। युधिष्ठिर सत्य के कारण ही विजयी हुए। सब मनुष्यों का कर्तव्य है कि उन्नति के लिए सत्य ही बोलें।

संकेत :—(३) यथार्थज्ञानम्, यावन्ति, जानाति, कथ्यते, उक्तं च, क्षीयन्ते। (४) तस्य तथैव वर्णनम्, तेजः, विरमति, आसज्यते।

(५) अहिंसा

किसी को दुःख देने को हिंसा कहते हैं। हिंसा तीन प्रकार की होती है—मन से, वचन से और कर्म से। मन से किसी का अशुभ सोचना, यह मानसिक हिंसा है। कटु-वचन और असत्यभाषण से किसी को दुःखित करना, यह वाचिक हिंसा है। किसी जीव की हत्या करना या उसे दण्ड आदि के द्वारा पीड़ा देना, यह कायिक हिंसा है। इन तीनों हिंसाओं के त्याग को अहिंसा कहते हैं। संसार में अहिंसा की बहुत आवश्यकता है। अहिंसा से मनुष्य की आत्मा प्रसन्न रहती है। अहिंसा से पशु-पक्षी भी मनुष्यों पर प्रेम करते हैं। अहिंसा से शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। संसार के सभी महापुरुषों ने अहिंसा को अपनाया है। अहिंसा से ही संसार में शान्ति रह सकती है। अतएव कहा गया है—अहिंसा परमो धर्मः।

(६) परोपकार

दूसरों के उपकार को परोपकार कहते हैं। दूसरों का हित करना, निर्धनों को दान देना, असहायों की सहायता करना, यह सब परोपकार कहा जाता है। संसार में परोपकार ही वह गुण है, जिससे मनुष्यों में सुख का निवास है। समाज-सेवा की भावना, देशप्रेम की भावना, दीनों के उद्धार की भावना, दूसरों के दुःख में दुःखी होना, यह परोपकार की भावना से ही होता है। परोपकार करने से मनुष्य का हृदय पवित्र, सरल और विनीत होता है। परोपकारी दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझता है और उसे नष्ट करने के लिए प्रयत्न करता है। वह दीनों को दान देता है, निर्धनों को धन देता है, वस्त्रहीनों को वस्त्र देता है, भूखों को अन्न देता है और प्यासों को पानी देता है। प्रकृति भी परोपकार की शिक्षा देती है।

संकेत :—(५) परपीडनम्, त्रिविधा, मानसिकी, वाचिकी, हननम्, कायिकी, तिसृणाम्, प्रसीदति, स्वीकृतवन्तः, संभवति। (६) परोपकरणम्, दुःखानुभूतिः, मन्यते, बुभुक्षितेभ्यः, पिपासितेभ्यः।

(७) उद्योग

संसार में सभी मनुष्य सुख और शान्ति चाहते हैं। सुख और शान्ति पुरुषार्थ के विना नहीं मिलती। पुरुषार्थ से ही मनुष्य धन, विद्या और कलाओं में कुशलता को प्राप्त करता है। जो मनुष्य उद्योगी नहीं हैं, उन्हें न सुख मिलता है, न विद्या और न धन आदि। उद्योग जीवन की आधार-शिला है। उद्योग से ही मनुष्य की सारी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं। उद्योग से ही निर्धन धनी होते हैं, विद्याहीन विद्वान् होते हैं, निर्वल वलवान् होते हैं और दुःखी सुखी होते हैं। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन्होंने उद्योग का ही आश्रय लिया। अतएव वे महात्मा, विद्वान्, कवि और कलाकार आदि हुए। जो जीवन में सफलता चाहता है, उसे उद्योग को अपनाना चाहिए।

(८) आरोग्य

मनुष्य के जीवन में आरोग्य का वहुत महत्त्व है। मनुष्य का ज़ीवन तभी सुखी हो सकता है, जव वह नीरोग हो। जो मनुष्य नीरोग है, वही सब प्रकार के पुरुषार्थ कर सकता है। जो मनुष्य रुग्ण है, जिसके शरीर में शक्ति नहीं है, वह किसी प्रकार भी संसार में सुख का अनुभव नहीं कर सकता है। अतः शरीर को नीरोग रखना अनिवार्य कर्तव्य है। शरीर की नीरोगता व्यायाम से होती है। व्यायाम अनेक प्रकार के हैं, जैसे—घूमना, दौड़ना, खेलना, तैरना आदि। वालकों के लिए खेलना, दौड़ना और तैरना विशेष लाभप्रद हैं। योगासन और भारतीय व्यायाम भी शरीर की नीरोगता के लिए विशेष उपयोगी हैं। जीवन को सुखमय बनाने के लिए सदा व्यायाम करना चाहिए और शरीर को नीरोग रखना चाहिए।

संकेत :—(७) प्राप्यते, आश्रितवन्तः, आश्रयणीयः। (८) सर्वविधम्, कर्तुं शक्नोति, कथमपि, नानाविधाः, तरणम्, विधातुम्, निरामयं कर्तव्यम्।

(९) सदाचार

सज्जनों के आचरण को सदाचार कहते हैं। सज्जन जिस प्रकार आचरण करते हैं, उसी प्रकार आचरण करना सदाचार है। सज्जन अपनी इन्द्रियों को वश में रखते हैं, दुर्गुणों पर विजय पाते हैं और सद्गुणों को उन्नत करते हैं। वे सत्य बोलते हैं, असत्य को छोड़ते हैं, माता-पिता और गुरुजनों का आदर करते हैं, सत्कार्यों में प्रवृत्त होते हैं, असत्कार्यों से निवृत्त होते हैं और परोपकार के कार्य करते हैं। सदाचार को अपनाने से ही देश, जाति और समाज की उन्नति होती है। सदाचार से ही मनुष्य संयमी होता है। सदाचार से मनुष्य का शरीर पुष्ट होता है, उसकी बुद्धि बढ़ती है, मन निर्मल होता है, सद्गुणों का समावेश होता है और दुर्गुणों का नाश होता है। अतएव कहा गया है—आचारः परमो धर्मः।

(१०) सत्संगति

सज्जनों की संगति को सत्संगति कहते हैं। सत्संगति एक विशेष गुण है। सज्जनों की संगति से मनुष्य में सद्गुणों का समावेश होता है और दुर्गुणों का नाश होता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, वह संगति से ही गुणों और अवगुणों को सीखता है। वह जैसे मनुष्यों की संगति में रहेगा, वैसे ही गुण सीखेगा। सज्जनों की संगति से मनुष्य सद्गुण सीखता है और दुर्जनों की संगति से दुर्गुण। सत्संगति से मनुष्य का जीवन सुख और शान्ति से युक्त होता है, मनुष्य उन्नति की ओर अग्रसर होता है और उसकी कीर्ति फैलती है। बाल्यकाल में बालक पर संगति का प्रभाव विशेषरूप से होता है। अतः जीवन को सुखी और शान्तियुक्त करने के लिए सत्संगति ही करनी चाहिए।

संकेत:—(९) आचरन्ति, स्थापयन्ति, लभन्ते, प्रवर्तन्ते, निवर्तन्ते, वर्धते। (१०) शिक्षते, निवत्स्यति, शिक्षिष्यते, प्रथते।

(११) महात्मा गांधी

महात्मा गांधी का जन्म गुजरात प्रान्त में हुआ था। इनके पिता का नाम कर्मचन्द और माता का नाम पुतलीबाई था। ये दोनों बहुत सज्जन प्रकृति के थे। महात्मा गांधी भी बचपन से ही बहुत सज्जन स्वभाव के थे। महात्मा गांधी ने भारतवर्ष और विदेशों में उच्च शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात् वे देश-सेवा के काम में लग गये। उन्होंने अपना सारा जीवन भारतवर्ष की सेवा में लगा दिया। उन्होंने प्रण किया कि भारतवर्ष को स्वतन्त्र करूँगा। उनके त्याग और तपस्या का फल है कि भारत स्वतन्त्र हुआ और आज भारत स्वतन्त्र राष्ट्रों में आदरणीय हो रहा है। वे सत्य और अहिंसा के प्रबल समर्थक और पालक थे। उन्होंने हरिजनोद्धार, स्त्री-शिक्षा, भारतीय कला-कौशल की उन्नति आदि प्रशंसनीय कार्य किए हैं।

(१२) महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द का जन्म गुजरात में हुआ था। वे भारतवर्ष के समाज-सुधारकों में सर्व-प्रथम हैं। अपने चाचा और बहिन की मृत्यु को देखकर उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ और वे सत्य शिव को ढूँढ़ने के लिए घर से निकल पड़े। उन्होंने अनेक वर्षों तक तपस्या की। उन्होंने समाज की त्रुटियों को दूर करने के लिए आर्यसमाज की स्थापना की। उन्होंने वेदों का भाष्य करके वेदों का महत्त्व संसार को प्रदर्शित किया। उन्होंने समाज-सुधार के अनेकों काम किए। जैसे—अस्पृश्यों का उद्धार, स्त्री-शिक्षा, गो-रक्षा, गोशाला और अनाथालयों की स्थापना आदि। वे पूर्ण सदाचारी, त्यागी, तपस्वी, देशभक्त, समाज-सुधारक, वेदों के अद्वितीय विद्वान्, असाधारण वक्ता और निर्भीक संन्यासी थे।

संकेत :—(११) प्रकृत्या अतिसज्जनौ, सरलस्वभावः, यापितवान्। (१२) पितृव्यस्य, प्रादुरभवत्, अन्वेष्टुम्, अपाकर्तुम्, अस्थापयत्।

(१३) दशहरा

दशहरा आर्यों का सबसे मुख्य पर्व है। यह पर्व आश्विन मास में शुक्ल पक्ष की दशमी को होता है। यह क्षत्रियों का मुख्य पर्व माना जाता है। जनश्रुति है कि श्री रामचन्द्र जी ने इसी दिन रावण पर विजय पाई थी। इसीलिए इस पर्व के अवसर पर हिन्दू रामलीला का आयोजन करते हैं। उसमें राम की विजय और पापी रावण का वध दिखाते हैं। यह पर्व बहुत प्राचीन समय से मनाया जाता है। क्षत्रिय इस अवसर पर अपने शस्त्रों की पूजा करते हैं। यह पर्व शिक्षा देता है कि धर्मात्मा की सदा विजय होती है और पापी का नाश होता है। यह पर्व क्षात्रबल की उन्नति का सूचक है। क्षात्रबल की उन्नति से ही देश की उन्नति होती है। इस पर्व को विजयादशमी भी कहते हैं।

(१४) दीपावलि

दीपावलि भी हिन्दुओं का प्रसिद्ध पर्व है। इसको दिवाली और दीपमालिका भी कहते हैं। यह कार्तिक मास की अमावास्या के दिन विशेष आयोजन के साथ मनाई जाती है। इसके विषय में जनश्रुति है कि श्री रामचन्द्र जी रावण को जीतकर जब अयोध्या लौटे तो इसी दिन विजयोत्सव का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर सभी हिन्दू अपने मकानों की स्वच्छता करते और कराते हैं। यह वैश्यों का मुख्य पर्व माना जाता है। वे इस दिन लक्ष्मी-पूजन करते हैं और अपने व्यापार में श्री-वृद्धि के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं। इस अवसर पर रात्रि में सभी घर दीपमाला से सुशोभित होते हैं और सभी आनन्दोत्सव मनाते हैं।

संकेत :—(१३) पर्व (पर्वन्), दशम्याम्, मन्यते, दर्शयन्ति, आयोज्यते। (१४) कथ्यते, विजित्य, प्रत्यागतः, कारयन्ति, गण्यते, सम्पादयन्ति।

(१५) स्वदेश-प्रेम

स्वदेश-प्रेम सर्वोत्तम गुणों में से एक गुण है। संसार का प्रत्येक मनुष्य अपने देश का ऋणी है। जिस देश में उसने जन्म पाया है, जहाँ निरन्तर खेला और कूदा है, जिसके अन्न और जल का उपयोग किया है, जहाँ की वायु से जीवित रहा है, उसके ऋण से कभी भी उऋण नहीं हो सकता है। मनुष्य अपने देश का ऋणी है, अतः उसका कर्तव्य है कि वह देश की उन्नति के लिए कुछ कार्य करे। वह कोई ऐसा कार्य न करे, जिससे देश की अवनति या अकीर्ति हो। महात्मा गांधी, सुभाष बोस, जवाहरलाल नेहरू आदि ने अपना सारा जीवन देश के लिए दे दिया, अतः वे महापुरुष हो गये हैं। हमारा भी कर्तव्य है कि देश की उन्नति के लिए सदा यत्नशील हों।

(१६) स्वावलम्बन

स्वावलम्बन वह अलौकिक गुण है, जो मनुष्य के जीवन को सदा सुखमय बनाता है। स्वावलम्बन शिक्षा देता है कि मनुष्य को अपना काम स्वयं करना चाहिए। अपने काम के लिए दूसरों के आश्रित नहीं रहना चाहिए। जो मनुष्य जितना स्वावलम्बी होता है, वह उतना ही सुखी रहता है। जो परावलम्बी होता है, वह सदा दुःखी रहता है। स्वावलम्बन से मनुष्य में पुरुषार्थ, साहस, धैर्य, कर्तव्यशीलता और प्रसन्न-चित्तता आदि गुणों का उदय होता है। परावलम्बन से हीनता, दीनता, खिन्नता, अधीरता आदि दोषों का उदय होता है। उन्नति का साधन स्वावलम्बन है। अतः जो मनुष्य या देश उन्नति करना चाहता है, उसे स्वावलम्बी होना चाहिए।

संकेत :—(१५) अनृणः, भवितुं शक्नोति, अर्पितवन्तः। (१६) करोति, शिक्षयति, करणीयम्, स्यात्, यावान्, तावान्, भवेत्।

(१७) अनुशासन-पालन

कुछ विशेष नियमों के पालन और अपने से बड़ों की आज्ञा के पालन करने को अनुशासन-पालन कहते हैं। अनुशासन-पालन से मनुष्य का जीवन नियमित होता है। वह अपने सब कामों को ठीक समय पर करता है। वह अपने समय का मूल्य समझता है और अपने जीवन का महत्त्व समझता है। अनुशासन-पालन से मनुष्य उन्नति की ओर जाता है। जो मनुष्य, जो समाज और जो देश अनुशासन का पालन करता है, वह उन्नत होता है। जहाँ अनुशासन नहीं होता है, वहां अनियम और अव्यवस्था होती है। जीवन के प्रत्येक स्थान पर अनुशासन-पालन की आवश्यकता होती है। जीवन की सफलता के लिए अनुशासन का पालन अवश्य करना चाहिए।

(१८) मित्रता

निःस्वार्थ भाव से परस्पर स्नेह करने को मित्रता कहते हैं। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, वह चाहता है कि उसका कोई मित्र अवश्य हो, जिसे वह अपने दुःख और सुख की सब बातें बता सके। अतएव मित्र की आवश्यकता होती है। मित्र का निर्णय सावधानी से करना चाहिए। मित्र ऐसा होना चाहिए कि जो स्वार्थी न हो, वंचक न हो, दुर्जन न हो। सच्चा मित्र वह है जो बड़ी विपत्ति में भी साथ न छोड़े। दुःख में अपने मित्र का साथ दे और सुख में सुखी हो। सदा सज्जन से ही मित्रता करनी चाहिए, दुर्जन से नहीं। दुर्जन से मित्रता दुःखदायी होती है। मित्र का कर्तव्य है कि वह अपने मित्र के दुःख में दुःखी हो, उसे उत्तम संमति दे, उसे कुमार्ग से बचावे और सदा सन्मार्ग पर लावे।

संकेतः—(१७) ज्यष्ठानाम्, आज्ञापालनम्, यथासमयम्, जानाति। (१८) पारस्परिकः स्नेहः, विज्ञापयत्, सावधानतया, तादृशं स्यात्, यथार्थः, सङ्गम्, साहाय्यम् आचरेत्, करणीया, निवारयेत्, आनयेत्।

(१९) विद्यार्थी-जीवन

जीवन को चार भागों में बाँटा गया है। इनको चार आश्रम भी कहते हैं। पहला आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम है। यही विद्यार्थी-जीवन है। मनुष्य के जीवन की आधार-शिला विद्यार्थी-जीवन ही है। मनुष्य विद्यार्थी-जीवन में अपना जीवन जैसा बना लेता है, उसका भविष्य जीवन भी उसी प्रकार का हो जाता है। यही समय है जब विद्यार्थी सारी विद्याओं, सारे गुणों और सारी कलाओं को सीखता है। विद्यार्थी-जीवन में सीखी हुई सारी विद्याएँ आदि उसके भावी जीवन में काम आती हैं। इस समय ही मनुष्य आचार-विचार, संयम, शील और सत्य आदि गुणों को सीखता है। जो मनुष्य विद्यार्थी-जीवन का जितना सदुपयोग करेगा, वह उतना ही बड़ा मनुष्य होगा।

(२०) शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा मनुष्य की बौद्धिक शक्ति को विकसित करती है। शिक्षा ही मनुष्य को पशु से पृथक् करती है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य विद्वान् और बुद्धिमान् होता है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य शुभ-अशुभ, पाप-पुण्य, उचित-अनुचित, धर्म-अधर्म को ठीक-ठीक समझता है। वह उसमें से उत्तम वस्तुओं और गुणों को स्वीकार कर लेता है और अनुचित को छोड़ देता है। शिक्षा से मनुष्य अपने कर्तव्य को ठीक जानकर एक सुयोग्य नागरिक होता है। वह ज्ञानोपार्जन करके अपनी उन्नति करता है और अपनी विद्या के द्वारा समाज और विश्व को उन्नत करता है। शिक्षा का उद्देश्य है— मनुष्य की विवेक-शक्ति को जागृत करना, उसके चरित्र को शुद्ध बनाना, बौद्धिक शक्तियों को विकसित करना, शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति करना।

संकेत :—(१९) चतुर्षु भागेषु, विभज्यते, विद्यार्थि-जीवनम्, यादृशम्, तादृशम्, शिक्षते, भाविनि, उपयोगिन्यः भवन्ति, महान्। (२०) बौद्धिकीम्, विकासयति, यथार्थतः जानाति, स्वीकरोति, विज्ञाय, उद्बोधनम्, करणम्, विकासनम्।

(७) सुभाषित-संग्रह

(सूचना-निबन्ध आदि के लिए विद्यार्थी इन सुभाषितों को स्मरण कर लें)

(१) विद्या-प्रशंसा

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥ १ ॥
रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः ।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥ २ ॥
विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मं ततः सुखम् ॥ ३ ॥
अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत् ।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥ ४ ॥
अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति ।
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति संचयात् ॥ ५ ॥

(२) उद्यम-प्रशंसा

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥ १ ॥
उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः ।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत् ॥ २ ॥
आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥ ३ ॥
पूर्वजन्मकृतं कर्म तद् दैवमिति कथ्यते ।
तस्मात् पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति ॥ ४ ॥
योजनानां सहस्रं तु शनैर्गच्छेत् पिपीलिका ।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ॥ ५ ॥

(३) परोपकार-प्रशंसा

परोपकारः कर्तव्यः प्राणैरपि धनैरपि ।
परोपकारजं पुण्यं न स्यात् क्रतुशतैरपि ॥ १ ॥
धनानि जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत् ।
सन्निमित्ते वरं त्यागो विनाशे नियते सति ॥ २ ॥
अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥ ३ ॥
परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः ।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम् ॥ ४ ॥
श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन, दानेन पाणिर्न तु कंकणेन ।
विभाति कायः खलु सज्जनानां, परोपकारेण न चन्दनेन ॥ ५ ॥

(४) सत्पुत्र-प्रशंसा

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि ।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणोऽपि च ॥ १ ॥
एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना ।
वासितं तद्वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा ॥ २ ॥
एकेनापि सुपुत्रेण सिंही स्वपिति निर्भयम् ।
सहैव दशभिः पुत्रैर्भारं वहति गर्दभी ॥ ३ ॥
अजातमृतमूर्खाणां वरमाद्यौ न चान्तिमः ।
सकृद्दुःखकरावाद्यौ अन्तिमस्तु पदे पदे ॥ ४ ॥
दाने तपसि शौर्ये च यस्य न प्रथितं यशः ।
विद्यायामर्थलाभे च मातुरुच्चार एव सः ॥ ५ ॥
किं तया क्रियते धेन्वा या न दोग्ध्री न गर्भिणी ।
कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान् न धार्मिकः ॥ ६ ॥

(५) सज्जन-प्रशंसा

अञ्जलिस्थानि पुष्पाणि वासयन्ति करद्वयम् ।
अहो सुमनसां प्रीतिर्वामदक्षिणयोः समा ॥ १ ॥
वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि ।
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति ॥ २ ॥
सम्पदो महतामेव महतामेव चापदः ।
वर्धते क्षीयते चन्द्रो न तु तारागणः क्वचित् ॥ ३ ॥
उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा ।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता ॥ ४ ॥
यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः ।
चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकरूपता ॥ ५ ॥
निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु दयां कुर्वन्ति साधवः ।
नहि संहरते ज्योत्स्नां चन्द्रश्चाण्डालवेश्मसु ॥ ६ ॥

(६) सन्तोष-प्रशंसा

सन्तोषामृततृप्तानां यत् सुखं शान्तचेतसाम् ।
कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम् ॥ १ ॥
पंचमेऽहनि षष्ठे वा शाकं पचति यो गृहे ॥
अनृणी चाप्रवासी च स वारिचर मोदते ॥ २ ॥
ते धन्याः पुण्यभाजस्ते तैस्तीर्णः क्लेशसागरः ।
जगत्संमोहजननी यैराशाशीविषी जिता ॥ ३ ॥
आशैव राक्षसी पुंसामाशैव विषमंजरी ।
आशैव जीर्णमदिरा धिगाशा सर्वदोषभूः ॥ ४ ॥
आशाया ये दासास्ते दासाः सर्वलोकस्य ।
आशा येषां दासी तेषां दासायते लोकः ॥ ५ ॥

(७) धन-प्रशंसा

यस्यार्थास्तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः ।
यस्यार्थाः स पुमान् लोके यस्यार्थाः स च पण्डितः ॥ १ ॥

धनेन बलवान् लोके सर्वः सर्वत्र सर्वदा ।
प्रभुत्वं धनमूलं हि राज्ञामप्युपजायते ॥ २ ॥

इह लोके हि धनिनां परोऽपि स्वजनायते ।
स्वजनोऽपि दरिद्राणां तत्क्षणाद् दुर्जनायते ॥ ३ ॥

ब्रह्मघ्नोऽपि नरः पूज्यो यस्यास्ति विपुलं धनम् ।
शशिना तुल्यवंशोऽपि निर्धनः परिभूयते ॥ ४ ॥

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः, स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः ।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः, सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति ॥ ५ ॥

धनैर्निष्कुलीनाः कुलीना भवन्ति, धनैरापदं मानवाः निस्तरन्ति ।
धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके, धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वम् ॥ ६ ॥

(८) सत्संगति-प्रशंसा

हीयते हि मतिस्तात हीनैः सह समागमात् ।
समैश्च समतामेति विशिष्टैश्च विशिष्टताम् ॥ १ ॥

महाजनस्य संसर्गः कस्य नोन्नतिकारकः ।
पद्मपत्रस्थितं वारि धत्ते मुक्ताफलश्रियम् ॥ २ ॥

कीटोऽपि सुमनःसङ्गादारोहति सतां शिरः ।
अश्मापि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितः ॥ ३ ॥

काचः कांचनसंसर्गाद् धत्ते मारकतीं द्युतिम् ।
तथा सत्संनिधानेन मूर्खो याति प्रवीणताम् ॥ ४ ॥

संगः सर्वात्मना त्याज्यः स चेत् त्यक्तुं न शक्यते ।
स सद्भिः सह कर्तव्यः सतां संगो हि भेषजम् ॥ ५ ॥

(९) महाभारत-नवनीतम्

पञ्चाग्नयो मनुष्येण परिचर्याः प्रयत्नतः ।
पिता माताग्निरात्मा च गुरुश्च भरतर्षभ ॥ १ ॥

पञ्चैव पूजयन् लोके यशः प्राप्नोति केवलम् ।
देवान् पितॄन् मनुष्यांश्च भिक्षूनतिथिपञ्चमम् ॥ २ ॥

पञ्च त्वाऽनुगमिष्यन्ति यत्र यत्र गमिष्यसि ।
मित्राण्यमित्रा मध्यस्था उपजीव्योपजीविनः ॥ ३ ॥

षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता ।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता ॥ ४ ॥

षडेव तु गुणाः पुंसा न हातव्याः कदाचन ।
सत्यं दानमनालस्यमनसूया क्षमा धृतिः ॥ ५ ॥

सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्या योगेन रक्ष्यते ।
मृजया रक्ष्यते रूपं कुलं वृत्तेन रक्ष्यते ॥ ६ ॥

शीलं प्रधानं पुरुषे तद् यस्येह प्रणश्यति ।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुभिः ॥ ७ ॥

बन्धुरात्माऽऽत्मनस्तस्य येनैवात्माऽऽत्मना जितः ।
स एव नियतो बन्धुः स एव नियतो रिपुः ॥ ८ ॥

न देवा यष्टिमादाय रक्षन्ति पशुपालवत् ।
यं तु रक्षितुमिच्छन्ति बुद्ध्या संयोजयन्ति तम् ॥ ९ ॥

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च ।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ॥ १० ॥

न विश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्ते नातिविश्वसेत् ।
विश्वासाद् भयमुत्पन्नं मूलान्यपि निकृन्तति ॥ ११ ॥

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि संप्रवर्धन्ते कीर्तिरायुर्यशो बलम् ॥ १२ ॥

(१०) नीतिश्लोकाः

सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः ।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥ १ ॥

राज्ञि धर्मिणि धर्मिष्ठाः पापे पापाः समे समाः ।
लोकास्तमनुवर्तन्ते यथा राजा तथा प्रजाः ॥ २ ॥

सभा वा न प्रवेष्टव्या वक्तव्यं वा समञ्जसम् ।
अब्रुवन् विब्रुवन् वापि नरो भवति किल्बिषी ॥ ३ ॥

षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रः चतुष्कर्णः स्थिरो भवेत् ।
द्विकर्णस्य तु मन्त्रस्य ब्रह्माप्यन्तं न गच्छति ॥ ४ ॥

अरावप्युचितं कार्यमातिथ्यं गृहमागते ।
छेत्तुः पार्श्वगतां छायां नोपसंहरते द्रुमः ॥ ५ ॥

जातमात्रं न यः शत्रुं व्याधिं वा प्रशमं नयेत् ।
अतिपुष्टाङ्गयुक्तोऽपि स पश्चात्तेन हन्यते ॥ ६ ॥

बलिना सह योद्धव्यमिति नास्ति निदर्शनम् ।
यद् युद्धं हस्तिना सार्धं नराणां मृत्युमावहेत् ॥ ७ ॥

सुवर्णपुष्पितां भूमिं विचिन्वन्ति नरास्त्रयः ।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम् ॥ ८ ॥

अर्थनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च ।
वञ्चनं चापमानं च मतिमान् न प्रकाशयेत् ॥ ९ ॥

न गणस्याग्रतो गच्छेत् सिद्धे कार्ये समं फलम् ।
यदि कार्यविपत्तिः स्याद् मुखरस्तत्र हन्यते ॥ १० ॥

घटं भिन्द्यात् पटं छिन्द्यात् कुर्याद् रासभरोहणम् ।
येन केन प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत् ॥ ११ ॥

विषादप्यमृतं ग्राह्यममेध्यादपि काञ्चनम् ।
नीचादप्युत्तमां विद्यां स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि ॥ १२ ॥

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

द्वारा

नवीनतम पद्धति से लिखी गई संस्कृत व्याकरण, निबन्ध तथा
रचना की अन्य अनुपम पुस्तकें--

रचनानुवाद कौमुदी

(हायर सेकन्डरी कक्षाओं के लिए)

सर्वथा संशोधित, परिवर्धित चतुर्थ संस्करण

मूल्य : तीन रुपये पचास नये पैसे

प्रौढ़-रचनानुवाद कौमुदी

(बी० ए० तथा एम० ए० कक्षाओं के लिए)

मूल्य : सात रुपये पचास नये पैसे

विश्वविद्यालय प्रकाशन

गोरखपुर • वाराणसी